आज़ादी का अमृत महोत्सव
1947-2022

सामाजिक विज्ञान
अभ्यास पुस्तिका

वेद-विभूषण - II वर्ष / उत्तरमध्यमा - II वर्ष / कक्षा 12वीं

महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेद संस्कृत शिक्षा बोर्ड
(शिक्षा मन्त्रालय भारत सरकार द्वारा स्थापित एवं मान्यता प्राप्त)

विश्वम्पुष्टङ्ग्रामेऽअस्मिन्ननातुरम् ॥
उपह्वरेगिरीणाꣳसङ्गमेचनदीनाम् ॥ धियाविप्प्रोऽअजायत॥
वात आ वातु भेषजं शंभु मयोभु नो हृदे।
अनारम्भणे तदवीरायेथा मनास्थाने अग्रभणे समुद्रे।
प्रणऽआयूꣳषितारिषत् ।
दक्ष ते भद्रमाभार्षं परा यक्ष्म सुवामि ते।
त्रायन्तामिह देवास्त्रायतां मरुता गण:॥
अन्नाद् भवन्ति भूतानि पर्जन्यादन्नसम्भव:।
यज्ञाद्भवति पर्जन्यो यज्ञ: कर्मसमुद्भव:॥

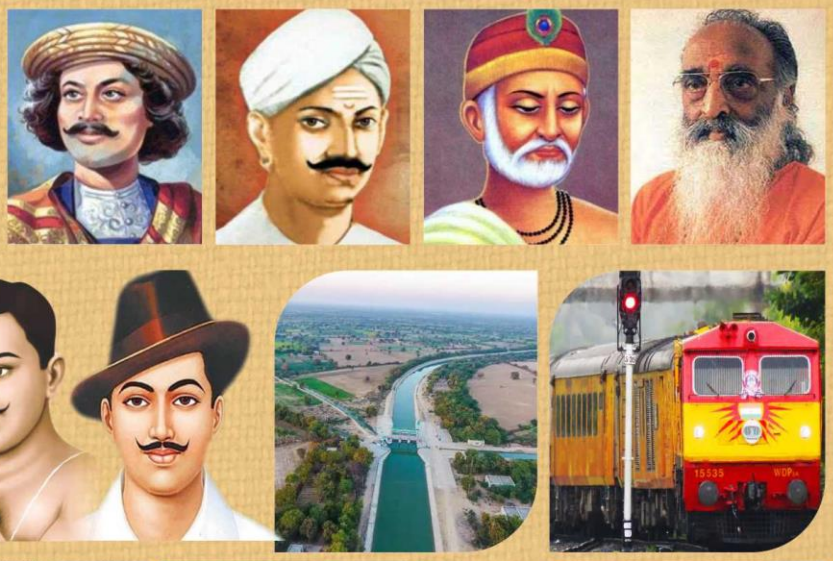

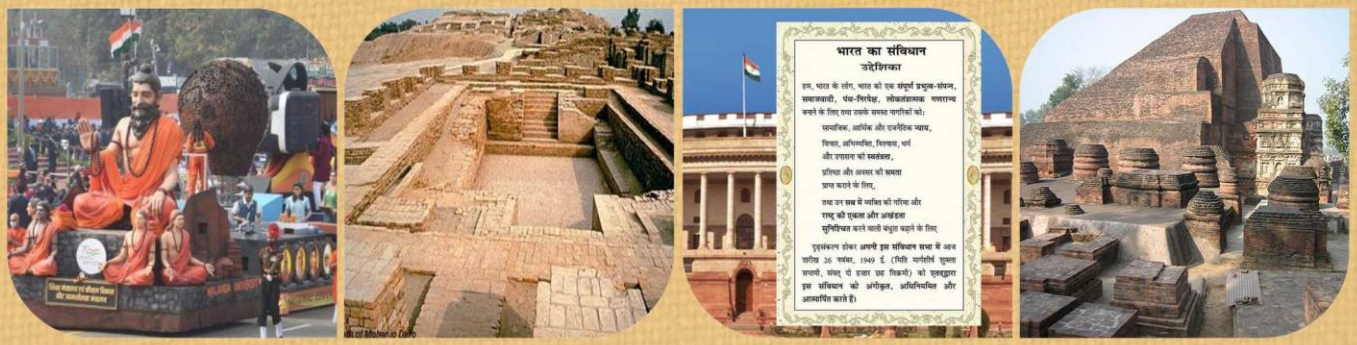

महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन (म.प्र.)
(शिक्षा मन्त्रालय, भारत सरकार)
Phone : (0734) 2502266, 2502254, E-mail : msrvvpujn@gmail.com, website - www.msrvvp.ac.in

विषयानुक्रमणिका

क्रम संख्या	अध्याय का नाम	पृष्ठ संख्या
	भूगोल	2
1	मानव भूगोल और मानव विकास	2-4
2	जनसंख्या	5-6
3	आर्थिक क्रियाएँ- परिवहन और व्यापार	7-10
	इतिहास	11
4	मानव सम्बन्ध एवं सम्बन्धी व्याख्या (सरस्वती-सिन्धु सभ्यता से 600 ई. तक का भारत)	11-15
5	वेद शिक्षा प्रणाली	16-17
6	धार्मिक विश्वासों में परिवर्तन (लगभग 8वीं से 18वीं सदी तक)	18-20
7	मध्यकालीन भारत (ग्यारहवीं से सत्रहवीं शताब्दी तक)	21-24
8	भारत में उपनिवेशवाद और परिणाम	25-27
9	भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन और महात्मा गाँधी	28-30
10	भारतीय संस्कृति का वैश्विक प्रभाव	31-33
	राजनीति शास्त्र	34
11	द्वितीय विश्व युद्ध के बाद अमेरिका और रूस	34-36
12	विश्व के प्रमुख सङ्गठन	37- 39
13	समकालीन विश्व (सुरक्षा और पर्यावरण)	40-41
14	स्वतन्त्र भारत की चुनौतियाँ	42-45
15	स्वतन्त्र भारत में जनान्दोलन एवं क्षेत्रीय आकाङ्क्षाएँ	46-48
16	भारत में नियोजित विकास एवं विदेश नीति	49-50
	समाजशास्त्र	51
17	भारतीय समाज एवं सामाजिक संस्थाएँ	51-54
18	सांस्कृतिक विविधता और सामाजिक विषमताएँ	55-57
19	भारतीय लोकतन्त्र में परिवर्तन एवं विकास	58-59
20	सामाजिक आन्दोलन और जन सञ्चार	60-62

अध्याय-1

मानव भूगोल और मानव विकास

- मानव भूगोल में प्रकृति और मानव के अध्ययन पर बल दिया जाता है। मानव भूगोल के अध्ययन का मुख्य उद्देश्य पृथिवी को मानव के आवास के रूप में समझना है।
- वैदिक वाङ्मय में मानव व पर्यावरण के अन्योन्याश्रय सम्बन्धों का उल्लेख हुआ है। ऋग्वेद में कहा गया है कि विश्वं पुष्टं ग्रामे अस्मि अनातुरम्। (1.8.18) अर्थात् इस भू-मण्डल पर मानव भूगोल गाँवों में परिपुष्ट और आरोग्य सम्पन्न हुआ है।
- उपह्वरे गिरीणां सङ्गमे च नदीनां, धिया विप्रो अजायत। (ऋ. 8.6.28) अर्थात् मनीषी लोग पर्वतों की तराईयों तथा नदियों के सङ्गम एवं किनारों पर निवास करते हैं।
- रेटजेल के अनुसार- "मानव भूगोल, मानव समाजों और धरातल के सम्बन्धों का संश्लेषित अध्ययन है।"
- मानव भूगोल की जड़ें इतिहास में बहुत गहरी हैं अर्थात् मानव भूगोल का उदय दीर्घकालिक माना जाता है। मानव भूगोल के विषयों में एक दीर्घकालिक सामञ्जस्य पाया जाता है। किन्तु समय समय पर मानव भूगोल को स्पष्ट करने वाले उपागमों में परिवर्तन आया है, जो इसकी परिवर्तनशीलता को दर्शाता है।
- मानव भूगोल के उपक्षेत्र सांस्कृतिक भूगोल, ऐतिहासिक भूगोल, चिकित्सा भूगोल, व्यवहारवादी भूगोल, पर्यटन भूगोल, सामाजिक कल्याण का भूगोल आदि हैं।
- प्रत्येक वस्तु में वृद्धि और विकास होता है। वृद्धि और विकास समय परिवर्तन के बारे में सूचना प्रदान करते हैं। वृद्धि, मात्रात्मक और मूल्य निरपेक्ष होती है। विकास, गुणात्मक और मूल्य सापेक्ष होता है।
- डॉ. महबूब-उल-हक द्वारा मानव विकास की अवधारणा प्रतिपादित केन्द्र-बिन्दु मानव है। डॉ. महबूब-उल-हक ने 1990 ई. में मानव विकास सूचकांक निर्मित किया था।
- आरंभिक मानव विकास प्रतिवेदन निकालने में अमर्त्य सेन का महत्वपूर्ण योगदान है। नोबेल विजेता (1998 ई.) अमर्त्य सेन ने विकास का मुख्य ध्येय स्वतन्त्रता में वृद्धि को माना है।
- मानव विकास के समानता, सतत् पोषणीयता, उत्पादकता और सशक्तीकरण चार स्तम्भ हैं।
- मानव विकास के प्रमुख उपागमों में- आय उपागम, कल्याण उपागम, न्यूनतम आवश्यकता उपागम और क्षमता उपागम हैं।
- यदि व्यक्ति की आय अच्छी है तो मानव विकास का स्तर भी ऊँचा होगा, इसे 'आय उपागम' कहते हैं। यह मानव विकास के सबसे पुराने उपागमों में से एक है।

- सरकार, लोगों के कल्याण के लिए अधिकतम व्यय करके, मानव विकास के स्तर में वृद्धि के लिए उत्तरदायी है, इसे 'कल्याण उपागम' कहा जाता है।
- शिक्षा, स्वास्थ्य, भोजन, जलापूर्ति, आवास व स्वच्छता जैसी 6 न्यूनतम आवश्यकताएँ 'न्यूनतम आवश्यकता उपागम' के अन्तर्गत रखी गई हैं।
- संसाधनों तक पहुँच के क्षेत्रों में मानव क्षमताओं का निर्माण बढ़ते मानव विकास की कुंजी है, इसे 'क्षमता उपागम' कहते हैं। क्षमता उपागम के प्रतिपादक प्रो. अमर्त्य सेन हैं।
- किसी देश को मानव विकास के आधार पर मापने के लिए 'मानव विकास सूचकांक' (HDI) का प्रयोग किया जाता है। इसमें देशों की शिक्षा, चिकित्सा, आय आदि का आकलन किया जाता है।
- वे देश जिनका स्कोर 0.8 से ऊपर है वे अति उच्च मूल्य सूचकांक वाले देश कहतलाते हैं। मानव विकास प्रतिवेदन 2019 के अनुसार इसमें नार्वे, आयरलैण्ड, स्विट्जरलैण्ड, आइसलैण्ड, आस्ट्रेलिया, लक्जेमबर्ग, कनाडा, स्वीडन, आदि हैं।
- वे देश जिनका स्कोर 0.701 से 0.799 के मध्य है वे उच्च मूल्य सूचकांक वाले देश कहलाते हैं । इसमें अल्बानिया, क्यूबा, ईरान, श्रीलङ्का आदि देश हैं।
- वे देश जिनका स्कोर 0.55 से 0.700 के मध्य है मध्यम मूल्य सूचकांक वाले देश कहलाते हैं । इसमें भारत, बांग्लादेश, इराक, भूटान, नेपाल, कम्बोडिया, पाकिस्तान आदि देश हैं।
- वे देश जिनका स्कोर 0.54 से नीचे है वे निम्न मूल्य सूचकांक वाले देश कहलाते हैं। इसमें सीरिया, युगांडा, नाइजीरिया, सूडान, अफगानिस्तान आदि देश हैं।
- संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (UNDP) के 2019 ई. के मानव विकास के आँकड़ो में भारत 189 देशों में 131 वें स्थान पर रहा है।
- भारत में नीति आयोग ने भी मानव विकास रिपोर्ट तैयार की है। भारत में प्रत्येक राज्य सरकार ने भी जिलों को विश्लेषण की इकाई मानते हुए मानव विकास रिपोर्ट तैयार करना प्रारम्भ कर दिया है।
- नियोजन, किसी उद्देश्य को पूरा करने के लिए, सर्वोत्तम कार्यपथ का चुनाव करने एवं विकास करने की जागरूक प्रक्रिया है। भारत सरकार ने 1 जनवरी 2015 ई. को योजना आयोग का नाम परिवर्तित कर नीति आयोग कर दिया है।
- नीति आयोग का प्रमुख उद्देश्य केन्द्रीय तथा राज्य सरकारों को युक्ति संगत और तकनीकी सलाह देने के साथ ही भारत के आर्थिक नीति निर्माण में राज्यों की भागीदारी सुनिश्चित करना है।
- क्षेत्रीय एवं सामाजिक विषमताओं को नियन्त्रित करने के लिए नीति आयोग ने लक्ष्य क्षेत्र व लक्ष्य समूह योजना उपागमों को प्रस्तुत किया है।

- सतत् पोषणीय विकास से आशय है, विकास की ऐसी प्रक्रिया जिसका मुख्य उद्देश्य प्राकृतिक संसाधनों तथा पर्यावरण को बिना नुकसान पहुँचाए, वर्तमान तथा भविष्य में आने वाली पीढ़ियों के जीवन की गुणवत्ता बनाये रखना है। सतत् पोषणीय विकास संकल्पना का प्रारम्भ 1987 ई. में बर्टलैण्ड रिर्पोट से प्रारम्भ माना जाता है।
- राजस्थान में इन्दिरा गाँधी नहर (कंवर सेन, 31 मार्च सन् 1958) का निर्माण सतत् पोषणीय विकास का अच्छा उदाहरण है।
- मानव समूह जिस स्थान पर स्थायी निवास करता है, उसे मानव बस्ती कहते हैं। जिन आवास समूहों में हम रहते हैं, उन्हें गाँव, कस्बा, शहर कहा जाता है।
- ग्रामीण बस्तियों का आकार छोटा होता है। नदी, झील, तालाब आदि प्राकृतिक जल स्त्रोत इन बस्तियों के समीप होते हैं। अधिकांश आबादी प्राथमिक गतिविधियों में संलग्न रहती है।
- ऐसी मानव बस्तियाँ, जहाँ निवास करने वाले अधिकाँश लोग विनिर्माण या सेवाक्षेत्र में संलग्न रहते हैं, नगरीय बस्ती कहलाती है। ये बस्तियाँ ग्रामीण बस्तियों की अपेक्षा आकार में बड़ी एवं सघन होती हैं।
- भारत में ग्रामीण बस्तियों की चार श्रेणियाँ है- 1. गुच्छित बस्तियों में आवास नजदीक बनाये जाते हैं। 2. अर्द्ध-गुच्छित बस्तियाँ सीमित क्षेत्र में बसी होती है। 3. पल्ली बस्तियाँ भौतिक रूप से अनेक इकाइयों में विभाजित होती हैं। 4. परीक्षिप्त बस्तियाँ सुदूर जङ्गलों, पहाड़ों ढालों पर बसी होती हैं।
- शहरों में आधारभूत सुविधा, स्वच्छता, सतत पर्यावरण, और नागरिकों को सुखद जीवन प्रदान करने के लिए भारत सरकार द्वारा 25 जून, 2015 ई. स्मार्ट सिटी मिशन का प्रारम्भ हुआ था।
- पर्यावरण प्रदूषण से आशय वायु, जल, मृदा आदि पर्यावरणीय घटकों का प्रदूषित होना है। पर्यावरण प्रदूषण एक ज्वलंत वैश्विक समस्या बनी हुई है।
- जल प्रदूषण से आशय विभिन्न जलीय स्त्रोतों जैसे- नदियों, कुओं, तालाबों, झीलों आदि के जल का दूषित होना है। जल के दूषित होने के साथ-साथ इसमें रहने वाले जलीय जीवों को भी हानि होती है।
- वायु में जब धूल, धुँआ, गैसें, दुर्गन्ध आदि विभिन्न प्रकार के अवाञ्छित तत्त्व मिल जाते हैं, तो इसे वायु प्रदूषण कहते हैं।
- वायु प्रदूषण के परिणामस्वरूप श्वसन सम्बन्धी रोग, टी.बी., कैंसर आदि गम्भीर बिमारियों के होने का खतरा बना रहता है।
- मानव की सहनीय सीमा से अधिक ध्वनि का होना, ध्वनि प्रदूषण कहलाता है। 90 डेसीबल या उससे अधिक ध्वनि मानव एवं जीवों के लिए घातक होती है।

अध्याय- 2

जनसंख्या

- किसी देश, राज्य या स्थान आदि में निवास करने वाले लोगो की संख्या को जनसंख्या कहते हैं। जनसंख्या के व्यवस्थित अध्ययन को जनसांख्यिकी कहते हैं।
- जान ग्रांट को जनसांख्यिकी का जनक कहते हैं। 2021 (यू.एन.ओ.) की जनगणना के अनुसार विश्व की जनसंख्या लगभग 777 करोड़ है।
- अमेरिका में 1790 ई. में हुई जनगणना सम्भवतः विश्व की पहली आधुनिक जनगणना थी और यूरोप ने इसे 19 वीं सदी के प्रारम्भिक वर्षों में अपनाया था।
- भारत में जनगणना कार्य भारतीय औपनिवेशिक सरकार ने 1872 ई. में प्रारम्भ किया था, किन्तु प्रति दस वर्षीय सम्पूर्ण जनगणना 1881 ई. से प्रारम्भ हुई थी। स्वतन्त्रता के पश्चात भारत में 1951 ई. से 2011 ई. तक सात बार दसवर्षीय जनगणनाएँ हो चुकी हैं।
- प्रसिद्ध अर्थशास्त्री राबर्ट माल्थस ने अपने निबन्ध Essay on Population-1788 ई. में गरीबी का कारण जनसंख्या को बताया था।
- जनसंख्या वितरण से आशय, भूपृष्ठ पर लोग किस प्रकार वितरित है। विश्व की कुल जनसंख्या का 90% पृथिवी के केवल 10% भाग पर निवास करता है। विश्व के सर्वाधिक जनसंख्या वाले 10 देशों में कुल आबादी का लगभग 60% भाग निवास करता है।
- सघन आबादी वाले इन 10 देशों में से 6 एशिया महाद्वीप (चीन, भारत, इण्डोनेशिया, बांग्लादेश, वियतनाम, पाकिस्तान) में हैं।
- प्रति वर्ग कि.मी. क्षेत्र में रहने वाले लोगों की संख्या को जनसंख्या घनत्व कहते हैं। जन घनत्व निकालने का सूत्र- जनसंख्या/ क्षेत्रफल। विश्व में एशिया महाद्वीप का जनसंख्या घनत्व सर्वाधिक है।
- विश्व में सबसे अधिक जन घनत्व मोनाको (यूरोप) देश का है। यहाँ प्रति वर्ग किलोमीटर में 23,660 व्यक्ति निवास करते हैं।
- किसी भी क्षेत्र में लोगों की संख्या में उत्तरोत्तर वृद्धि को जनसंख्या वृद्धि कहते हैं। जनसंख्या में धनात्मक वृद्धि (उच्च जन्म दर) व ऋणात्मक वृद्धि (उच्च मृत्यु दर) दोनों हो सकती है।
- एक वर्ष में प्रति एक हजार व्यक्तियों पर जन्म लेने वाले जीवित बच्चों की संख्या, जन्म दर कहलाती है। एक वर्ष में प्रति एक हजार व्यक्तियों पर मरने वाले व्यक्तियों की संख्या मृत्यु दर कहलाती है।
- लोगों का एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाकर या आकर बसना, प्रवास कहलाता है। जिस स्थान से लोग जाते हैं, वह उद्गम स्थान तथा जिस स्थान पर लोग आते हैं, वह गंतव्य स्थान कहलाता है।
- 2011 ई. की जनगणना के अनुसार भारत में आन्तरिक प्रवासियों की संख्या 45 करोड़ हैं। एक सर्वे के अनुसार (2019 ई.) भारत में 51 लाख अन्तार्राष्ट्रीय आप्रवासी हैं, जबकि विदेशों में 1.75 करोड़ भारतीय प्रवासियों के रूप में निवास कर रहे हैं।

- प्रति एक हजार स्त्रियों पर पुरुषों की संख्या को लिङ्गानुपात कहते है। विश्व में लिङ्गानुपात 990:1000 है। भारत में वर्ष 2021 में स्त्री पुरूष लिङ्गानुपात 1020:1000 है।
- भारत में सबसे अधिक लिङ्गानुपात (1084:1000) केरल राज्य में है। भारत में सबसे कम लिङ्गानुपात (879:1000) हरियाणा राज्य में है।
- जनसंख्या संवृद्धि दर को प्राकृतिक वृद्धि दर भी कहते है। यह जन्म और मृत्यु दर के बीच का अन्तर होता है। जब यह अन्तर शून्य या अतिन्यून होता है, तो इसे स्थिर जनसंख्या कहते हैं।
- प्रजनन दर से तात्पर्य है बच्चे पैदा कर सकने वाली आयु की प्रति 1000 स्त्रियों की इकाई के पीछे जीवित जन्में बच्चों की संख्या। बच्चे पैदा कर सकने की आयु आमतौर पर 15-49 वर्ष की मानी जाती है।
- शिशु मृत्यु दर से आशय जीवित पैदा हुए 1000 बच्चों में से 1 वर्ष की आयु प्राप्त करने से पहले ही मृत्यु को प्राप्त हो जाने वाले शिशुओं की संख्या है।
- मातृ मृत्युदर से आशय उन स्त्रियों की संख्या से है जो जीवित प्रसूति के 1000 मामलों में बच्चों को जन्म देने के समय मृत्यु को प्राप्त हो जाती हैं।
- आयु सम्भाविता का अर्थ एक व्यक्ति औसत कितने वर्षों तक जीवित रहेगा। इसकी गणना किसी क्षेत्र-विशेष में एक निश्चित अवधि में एक आयु विशेष के मृत्यु दर के आंकड़ों के आधार पर की जाती है।
- जनसंख्या संघटन के अन्तर्गत आयु, लिङ्ग का विश्लेषण, आवास, भाषा, जनजातियों, धर्म, वैवाहिक स्थिति, शिक्षा व साक्षरता, व्यावसायिक विशेषताओं आदि का अध्ययन किया जाता है।
- विभिन्न आयु वर्ग में लोगों की संख्या को 'आयु संरचना' कहा जाता है। 15-59 वर्ष के आयु वर्ग के लोगों को 'कार्यशील जनसंख्या' माना जाता है।
- 15 वर्ष से कम आयु के बच्चे छोटे होने के कारण अपने माँ-बाप पर आश्रित रहते हैं और 64 वर्ष से अधिक आयु के बुजुर्ग इस उम्र में काम न कर सकने के कारण अपने बच्चों पर आश्रित होते है, अतः इन्हें पराश्रित कहा जाता है।
- जनसंख्या पिरामिड का प्रयोग जनसंख्या की आयु-लिङ्ग संरचना को दर्शाने के लिए किया जाता है। पिरामिड का बाँया भाग पुरुषों तथा दाँया भाग स्त्रियों का प्रतिशत प्रदर्शित करता है। त्रिभुजाकार पिरामिड विस्तारित जनसंख्या को दर्शाता है।

अध्याय-3

आर्थिक क्रियाएँ- परिवहन और व्यापार

- ऐसी क्रियाएँ जिनसे मानव आय प्राप्त करता है, आर्थिक क्रियाएँ कहलाती हैं। समस्त प्रकार की आर्थिक क्रियाओं का कार्यक्षेत्र, संसाधनों की प्राप्ति एवं उनके उपयोग का अध्ययन करना है।
- आर्थिक आधार पर मानवीय क्रियाओं को प्राथमिक, द्वितीयक, तृतीयक, चतुर्थ आदि आर्थिक क्रियाओं में विभाजित किया गया है।
- सेवाओं को तृतीयक आर्थिक क्रियाकलाप कहा जाता है, जो लोगों के जीवन को सुगम व सुविधाजनक बनाता है। सेवाओं के अन्तर्गत परिवहन, व्यापार, बैंकिंग, बीमा, शिक्षा, चिकित्सा, अग्निशमन, मोची, ग्रहपाल, संगीतकार, माली, खानसामा आदि क्षेत्र आते हैं।
- ऐसी सेवा या सुविधा जिसके द्वारा व्यक्तियों एवं वस्तुओं को एक स्थान से दूसरे स्थान तक लाया या ले जाया जाता है, परिवहन कहलाता है।
- परिवहन के लिए मुख्यत: स्थल, जल व वायु मार्गों का प्रयोग होता है। परिवहन के मुख्य साधनों में बस, ट्रक, रेलगाड़ी, हवाई जहाज, जलयान, आदि हैं। वर्तमान समय में पाइप लाइन और सञ्चार, परिवहन की एक नई विधा के रूप में उभरे हैं।
- स्थल परिवहन को मुख्य रूप से दो भागों में विभाजित किया गया है- 1.सड़क परिवहन 2. रेल परिवहन।
- व्यक्तियों एवं वस्तुओं का सड़क मार्ग द्वारा एक स्थान से दूसरे स्थान पर आवागमन सड़क परिवहन कहलाता है। यह कम व मध्यम दूरी के लिए प्रयोग किया जाता है। विश्व में सर्वाधिक सड़कों वाला देश अमेरिका है। विश्व में भारत का सड़क प्रणाली में तीसरा स्थान है।
- दूरस्थ स्थानों को जोड़ने वाली सड़कों को महामार्ग कहते हैं। ट्रान्स कनेडियन महामार्ग, अलास्का महामार्ग, स्टुअर्ट महामार्ग, विश्व के प्रमुख महामार्ग हैं।
- भारत में स्वर्णिम चतुर्भुज राष्ट्रीय राजमार्ग योजना के अन्तर्गत निर्मित राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या- 7 (वाराणसी से कन्याकुमारी- 2369 किलोमीटर) महामार्ग ही है।
- उत्तर-दक्षिण गलियारा- केन्द्र सरकार की उत्तर में श्रीनगर (जम्मू व कश्मीर) से दक्षिण में कन्याकुमारी (तमिलनाडु कोच्ची सेलम सहित) तक 4016 कि.मी. लम्बे महामार्ग द्वारा जोड़ने की योजना है।
- पूर्व-पश्चिम गलियारा- केन्द्र सरकार की पूर्व में सिलचर (असम) से पश्चिम में पोरबन्दर (गुजरात) तक 3640 कि.मी. लम्बे महामार्ग द्वारा जोड़ने की योजना है।
- सीमावर्ती सड़कों का निर्माण अन्ताराष्ट्रीय सीमाओं पर होता है। ये सड़कें दुर्गम क्षेत्रों में सैन्य सहायता व सैन्य सामग्री पहुँचाने के लिए उपयोग में लाई जाती हैं, इन्हें सीमान्त सड़कें भी कहा जाता है।
- रेल परिवहन, स्थल परिवहन की दृष्टि से विश्व का सर्वाधिक लोकप्रिय व सस्ता परिवहन है। भारत, इंग्लैंड, अमेरिका, जापान आदि देशों में परिवहन के लिए मेट्रो, मोनो रेल का उपयोग किया जाता है।

- अमेरिका विश्व का सबसे बड़ा रेल नेटवर्क वाला देश है, जबकि जापान और रूस का क्रमशः दूसरा और तीसरा स्थान है। कनेडियन पेसिफिक रेलमार्ग, ऑस्ट्रेलियन अन्तार्राष्ट्रीय रेलमार्ग, काहिरा-कैपटाउन रेलमार्ग, मुनावाब-खोखारापार आदि विश्व के प्रमुख अन्तार्राष्ट्रीय रेलमार्ग है।
- ट्रान्स साइबेरियन रेलमार्ग 9300 कि.मी. है। यह विश्व का सबसे लम्बा रेलमार्ग है। भारत का रेल नेटवर्क में विश्व में चतुर्थ स्थान है।
- भारत में प्रथम रेल 1853 ई, में मुम्बई से ठाणे के मध्य 34 कि.मी. रेल मार्ग पर चली थी। 31मार्च, 2015 ई. तक भारत में रेलमार्ग की कुल लम्बाई 66030 कि.मी. थी।
- कोंकण रेलवे, भारतीय रेल की एक अनुषाङ्गिक इकाई है परन्तु यह स्वायत्त रूप से परिचालित होने वाली रेल व्यवस्था है। इसका मुख्यालय नवी मुम्बई के बेलापुर में है। यह रेलवे बोर्ड एवं केन्द्रीय रेल मन्त्री के निगरानी में काम करता है।
- परिवहन के लिए मेट्रो रेल का प्रारम्भ 24 अक्टूबर 1984 ई. को कोलकाता में हुआ था। दिल्ली, मुम्बई, जयपुर, हैदराबाद, लखनऊ, बेंगलुरू आदि नगरों में मेट्रो रेल का परिचालन हो रहा है।
- सम्पूर्ण विश्व में जल परिवहन के दो महत्वपूर्ण भाग हैं- 1. आन्तरिक परिवहन (नदियों, झीलें, नहरें) 2. बाह्य परिवहन (महासागर)। राष्ट्रीय जलमार्गों के विकास के लिए 1986 ई. में अन्त: स्थलीय जलमार्ग प्राधिकरण की स्थापना की गई थी।
- जल परिवहन में पत्तनों की विशेष भूमिका होती है। इलाहाबाद से हल्दिया जलमार्ग, राइन जलमार्ग, डेन्यूब जलमार्ग, वोल्गा जलमार्ग, मिसीसिपी जलमार्ग आदि आन्तरिक जल परिवहन के मार्ग हैं।
- अटलाण्टिक समुद्री मार्ग, भूमध्य सागर-हिन्द महासागरीय मार्ग, उत्तरी अटलाण्टिक समुद्री मार्ग, दक्षिणी प्रशान्त समुद्री मार्ग, स्वेज नहर, पनामा नहर आदि बाह्य परिवहन के जलमार्ग हैं।
- भारत के पास 7517 कि.मी. समुद्री तट है, जिस पर 12 बड़े पत्तन और 185 छोटे पत्तन हैं। भारत का वजन के अनुसार 95% और मूल्य के अनुसार 70% विदेशी व्यापार महासागरीय मार्गों द्वारा होता है।
- वायु परिवहन, परिवहन का सबसे महँगा किन्तु तीव्रगामी साधन है। इसके द्वारा कीमती, हल्की व शीघ्र खराब होने वाली वस्तुओं तथा लोगों का परिवहन किया जाता है। इसके माध्यम से दुर्गम स्थानों में आसानी से पहुँच कर, आपदा प्रभावित लोगों की मदद की जाती है।
- न्यूयॉर्क-लन्दन-पेरिस-रोम-काहिरा-दिल्ली-मुम्बई-कोलकाता-हांगकांग-टोकियो वायु मार्ग विश्व का सबसे लम्बा अन्तर महाद्वीपीय वायुमार्ग है।
- भारत में प्रथम बार वायु परिवहन का प्रारम्भ 1911 ई. में प्रयागराज से नैनी तक 10 कि.मी. की दूरी के लिए किया गया था।
- भारत में वायु परिवहन का सञ्चालन सरकारी और निजी क्षेत्र में होता है। सरकारी क्षेत्र में भारतीय वायु प्राधिकरण वायु सेवाओं का प्रबन्धन करता है। 27 जनवरी 2022 को टाटा ग्रुप ने एअर इण्डिया को 18,000 करोड़ रूपये में खरीद लिया था।

- पाइप लाइन द्वारा खनिज तेल, प्राकृतिक गैस, पेट्रोलियम पदार्थों, तरलीकृत कोयले, पेयजल आदि का परिवहन किया जाता है।
- बिग इञ्च तथा स्माल इञ्च पाइपलाइन परिवहन का प्रयोग संयुक्त राष्ट्र अमेरिका करता है। कोमेकोन पाइप लाइन (सोवियत संघ), टैप पाइप लाइन (ओपेक देशों के मध्य), ESPO तेल पाइप लाइन (रूस व चीन के मध्य), भारत-नेपाल पाइपलाइन विश्व की महत्वपूर्ण पाइपलाईन परिवहन हैं।
- भारत में गैस स्रोतों को माँग केन्द्रों से जोड़ने तथा पाइप लाइन अवसंरचना का जाल बनाने के लिए राष्ट्रीय गैस ग्रिड परियोजना प्रारम्भ की गई है। इसका उद्देश्य नगर में गैस तन्त्र को विकसित करना है।
- प्रधानमन्त्री ऊर्जा योजना के अन्तर्गत ऊर्जा गङ्गा गैस पाइप लाइन परियोजना प्रारम्भ की गई है। इस परियोजना द्वारा वाराणसी सहित 40 जिलों के 2600 गाँवों में रसोई गैस उपलब्ध कराना है।
- वर्तमान में 16788 कि.मी. की प्राकृतिक गैस पाइप लाइन सेवा चालू है तथा 14239 कि.मी. का विकास किया जा रहा है।
- सञ्चार का आशय एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति तक अर्थपूर्ण संदेशों को प्रेषित करना है। सञ्चार के अन्तर्गत दूरसञ्चार (टेलीफोन, मोबाइल), श्रव्य-दृश्य साधनों (फिल्में, रेडियो, टी.वी, समाचार-पत्र, पत्रिकाएं) को सम्मिलित गया है।
- भारत में रेडियो का प्रारम्भ 1923 ई. में मुम्बई में हुआ था। भारत में टेलीविजन सेवाओं का प्रारम्भ 1959 ई. में हुआ था।
- व्यापार से आशय वस्तुओं और सेवाओं के स्वैच्छिक आदान-प्रदान से है, जिसमें दो पक्षों का होना आवश्यक है। व्यापार, राष्ट्रीय और अन्ताराष्ट्रीय दो स्तर पर होता है।
- जब माल, पूँजी व सेवाओं का आदान-प्रदान देश की भौगोलिक सीमाओं के अन्दर होता है, तो यह राष्ट्रीय व्यापार कहलाता है। जब माल, पूँजी व सेवाओं का आदान-प्रदान देश के बाहर होता है, तो यह अन्ताराष्ट्रीय व्यापार कहलाता है।
- प्राचीनकाल में विश्व व्यापार का प्रमुख मार्ग 6000 कि.मी.लम्बा रेशम मार्ग था। इससे व्यापारी भारत, पर्शिया, मध्य एशिया आदि देशों से चीनी रेशम, ऊन, मसाले, सूती वस्त्र आदि का व्यापार करते थे।
- जब व्यापार दो देशों के मध्य होता है तो यह द्विपार्श्विक व्यापार कहलाता है। जब एक देश, अनेक देशों से व्यापार करता है तो यह बहु पार्श्विक व्यापार कहलाता है।
- 1948 ई. में 'जनरल एग्रीमेंट ऑन ट्रेड एण्ड टैरिफ' का गठन किया गया था, जिसे 1995 ई. में 'विश्व व्यापार सङ्गठन' में रूपान्तरित कर दिया गया। इसका मुख्यालय जेनेवा (स्विटजरलैण्ड) में है।
- वर्तमान में लगभग 120 प्रादेशिक व्यापार समूह हैं, जो विश्व के लगभग 52% व्यापार पर अपना प्रभाव रखते है। आसियान, ओपेक, नाफ्टा, साफ्टा, यूरोपीय संघ, प्रमुख प्रादेशिक व्यापार समूह हैं।
- पत्तन या बन्दरगाह अन्ताराष्ट्रीय व्यापार की दुनिया के प्रवेश द्वार कहे जाते हैं। औद्योगिक पत्तन, वाणिज्यिक पत्तन, अन्तर्देशीय पत्तन, बाह्य पत्तन, नौ सेना पत्तन आदि पत्तनों की श्रेणियाँ हैं।

- वर्तमान में भारत में लगभग 13 बड़े तथा 15 छोटे या मझोले पत्तन है। मुम्बई पत्तन, जवाहरलाल नेहरू पत्तन (महाराष्ट्र), इन्दिरा गाँधी पत्तन (पश्चिम बङ्गाल), न्यूमङ्गलौर पत्तन (कर्नाटक), चेन्नई पत्तन (तमिलनाडु), पारद्वीप पत्तन (ओडीसा), विशाखापट्टनम पत्तन (आन्ध्र प्रदेश), काण्डला (गुजरात) आदि महत्त्वपूर्ण पत्तन हैं।
- भारत विश्व के 190 देशों को लगभग 7500 वस्तुएँ निर्यात तथा 140 देशों से लगभग 6000 वस्तुएँ आयात करता है। भारत का सर्वाधिक व्यापारिक साझेदार देश अमेरिका (2021-22) है।
- नागर विमानन मन्त्रालय की 2 दिसम्बर, 2022 के अनुसार भारत में कुल 153 हवाई अड्डे हैं, जिनमें 35 अन्ताराष्ट्रीय और 118 घरेलु हवाई अड्डे हैं।
- चिकित्सा उपचार को अन्ताराष्ट्रीय पर्यटन गतिविधि से जब सम्बन्ध कर लिया जाता है, तो इसे चिकित्सा पर्यटन कहते हैं। भारत चिकित्सा पर्यटन में अग्रणी देश के रूप में उभरा है।
- विकसित देशों की तुलना में विकासशील देश आर्थिक, राजनीतिक और सामाजिक विभिन्नताओं के कारण सञ्चार और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में पिछड़ गए हैं, इसे 'अंकीय विभाजक' कहा जाता है।
- चतुर्थ क्रियाकलाप अनुसंधान और विकास पर आधारित होते हैं। चतुर्थ क्रियाकलापों में सूचना का संग्रहण, उत्पादन और प्रकीर्णन शामिल है।
- वे सेवाएँ जो नवीन और वर्तमान विचारों की रचना, पुनर्गठन और व्याख्या के मूल्यांकन पर केन्द्रित होती है पञ्चम क्रिया कलाप कहलाती हैं। इसके अन्तर्गत उच्चतम स्तर के निर्णय लेने तथा नीति निर्माण को शामिल किया जाता है। इसमें चतुर्थ सेक्टर से जुड़े हुए ज्ञान आधारित उद्योग भी आते हैं।

अध्याय - 4

मानव सम्बन्ध एवं सम्बन्धी व्याख्या

(सरस्वती-सिन्धु सभ्यता से 600 ई. तक का भारत)

- सरस्वती, सिन्धु और उनकी सहायक नदियों के किनारे विकसित सभ्यता को सरस्वती-सिन्धु सभ्यता कहते हैं। सरस्वती-सिन्धु सभ्यता के प्रथम अवशेष वर्तमान पाकिस्तान के माण्टगोमरी जिले में हड़प्पा नामक स्थान पर प्राप्त होने के कारण इसे 'हड़प्पा सभ्यता' भी कहा जाता है।
- सरस्वती, सिन्धु और उनकी सहायक नदियों के क्षेत्र में सरस्वती-सिन्धु सभ्यता से पूर्व की भी अनेक संस्कृतियों के अवशेष प्राप्त हुए हैं, जिसे विद्वानों ने प्राक् सैन्धव संस्कृति कहा है।
- सरस्वती नदी भारत की प्राचीनतम् नदियों में से एक थी, जो आज विलुप्त हो चुकी है। यह नदी आदि बद्री (उत्तराखण्ड) से उद्गमित होकर हरियाणा के यमुना नगर, कुरुक्षेत्र, हिसार, सिरसा, सहित राजस्थान के हनुमानगढ़, जैसलमेर, बाड़मेर से होती हुई गुजरात में अरब सागर में समाहित होती थी।
- झेलम, चिनाव, रावी, व्यास, सतलुज, कुर्रम, काभुल आदि सिन्धु नदी की सहायक नदियाँ हैं।
- हड़प्पा नामक स्थल की खुदाई सर्वप्रथम 1921 ई. में दयाराम साहनी के नेतृत्त्व में हुई थी। मोहनजोदड़ो पुरास्थल की खुदाई 1922 ई. में राखलदास बनर्जी के नेतृत्त्व में हुई थी।
- गार्डन चाइल्ड ने सरस्वती सिन्धु सभ्यता को 4000 वर्ष पूर्व तथा मार्टिमर व्हीलर ने 2000 वर्ष ई. पू. से 1500 वर्ष ई. पू. के मध्य का माना है।
- सरस्वती-सिन्धु सभ्यता के प्रमुख पुरास्थल हड़प्पा, मोहनजोदड़ो (पाकिस्तान), रोपड़ (पञ्जाब) बनावली (हरियाणा) कालाबङ्गा (राज.), लोथल, सुरकोटडा, रङ्गपुर (गुजरात), आलमगीरपुर (उ.प्र.) आदि हैं।
- मोहनजोदड़ो में ऊँचे स्थान को दुर्ग तथा निचले स्थान को नगर कहा जाता था। नगर की सुरक्षा के लिए के चारों ओर रक्षा प्राचीरें होती थीं। मोहनजोदड़ो में कुओं की कुल संख्या लगभग 700 थी।
- नगरों की सड़कें एक-दूसरे को समकोण पर काटती थीं। हड़प्पा नगर अपनी सुनियोजित जल निकास प्रणाली के लिए प्रसिद्ध था।
- मोहनजोदड़ो से खुदाई में प्राप्त विशाल भवन का आकार 242x115 फीट, विशाल स्नानागार का आकार 54x33 मीटर तथा इसके निकट 29x23x8 फीट के आकार का कुण्ड मिला है। विशाल अन्नागार आकार 169x133 फीट था। सरस्वती-सिन्धु सभ्यता में प्रयुक्त ईंटों का आकार 30x20x10 सेमी था।
- मनके बनाना, शङ्ख की कटाई, धातुकार्य, मुहर निर्माण तथा बाट बनाना आदि शिल्प कला एवं उद्योगों का प्रचलन था। विविध प्रकार के पत्थर जैसे- जैस्पर, स्फटिक, कार्टज, तथा शेलखड़ी आदि तथा शङ्ख, पकी मिट्टी के अतिरिक्त ताँबा, काँसा तथा स्वर्ण जैसी धातुओं का प्रयोग मनके बनाने के लिए होता था।

- सरस्वती-सिन्धु सभ्यता काल में नागेश्वर और बालाकोट से शङ्ख, शोर्तुघई (अफगानिस्तान) से लाजवर्द मणि, खेतड़ी (राजस्थान) से ताँबा, दक्षिण भारत से सोना मँगवाया जाता था।
- कालीबङ्गा (राजस्थान) से जुते हुए खेतों के साक्ष्य मिले हैं। शोर्तुघई (अफगानिस्तान) नामक स्थल से नहरों के होने का पता चला है।
- भारतीय अभिलेख विज्ञान में उल्लेखनीय विकास 1830 के दशक में तब हुआ, जब जेम्स प्रिन्सेप नामक अंग्रेज अधिकारी ने ब्राह्मी और खरोष्ठी लिपि का अर्थ निकाला था। इस लिपि का उपयोग आरम्भिक अभिलेखों और सिक्कों में किया गया है।
- खुदाई में कुछ अभिलेख प्राप्त हुए हैं, जिनमें लगभग 26 चिन्ह (लिपि) हैं। इन अभिलेखों की लिपि अभी तक अपठनीय है। यह दाईं से बाईं ओर लिखी जाती थी। वस्तुओं का आदान-प्रदान, बाटों की विशुद्ध प्रणाली से नियन्त्रित होता था। ये बाट, प्रायः चर्ट नामक पत्थर से बने होते थे।
- पुरातत्वविदों ने मोहनजोदड़ों से प्राप्त एक विशाल भवन को प्रासाद की संज्ञा दी है। एक पाषाण प्रतिमा को पुरोहित राजा की संज्ञा दी गई है।
- सरस्वती-सिन्धु सभ्यता में शवों को भूमि में गाड़ा जाता था। शव के साथ धन सम्पत्ति और भोजन सामग्री रखी जाती थी। 1980 ई. के दशक में पिरामिडों की खुदाई में पुरुष खोपड़ी के बगल में शङ्ख, मृदभाण्ड, आभूषण आदि मिले हैं।
- मेसोपोटामिया के लेखों में ओमान के लिये मगान शब्द का प्रयोग हुआ है, जहाँ ताँबे की प्राप्ति के संकेत मिलते हैं। सुदूर सम्पर्कों का संकेत करने वाली अनेक वस्तुओं में हड़प्पाई मुहरें, बाट, पाँसे तथा मनके शामिल हैं।
- महाभारत में राजनीतिक दृष्टि से अखण्ड भारत के अन्तर्गत सोलह महाजनपदों के साथ-साथ दार्द, हूण, हुन्जा, आम्बिष्ठ पख्तु, कैकय, वाल्हिक, अभिसार, कश्मीर, मद्र, सौवीर, सौराष्ट्र, मालव, प्राग्ज्योतिषपुर, कलिङ्ग, कर्णाटक, पाण्डय, अनूप, विन्ध्य, मलय, द्रविड़, चोल, शिवि, चालुक्य, खोखर, योधेय, पुण्ड्र आदि सहित लगभग 200 जनपदों का उल्लेख है।
- बौद्ध ग्रन्थ 'अङ्गुत्तर निकाय,' 'महावस्तु' और जैन ग्रन्थ के 'भगवती सूत्र' में महाजनपदों की संख्या सोलह दी गई है। इन महाजनपदों में कुछ राजतन्त्रीय और कुछ गणतन्त्रीय थे। मल्ल और वज्जि महाजनपद में गणतन्त्रीय शासन प्रणाली थी।
- बौद्ध तथा जैन धर्म ग्रन्थों में 16 महाजनपदों का उल्लेख है, जिनमें वज्जि, मगध, कौशल, कुरु, पाञ्चाल, गान्धार, काशी, अङ्ग, चेदि, वत्स, मत्स्य, शूरसेन, अश्मक, कम्बोज, मल्ल और अवन्ति का नाम उल्लेखित हैं। कुछ महाजनपदों में राजतन्त्रीय , तो कुछ में गणतन्त्रीय शासन व्यवस्था प्रचलित थी।
- छठी से चौथी शताब्दी ई. पू. तक सभी महाजनपदों में मगध (आधुनिक बिहार) महाजनपद सर्वाधिक शक्ति सम्पन्न होने के कारण आगे चलकर एक साम्राज्य के रूप में विस्तृत हुआ था।

- महाजनपद के इतिहास में हर्यकवंश (544 ई.पू. से 412 ई.पू.) में बिम्बिसार, अजातशत्रु और उदयन आदि अति महत्वाकाङ्क्षी शासक हुए हैं। इसके पश्चात मगध पर शिशुनाग वंश (412 ई.पू. से 344 ई.पू.) के शिशुनाग, काकवर्ण, महानन्दिन आदि ने शासन किया था।
- महापद्मनन्द ने शिशुनाग वंश की सत्ता को समाप्त कर नन्दवंश (344 ई.पू.-322 ई.पू.) की स्थापना की थी। हर्यकवंशीय शासक उदयन ने मगध की राजधानी, पाटलिपुत्र (पटना) को बनाया था।
- चन्द्रगुप्त मौर्य ने 322 ई.पू. मगध पर विजय प्राप्त की थी। मगध साम्राज्य की स्थापना चन्द्रगुप्त मौर्य ने तक्षशिला के आचार्य कौटिल्य की सहायता से लगभग 321 ई.पू. में की थी। चन्द्रगुप्त मौर्य के समय में मगध का शासन अफगानिस्तान और बलूचिस्तान तक विस्तृत था।
- मौर्यवंश में सम्राट अशोक न केवल मगध अपितु भारत का सर्वप्रसिद्ध शासक हुआ था। अशोक ने सर्वप्रथम अधिकारियों और प्रजा के लिए पत्थरों पर संदेश लिखवाये थे, जिन्हें 'शिलालेख' कहते हैं।
- मौर्य इतिहास के साहित्यिक स्रोतों में कौटिल्य का अर्थशास्त्र, विशाखदत्त का मुद्राराक्षस, क्षेमेन्द्र की वृहत्कथामञ्जरी, मेगस्थनीज की इंडिका आदि हैं। पुरातात्त्विक स्रोतों में अशोक के अभिलेख और रुद्रदामन का जूनागढ़ अभिलेख है।
- मौर्य साम्राज्य के पाँच प्रमुख प्रशासनिक केन्द्रों में पाटलिपुत्र, तक्षशिला, उज्जयिनी, तोसलि और सुवर्णगिरि थे। मौर्यों के साम्राज्य सीमा का विस्तार, आधुनिक पाकिस्तान के पश्चिमोत्तर क्षेत्र, आन्ध्रप्रदेश, उड़ीसा, उत्तराखण्ड और कर्नाटक तक था।
- साम्राज्य की अखण्डता की कामना से सम्राट अशोक ने बौद्ध धर्म को स्वीकार किया था साथ ही प्रशासनिक दृष्टि से 'धम्म महामात्त्य' की नियुक्ति की थी।
- तमिल भाषा का प्राचीनतम् साहित्य संगम साहित्य है। संगम साहित्य का संकलन लगभग 300-600 ई. तक माना जाता है।
- पाण्ड्य शासकों के संरक्षण में तीन संगमों का आयोजन हुआ था। तमिल भाषा के प्रमुख साहित्य तोलकाप्पियम्, शिल्प्पादिकारम्, मणिमेखलै आदि हैं।
- गुप्तकाल (लगभग 240-540 ई.) के इतिहास को जानने के दो स्रोत साहित्यिक और पुरातात्त्विक हैं।
- साहित्यिक स्रोतों में कालिदास (कुमार सम्भव और रघुवंशम्), पुराण (वायु, विष्णु और ब्रह्मपुराण) फाह्यान का फा-को-की, ह्वेनसाङ्ग का सि-यू-की आदि हैं। पुरातात्त्विक स्रोतों में महरौली का स्तम्भ लेख, उदयगिरि का गुहा लेख, जूनागढ़ प्रशस्ति आदि हैं।
- विक्रमादित्य के नवरत्नों में कालिदास, धनवन्तरि, वेताल भट्ट, घटकर्पर, अमरसिंह, वररूचि, क्षपणक, शंकु और वराहमिहिर थे।
- मथुरा (उत्तर प्रदेश) और अफगानिस्तान से प्राप्त मूर्तियों व गुप्तकाल की प्रशस्तियों, शिलालेखों, सिक्कों आदि से जानकारी प्राप्त होती है कि उस समय राजा को देवस्वरूप माना जाता था। हरिषेण की प्रयाग प्रशस्ति से समुद्रगुप्त के शासन काल की जानकारी प्राप्त होती है।

- बौद्ध कथाओं में भूमिहीन खेतिहर श्रमिकों, लघु कृषकों और जमींदारों का उल्लेख है। पालि भाषा में छोटे किसानों को गहपति कहा गया है। पत्थरों तथा ताम्रपत्रों में भूमिदान के प्रमाण मिलते हैं।
- जातक कथाओं और पञ्चतन्त्र से प्राप्त जानकारी के अनुसार राजा अपने राजकोष को बढ़ाने के लिए कई प्रकार के कर लगाता था।
- गुप्तकालीन कुछ नगर (पाटलिपुत्र आदि) नदी मार्ग के किनारे बसे थे तथा कुछ समुद्र तट (पुहार आदि) पर स्थित थे, जहाँ परिवहन जलमार्ग द्वारा होता थे।
- भू-मार्ग से भी व्यापार होता था। भू-मार्गीय नगरों में मथुरा, उज्जयिनी आदि नगर व्यावसायिक और सांस्कृतिक गतिविधियों के केंद्र रहे थे।
- भारत से जलमार्ग द्वारा व्यापार उत्तरी अफ्रीका, पश्चिमी एशिया, चीन, दक्षिण पूर्व एशिया आदि में होता था। धनी व्यापारियों को तमिल भाषा में मसत्थुवन, प्राकृत में सत्थवाह और सेट्ठी कहा जाता था।
- सोने के सिक्के सर्वप्रथम पहली सदी ई. में कुषाण राजाओं ने जारी किए थे। बाद में गुप्त शासकों ने भी सोने के सिक्के जारी किए थे।
- आधुनिक भारतीय लिपियों का मूल ब्राह्मी लिपि है। यूरोपीय विद्वानों ने भारतीय पण्डितों की मदद से आधुनिक बङ्गाली और देवनागरी लिपि में अनेक पाण्डुलिपियों का अध्ययन किया है।
- 1919 ई. में संस्कृत के प्रसिद्ध विद्वान वी.एस. सुकथांकर के मार्गदर्शन में कई विद्वानों ने महाभारत के समालोचनात्मक संस्करण तैयार करने का दायित्व निर्वहन किया था।
- संस्कृत भाषा में परिवार के लिये 'कुल' शब्द का प्रयोग हुआ है। परिवार एक बड़े समूह का भाग होता है, जिन्हें सम्बन्धी भी कहते हैं। ये सम्बन्ध दो प्रकार के हैं- पितृवंशिकता व मातृवंशिकता।
- प्राचीन वैदिक पद्धति में लोगों को गोत्रों में वर्गीकृत किया गया था। प्रत्येक गोत्र एक वैदिक ऋषि के नाम से होता है।
- वंश वृद्धि हेतु पुत्र का होना महत्वपूर्ण माना जाता था। पैतृक संसाधनों पर पुत्रियों का अधिकार नहीं था। कन्यादान पिता के लिए महनीय कार्य होता था।
- विवाह के 8 प्रकार होते हैं- 1. ब्रह्म विवाह 2. देव विवाह 3. आर्ष विवाह 4. प्राजापत्य विवाह 5. असुर विवाह 6. गंधर्वविवाह 7. राक्षस विवाह 8. पैशाच विवाह।
- वर्ण व्यवस्था में समाज के चार सोपान- ब्राह्मण, क्षत्रिय वैश्य और शूद्र में निबद्धित किया गया है। किसी भी सोपान को उच्च या निम्न जैसी पदवी प्राप्त नहीं थी, सङ्गच्छध्वं संवदध्वं....। (ऋ.10.191.2) से इसकी सिद्धि होती है।
- वर्ण व्यवस्था के सुविस्तृत कलेवर में समाज के सूक्ष्म नियन्त्रण एवं सुप्रबन्धन के लिए एक श्रेष्ठ वर्गीकरण हुआ था, जिसे 'जाति' व्यवस्था कहते हैं। ये जातियाँ, कर्म आधारित वर्णों का विभाग हैं।
- श्रीमद्भगवद्गीता में यज्ञ उत्पत्ति के बारे में संकेत है- अन्नाद्भवन्ति भूतानि पर्जन्यादन्नसम्भवः। यज्ञाद्भवति पर्जन्यो यज्ञः कर्मसमुद्भवः॥ (गीता 3.14) अर्थात् विश्व में सभी जीवों की उत्पत्ति अन्न से हुई है और अन्न की उत्पत्ति वृष्टि से होती है, वृष्टि यज्ञ से होती है और यज्ञ वहित कर्मों से उत्पन्न होता है।

- जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव और चौबीसवें (अन्तिम) तीर्थंकर महावीर स्वामी थे। छठीं सदी ई.पू. तक जैन सिद्धान्त उत्तर भारत में प्रचलित हो गए थे। महावीर स्वामी के पश्चात यह धर्म भारत के अधिकांश भागों में प्रसारित हो गया था।
- महावीर का जन्म लगभग 540 ई.पू. वैशाली गणराज्य के कुण्डग्राम में इक्ष्वाकुवंशीय क्षत्रिय राज परिवार में हुआ था। महावीर स्वामी को 72 वर्ष की आयु में पावापुरी में मोक्ष की प्राप्ति हुई थी।
- जैन धर्म के पञ्चमहाव्रत- अहिंसा, सत्य, अपरिग्रह, अचौर्य (अस्तेय), इन्द्रियनिग्रह (ब्रह्मचर्य) हैं।
- गौतम बुद्ध का जन्म 563 ई.पू. ईक्ष्वाकुवंशीय शाक्य कुल में लुम्बनी नामक स्थान पर हुआ था। गौतम बुद्ध के पिता का नाम राजा शुद्धोदन और माता का नाम महामाया देवी था।
- महात्मा बुद्ध ने दुख: के चार कारण बतलाए हैं, जिन्हें चार आर्य सत्य कहा जाता है। ये चार आर्य सत्य- दुःख, दुःख का कारण, दुःख निरोध, दुःख निरोध का मार्ग हैं।
- बुद्ध ने दुःख-निरोध के लिए 'अष्टांगिक मार्ग' का निर्देश किया है- सम्यक् दृष्टि, सम्यक् संकल्प, सम्यक् वाक्, सम्यक् कर्मान्त, सम्यक् आजीव, सम्यक् व्यायाम, सम्यक् स्मृति और सम्यक् समाधि।
- आज भी महात्मा गौतम बुद्ध के सन्देश भारत, मध्य एशिया, चीन, जापान, कोरिया, श्रीलंका, म्याँमार, थाइलैण्ड तथा इण्डोनेशिया आदि देशों तक फैले हुए हैं।

अध्याय- 5

वेद शिक्षा प्रणाली

- वेद अपौरुषेय, अनादि, अनन्त एवं निरन्तर हैं। कूर्मपुराण (2.28) एवं महाभारत (12.224.55) में यह निर्देश है अनादिनिधना नित्या वागुत्सृष्टा स्वयंभुवा। आदौ वेदमयी दिव्या यतः सर्वाः प्रवृत्तयः॥
- तैत्तिरीय उपनिषद् की शिक्षावल्ली में आचार्यः पूर्वरूपम्, अन्तेवास्युत्तररूपम्, विद्यासन्धिः, प्रवचनं सन्धानम्। इस मन्त्र से वैदिक शिक्षा के स्वरूप को समझा जा सकता है।
- आचार्य, शिष्य, ज्ञान एवं ज्ञान के संक्रमण को विद्या का चहुँमुखी प्रक्रम माना गया है। वैदिकयुगीन शिक्षा रोजगारपरक, कौशलपरक व चहुँमुखी विकास करने वाली थी।
- गुरुकुलों में उपनयन संस्कार एवं विद्यारम्भ संस्कार के बाद विभिन्न विषयों में दिए जाने वाले ज्ञान एवं कला-कौशल में प्रशिक्षण को शिक्षा कहा जाता था।
- बृहदारण्यक उपनिषद् में 'अस्य महतो भूतस्य निःश्वसितम् एतत् यद् ऋग्वेदः, यजुर्वेदः, सामवेदः, अथर्वाङ्गिरसः, इतिहासः, पुराणविद्या, उपनिषदः, श्लोकाः, सूत्राणि, अनुव्याख्यानानि अस्यैव एतानि सर्वाणि निःश्वसितानि।' इस मन्त्र में सम्पूर्ण ज्ञान के विविध विषयों का उल्लेख हैं।
- 'पुराणन्यायमीमांसाधर्मशास्त्राङ्गविस्तराः। वेदाः स्थानानि विद्याना धर्मस्य च चतुर्दश॥' इस श्लोक में अठारह पुराण, न्यायशास्त्र, मीमांसा शास्त्र, धर्मशास्त्र, छह वेदाङ्ग, चार वेद ये चतुर्दश विद्याएँ हैं।
- उच्च शिक्षा की व्यवस्था गुरुकुलों में होती थी। ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य बच्चों का क्रमशः 8, 10 और 12 की आयु में गुरुकुल में प्रवेश होता था। उपनयन संस्कार अनिवार्य था।
- गुरुकुलों में वेद, वेदांग, शास्त्रों, पुराणों की शिक्षा के साथ खगोल, भूगोल, कला-विज्ञान, वास्तु-ज्योतिष, कृषि-वाणिज्य, योग-आध्यात्म, भाषा-साहित्य आदि भारतीय विद्याओं की शिक्षा दी जाती थी।
- वैदिक युग में व्यावसायिक शिक्षा को कर्मशिक्षा कहा जाता था, जिसे वैदिक युग में बालक घर पर ही सीख जाता था।
- वैदिक शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य विद्ययाऽमृतमश्नुते है अर्थात् विद्या अमरता की ओर ले जाती है। वैदिक युगीन ऋषियों ने आध्यात्मिक और भौतिक दोनों शिक्षा की व्यवस्था की थी।
- वैदिक शिक्षा का मुख्य उद्देश्य उच्च नैतिक स्तर, आध्यात्म, अनुशासन के साथ-साथ अपने अगले जन्म के लिए सत्कर्म करना था। वैदिक युग में ज्ञान को मनुष्य का तीसरा नेत्र 'ज्ञानं मनुजस्य तृतीयं नेत्रम्' कहा जाता था। शिक्षा के द्वारा ही अतीत की संस्कृति वर्तमान में दृष्टिगत होती है।
- प्राथमिक स्तर के पाठ्यक्रम में भाषा, व्याकरण, छन्दशास्त्र, गणित का सामान्य ज्ञान सामाजिक व्यवहार, नीति प्रधान एवं धार्मिक क्रियाओं की शिक्षा दी जाती थी।
- उच्च शिक्षा दो भागों में विभाजित थी। विद्यार्थी को पहले भाग में वैदिक वाङ्मय के विभिन्न ग्रन्थों, व्याकरण, कर्मकाण्ड, ज्योतिर्विज्ञान, आयुर्विज्ञान, सैन्य शिक्षा, कृषि, पशुपालन, कला-कौशल, राजनीति शास्त्र भूगर्भशास्त्र, प्राणीशास्त्र की शिक्षा प्रदान की जाती थी।

- दूसरे भाग में इतिहास, पुराण, नक्षत्रविद्या, न्यायशास्त्र, अर्थशास्त्र, देवविद्या, ब्रह्मविद्या और भूतविद्या आदि की शिक्षा दी जाती थी।
- सांसारिक (भौतिक) पाठ्यक्रम के अन्तर्गत भाषा, व्याकरण, अङ्कशास्त्र, कृषि, पशुपालन, कला, संगीत, कताई-बुनाई-रंगाई, धातु-कार्य, अर्थशास्त्र, राजनीतिशास्त्र, भूगर्भशास्त्र, तर्कशास्त्र, ज्योतिर्विज्ञान, आयुर्विज्ञान, गुरुकुल व्यवस्था के प्रबन्धन आदि की शिक्षा आती थी।
- आध्यात्मिक पाठ्यक्रम के अन्तर्गत वेद, वेदाङ्ग, वेदान्त, आरण्यक, उपनिषद्, धर्मशास्त्र और नीतिशास्त्र का अध्ययन, इन्द्रिय निग्रह, धर्मानुकूल आचरण, ईश्वर भक्ति, सन्ध्या वन्दन और यज्ञादि क्रियाओं का प्रशिक्षण सम्मिलित था।
- गुरु में विद्वत्ता, स्वाध्यायी, धर्म पारायण और सच्चरित्रता आदि गुणों का होना आवश्यक था। गुरु को सत्यजन्मा और विश्ववेदा आदि विशेषणों से सम्बोधित किया जाता था।
- उपनिषदों में गुरुकुलों को 'आचार्यकुल' कहा गया है। भारद्वाज एवं वाल्मीकि के गुरुकुलों का इतिहास में उच्च स्थान है। महाभारतकाल में मार्कण्डेय और कण्व ऋषि के आश्रम, प्रधान विद्या स्थल थे।
- 12 वर्षीय पाठ्यक्रम (1 वेद) का अध्ययन पूर्ण करने वाले छात्रों को स्नातक कहा जाता था। 24 वर्षीय पाठ्यक्रम (2 वेदों) का अध्ययन पूर्ण करने वाले छात्रों को वसु कहा जाता था। 36 वर्षीय पाठ्यक्रम (3 वेदों) का अध्ययन पूर्ण करने वाले छात्रों को रुद्र कहा जाता था। 48 वर्षीय पाठ्यक्रम (4 वेदों) का अध्ययन पूर्ण करने वाले छात्रों को आदित्य कहा जाता था।
- आरुणि, उपमन्यु, अष्टाध्यायी के प्रणेता पाणिनि, अष्टांग योग के प्रणेता पतञ्जलि, कौशल नरेश प्रसेनजीत, मौर्यसम्राट चन्द्रगुप्त, आदि ने तक्षशिला में शिक्षा ग्रहण की थी। नालन्दा विश्वविद्यालय को युनेस्को ने जुलाई 2016 में विश्वधरोहर सूची में सम्मिलित किया है।

अध्याय- 6

धार्मिक विश्वासों में परिवर्तन

(लगभग 8वीं से 18वीं सदी तक)

- उपनिषदों में धर्म को ईश्वर के विषय में ज्ञान माना गया है। धर्म दर्शन के माध्यम से मानव ईश्वर सम्बन्धी ज्ञान प्राप्त कर सुख का अनुभव प्राप्त करता है। समय तथा परिस्थितियों का प्रभाव धर्म पर पड़ता है, जिसके परिणामस्वरूप धार्मिक मान्यताओं में परिवर्तन आता है।
- भक्ति आन्दोलन का समय भारत में 8 से 18वीं सदी तक माना जाता है। दक्षिण में भारत में विकसित भक्ति आन्दोलन, क्रमश: बढ़ते हुए उत्तर भारत तक प्रसारित हुआ था।
- भागवत पुराण के अनुसार- 'उत्पन्ना द्राविड़े चाहं कृणाटे वृद्धिमागता।स्थिता किंचिन्महाराष्ट्रे गुर्जरे जीर्णतां गता॥' अर्थात, भक्ति कहती है कि मैं द्रविड देश में जन्मी, कर्नाटक में विकास हुआ, महाराष्ट्र में कुछ दिन ठहरी और गुजरात जाकर वृद्ध हो गई।
- भक्ति आन्दोलन का प्रारम्भ लगभग छठी सदी में अलवार (विष्णु भक्त) और नयनारों (शिवभक्त) के नेतृत्व में हुआ था।
- अलवार सन्तों के नेता 'नम्मालवार' थे। वे अलवार सन्तों की परम्परा के अंतिम केन्द्र बिन्दु थे, जिन्होंने समस्त दक्षिण भारत में घूम-घूम कर अपने भजनों के गायन से जनता को प्रभावित किया था।
- स्त्री भक्तों की परम्परा में दक्षिण भारत में 'अण्डाल' नामक अलवार स्त्री का प्रमुख स्थान है, जो स्वयं को भगवान विष्णु की प्रियतमा मानती थी।
- नयनार सन्तों की परम्परा में 'करइक्काल अम्माइयर' नामक स्त्री, शिव भक्त थी। उसने पितृसत्तात्मक समाज को चुनौती दी थी।
- दशवीं सदी में दक्षिण के सम्राटों ने 'अय्यार संवदर' और 'सुन्दरार' की कविताओं का 'तवरम' नामक ग्रन्थ में संकलन करवाया था।
- तमिल भक्ति परम्परा में नयनार सन्तों के साहित्य का गुणगान अधिक है। राजवंशों ने सनातन भक्ति परम्परा को अपनाया और संरक्षण प्रदान किया था।
- अलवार सन्तों के मुख्य काव्य 'नलयिरादिव्य प्रबन्धम्' को वेदों के सदृश माना गया है। इसमें बारह अलवार सन्तों की चार हजार रचनाओं का संकलन है।
- सन्त वेल्लाल को समाज का प्रत्येक वर्ग सम्मान की दृष्टी से देखता था। चोल सम्राट परातंक प्रथम ने 945 ई. में प्रसिद्ध कवि और सन्त 'अय्यार सेवदर' और 'सुन्दरार' की मूर्तियों की प्रतिष्ठा की गई थी।
- वीर शैव धर्म, लिङ्गायत सम्प्रदाय का एक उप सम्प्रदाय है, जो दक्षिण भारत में लोकप्रिय है। यह भारत का तीसरा सबसे बडा सम्प्रदाय है।
- लिङ्गायत सम्प्रदाय के अधिकांश उपासक कर्नाटक में रहते हैं। तमिल में इस धर्म को शिवाद्वैत और उत्तर भारत में शैवागम के नाम से जानते हैं।

- लिङ्गायत सम्प्रदाय में सर्वप्रथम सुधार आन्दोलन 'वास बण्ण' (1106-1168ई.) ने किया था। लिङ्ग धारण करने के कारण इस सम्प्रदाय को 'लिङ्गायत' कहा जाता है।
- वीर शैव धर्म में शिवाद्वैत अथवा षट स्थल सिद्धान्त को माना जाता है। षट स्थल- भक्त स्थल, महेश स्थल, श्रण स्थल, लिङ्ग स्थल, ऐक्य स्थल और शरण स्थल।
- वीर शैव धर्म में मुख्य सम्प्रदाय- बसवादि शरण सम्प्रदाय, आचार्य सम्प्रदाय, नयनार सम्प्रदाय (तमिलनाडु), कश्मीरी शैव सम्प्रदाय आदि हैं। अष्टा वर्ण- गुरु, लिङ्ग, जङ्गम, पादोदक, वभूति, रूद्राक्ष और मन्त्र ऊँ नम: शिवाय।
- बारह सौ वर्ष पहले जगद्गुरु रेणुकाचार्य ने ऊखीमठ (उत्तर में केदार नाथ), रम्भापूरिपीठ (दक्षिण में गोकर्ण), सूर्य सिंहासनपीठ (दक्षिण-पूर्व में श्री शैलम), सद्धर्मपीठ (मध्यभारत में उज्जैन) तथा विश्वेश्वरपीठ (काशी में) नामक पञ्चपीठों की स्थापना की थी।
- भक्ति आन्दोलन ने हिन्दु जन मानस को जागृत करने का काम किया था। हिन्दू धर्म को परिमार्जित कर नए मानदण्डों की स्थापना की गई थी।
- रामानुजाचार्य, शङ्कराचार्य, रामानन्दाचार्य, निम्बार्क, वल्लभाचार्य, कबीर, चैतन्य महाप्रभु एवं नानक जैसे महान सन्तों ने समाज के सभी उपेक्षित वर्गों को धर्म की दीक्षा दी थी।
- इस्लाम के अन्तर्गत एक वर्ग जैसे पीर और औलियाओं का था, जो दार्शनिक प्रवचनों से अपने धर्म का प्रचार-प्रसार करते थे, जिन्हें सूफी तथा उनके विचारों को 'सूफीवाद' के नाम से जाना जाता है।
- चिश्ती सिलसिला सर्वाधिक प्रभुत्वशाली था। इसके प्रर्वतक ख्वाजा मोइनद्दीन चिश्ती हैं, अजमेर में इनकी विश्व प्रसिद्ध दरगाह है। इन्हें मुहम्मद गोरी ने सुलतान-उल-हिन्द की उपाधि प्रदान की थी।
- शङ्कराचार्य का जन्म 788 ई. से 820 ई. के मध्य केरल में पूर्णा नदी के तटवर्ती कालटी नामक ग्राम में वैशाख शुक्ला पञ्चमी को हुआ माना जाता है।
- शङ्कराचार्य ने स्वामी गोविन्द भगवत्पाद से दीक्षा ली थी। शङ्कराचार्य के व्यक्तित्व और कृतित्व के परिचय में कहा गया है- अष्टवर्षे चतुर्वेदी, द्वादशे सर्वशास्त्रविद्। षोडशे कृतवान भाष्यम्, द्वात्रिंशे मुनिरभ्यगात्॥ अर्थात् आठ वर्ष की आयु में चारो वेदों का ज्ञान, बारहा वर्षों में सभी शास्त्रों का ज्ञान, सोलह वर्षों में भाष्य रचना तथा बत्तीस वर्ष की आयु में महाप्रयाण किया।
- गोवर्धन मठ पूर्व दिशा में वर्तमान उड़ीसा राज्य के जगन्नाथपुरी में स्थित है। यह पूर्वाम्नाय, विमला पीठ है। इस मठ का वेद ऋग्वेद, महावाक्य 'प्रज्ञानं ब्रह्म' (ऐतरेयोपनिषद्) और तीर्थ महोदधि है।
- शृंगेरी मठ दक्षिण दिशा में वर्तमान कर्नाटक राज्य में स्थित हैं। यह दक्षिणाम्नाय, शारदापीठ है। इस मठ का पठनीय वेद यजुर्वेद, महावाक्य 'अहम् ब्रह्मास्मि' (यजुर्वेद) और तीर्थ तुङ्गभद्रा है।
- शारदा मठ पश्चिम दिशा में वर्तमान गुजरात राज्य के द्वारिका में स्थित हैं। यह पश्चिमाम्नाय, कालकापीठ है। इस मठ का पठनीय वेद सामवेद, महावाक्य 'तत्त्वमसि' (छान्दोग्योपनिषद्) और तीर्थ गोमती है।

- ज्योर्ति मठ उत्तर दिशा में वर्तमान उत्तराखण्ड राज्य में स्थित हैं। इसका क्षेत्र बदरीक्षेत्र है। यह उत्तराम्नाय, ज्योतिष्पीठ है। इस मठ का पठनीय वेद अथर्ववेद, महावाक्य 'अयमात्मा ब्रह्म' (माण्डूक्योपनिषद्) और तीर्थ अलकनन्दा है।
- दक्षिण भारत के वैष्णव आचार्यों में रामानुज प्रमुख थे। इनका जन्म 1017 ई. में तिरूपति नाम श्रीपेरूमबुदुर (तमिलनाडु) में हुआ था। रामानुज का सिद्धान्त 'विशिष्टाद्वैतवाद' कहा जाता है।
- निम्बार्क का जन्म कर्नाटक राज्य के वेलारी जिले में 1250 ई. में तैलङ्ग ब्राह्मण परिवार में हुआ था। ये रामानुज के समकालीन थे। इनके विचार 'द्वैताद्वैतवाद' के नाम से प्रचलित हैं।
- कृष्ण भक्ति की परम्परा को निम्बार्क द्वारा इसे दार्शनिक रूप में प्रस्तुत किया गया था तथा इसका प्रतिपादन और विकास 16वीं सदी के पूर्वार्द्ध में वल्लभाचार्य एवं चैतन्य महाप्रभु ने किया था। वल्लभाचार्य 'शुद्धाद्वैतवाद' के प्रतिपादक थे। शुद्धाद्वैतवाद दर्शन के आराधना मार्ग को ही 'पुष्टिमार्ग' कहते हैं।
- राम भक्ति का प्रारम्भ वाल्मीकि रचित 'रामायण' से माना जाता है परन्तु इसे प्रसारित कर जनधर्म बनाने का श्रेय रामानन्द को है। इस आधार पर इनका काल 1400 ई. से 1470 ई. तक माना है।
- बाबा गुरुनानक देव का जन्म कार्तिक पूर्णिमा (नवम्बर,1469ई.) को तलवण्डी ग्राम में हुआ था। मध्ययुगीन धार्मिक एवं सामाजिक सुधारकों में गुरुनानक का नाम उल्लेखनीय है।
- सिक्खों पाँचवें गुरु अर्जुनदेव जी ने गुरुनानक तथा उनके उत्तराधिकारियों, बाबा फरीद, रविदास और कबीर की बानी को आदिग्रन्थ साहिब में संकलित किया था, जिसे 'गुरुवानी' कहा जाता है।
- 17वीं सदी के उत्तरार्द्ध में दसवें गुरु गोविन्दसिंह जी ने, नवें गुरु तेगबहादूर की रचनाओं को भी इसमें शामिल किया था, तब से इस ग्रन्थ को 'गुरुग्रन्थ साहिब' कहा जाता है।
- मीरा का जन्म 1504 ई. में राजस्थान की मेड़ता रियासत के कुड़की ग्राम में हुआ था। मीरा में कृष्ण के प्रति निष्ठा उनकी दादी से उत्पन्न हुई थी। 1560 ई. में द्वारिका में मीरा कृष्ण की मूर्ति में समा गई थी।

अध्याय- 7

मध्यकालीन भारत

(ग्यारहवीं से सत्रहवीं शताब्दी तक)

- राजा भोज परमार का शासन 1010 ई. से 1055 ई. तक रहा था। भोज का राज्य मध्य भारत में, उत्तर में चितौड़गढ़ से लेकर दक्षिण में कोंकण तक तथा पूर्व में विदिशा से लेकर साबरमती नदी के पश्चिम भाग तक विस्तृत था।
- राजा भोज परमार एक शासक के साथ-साथ बुद्धिजीवी और बहुविद्यावादी थे। राजा भोज ने चौरासी पुस्तकों की रचन की थी। जिनका सम्बन्ध रसायन, व्याकरण, वास्तुकला, जलविद्युत, संगीत, काव्य, ज्योतिष, औषधि, नगर नियोजन और रोबोटिक विज्ञान से है।
- भोज द्वारा रचित खगोल विज्ञान की पुस्तक 'समराङ्गणसूत्रधार' में यन्त्र विजनन अध्याय में रोबोटिक विज्ञान का उल्लेख हुआ है- लघुदारुमयं महाविहंगं दृढसुश्लिष्टतनुं विधाय तस्य। उदरे रसयन्त्रमादधीत ज्वलनाधारमधोअस्य चातिपूर्णम् ॥ तत्रारूढः पूरुषस्तस्य पक्षद्वन्द्वोच्चालप्रोज्झितेनानिलेन। सुप्तस्वान्तः पारदस्यास्य शक्त्या चित्रं कुर्वन्नम्बरे याति दूरम् ॥ (31.95-96)
- प्रसिद्ध विद्वान मेरुतुङ्ग ने अपने ग्रन्थ 'प्रबन्ध चिन्तामणि' में राजा भोज द्वारा 104 मन्दिरों के निर्माण का उल्लेख किया है। राजा भोज ने वर्तमान भोपाल (भोजपाल) नगर बसाकर वहाँ प्रसिद्ध तालाब भोजताल का निर्माण करवाया था।
- विजयनगर सम्राट कृष्णदेव राय ने राजा भोज से प्रेरित होकर 'अभिनव भोज' और 'सकल कला भोज' जैसे प्रसिद्ध ग्रन्थों की रचना की थी।
- विजय नगर की स्थापना तुङ्गभद्रा नदी के किनारे चौदहवीं सदी में हरिहर और बुक्का बन्धुओं ने अपनी विजय स्मृति के रूप में की थी। विजय नगर साम्राज्य उत्तर में कृष्णा नदी से लेकर सुदूर दक्षिण तक विस्तृत था। हम्पी विजयनगर साम्राज्य की राजधानी थी।
- विजयनगर के शासकों को 'राय' कहा जाता था। विजय नगर के शासकों में कृष्णदेव राय सबसे अधिक महान था। उसने अपनी योग्यता से विजय नगर को उन्नति के शिखर तक पहुँचा दिया था।
- हरिहर और बुक्का को मुहम्मद तुगलक ने मुस्लिम धर्म ग्रहण करने के लिए विवश किया था परन्तु बाद में विद्यारण्य के गुरु श्रंगेरी के मठाधीश विद्यातीर्थ ने पुनः हिन्दू धर्म में प्रवेश कराया था।
- स्थानीय मातृदेवी पम्पादेवी के नाम पर इस स्थान का नाम हम्पी हुआ था। 1986 ई. में हम्पी को राष्ट्रीय महत्त्व का स्थल घोषित किया गया था। विजयनगर को कर्नाटक साम्राज्यमु भी कहा जाता है।
- विजयनगर पर 1485 ई. तक सङ्गम राजवंश का शासन रहा था। 1485 ई. से 1503 ई. तक सत्ता सुलुव राजवंश के पास रही थी। तदनन्तर तुलुव राजवंश ने राज्य का नेतृत्व किया था।

- तुलुव वंश के प्रसिद्ध शासक कृष्णदेवराय थे, जिन्होंने 1514 ई. में उड़ीसा व 1520 ई. में बीजापुर के सुल्तान को परास्त किया था। कृष्णदेव राय के काल में विशाल देवालयों का निर्माण तथा 'नगलपुरम' नामक उपनगर स्थापित किया गया था।
- जल प्रबन्धन की दृष्टि से यहाँ 15 वीं सदी का महत्त्वपूर्ण कुण्ड 'कमलपुरम' जलाशय है और हिरिया नहर के भग्नावशेष भी देखे जाते हैं।
- 15 वीं सदी में फारस से आए दूत अब्दुर रज्जाक ने वहाँ के दुर्गों का वर्णन करते हुए दुर्ग की सात पंक्तियों का उल्लेख किया है। विशिष्ट स्थापत्य कला से युक्त प्रवेशद्वार थे।
- विजयनगर राज्य में दो प्रभावशाली मंच थे, जिन्हें सभा मण्डप और महानवमी डिब्बा कहा जाता था। महानवमी डिब्बा में नवरात्र में अनुष्ठान किया जाता था। अन्य भवनों में लोटस भवन सबसे सुन्दर भवनों में से एक है। राम मंदिर अतिदर्शनीय है। राज परिवार द्वारा ही इसका उपयोग किया जाता था।
- विरुपाक्ष देवालय के समक्ष बना मण्डप कृष्णदेवराय ने अपने राज्यारोहण के उपलक्ष्य में निर्मित कराया था। राज्य के संरक्षक विरुपाक्ष (भगवान शिव) से विवाह हेतु पम्पादेवी ने यहीं तप किया था।
- कृष्णदेवराय ने तेलुगु भाषा में आमुक्तमाल्यद नामक ग्रन्थ की रचना की थी। राजा कृष्णदेव राय के दरबार में तेलुगु भाषा के आठ महान कवियों को राजाश्रय प्राप्त था, जिन्हें अष्टदिग्गज कहा जाता था। उस समय प्रसिद्ध विद्वान सायणाचार्य ने वेदों पर भाष्य लिखे थे।
- 16वीं-17वीं सदी में भारत में लगभग 85 प्रतिशत लोग ग्रामीण थे। लघु खेतिहर और भूमिहार दोनों ही कृषि से सम्बन्ध रखते थे। मुगल राज्य अपनी आमदनी का बहुत बड़ा भाग कृषि उत्पादन से वसूलता था। कृषकों की प्रारम्भिक इकाई गाँव थी।
- मुगलकाल में दो प्रकार के किसान थे- खुदकाश्त एवं पाहीकाश्त। खुदकाश्त उसी गाँव के निवासी थे। वे किसान जो दूसरे गाँव से आकर ठेके पर कृषि करते थे, पाहीकाश्त कहलाते थे।
- भारत में सर्वप्रथम तम्बाकू का पौधा दक्षिण पहुँचा, फिर वहाँ से 17वीं सदी में उत्तर भारत आया था।
- मुगलकालीन फारसी स्त्रोतों में किसान के लिये रैयत (बहुवचन रिआया) या 'मुजारियान' शब्द का प्रयोग करते हैं। कृषि व्यक्तिगत सम्पत्ति के सिद्धान्त पर आधारित थी।
- 19 वीं सदी में कुछ अंग्रेज अधिकारियों ने हिन्दुस्तानी गाँवों को एक लघु गणराज्य के रूप में देखा, जहाँ लोग भाईचारे का सम्यक पालन करते थे। आर्थिक सर्वेक्षणों के अनुसार 1600 से 1700 ई. के मध्य भारत की जनसंख्या लगभग 5 करोड़ थी।
- राजस्व वसूली हेतु दीवान (वित्तीय व्यवस्था का लेखक व निरीक्षक) होता था। भू-राजस्व प्रबन्ध दो प्रकार के थे- प्रथम कर निर्धारण, दूसरा वास्तविक वसूली। निर्धारित रकम के लिए 'जमा' शब्द और प्राप्त वसूली हेतु हासिल शब्द प्रचलित था।
- अकबर ने अमील गुजार (राजस्व अधिकारी) को नकद कर वसूलने का आदेश दिया था। अमीन एक मुलाजिम था, जिसका प्रमुख कार्य प्रान्तों में राजकीय नियम-कानूनों का पालन करवाना था। मुगल प्रशासन तन्त्र के शीर्ष में एक सैन्य नौकरशाही तन्त्र था, वही मनसबदारी व्यवस्था थी।

- 16वीं, 17वीं सदी में सबसे मजबूत सत्ता मुगल साम्राज्य की थी। उनके व्यापारिक सम्बन्ध मिग (चीन), सफावी (ईरान), ऑटोमन (तुर्की) से थे। साम्राज्य की सुदृढ़ता ने चीन में भूमध्य सागर के सुविशाल मार्ग तक व्यापार संवर्धन में सहयोग किया था।
- बाबर कृत 'बाबरनामा' और अबुल फजल कृत 'आइन ए अकबरी' एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक ग्रन्थ है, जिसमें राजस्व वसूली, राज्य और जमींदारों के सम्बन्ध आदि का लेखा-जोखा वर्णित है।
- मुगल शब्द की व्युत्पति मङ्गोल शब्द से हुई है। पितृपक्ष से तैमूर के वंशज होने के कारण ये खुद को तैमूरी कहते थे। बाबर मातृपक्ष से चंगेजखाँ का रिश्तेदार था। बाबर को फरगना के उजबेकों ने खदेड़ दिया था इसलिए वह पहले काबुल तत्पश्चात 1526 ई. में भारतीय उपमहाद्वीप में आया था।
- हुमायूँ ने मुगल राज्य का विस्तार किया था परन्तु अफगान नेता शेरशाह सूरी से चौसा के युद्ध (1539 ई.) में परास्त होने के कारण, उसे ईरान के शासक तहमास्प के यहाँ शरण लेनी पड़ी थी।
- 1555 ई. में हुमायूँ ने सूरों को परास्त कर अपना साम्राज्य वापिस प्राप्त कर लिया था, इसके एक वर्ष पश्चात हुमायूँ की मृत्यु हो गई थी।
- अकबर 1556 ई. में भारत का बादशाह बना था। उसने साम्राज्य विस्तार के साथ एक समृद्ध राज्य निर्मित कर उसे सशक्त किया था।
- अबुल फजल ने कहा कि- 'राजा, प्रजा के चार तत्त्वों जीवन, धन, सम्मान, विश्वास की सुरक्षा करता है, इसलिए वह आज्ञापालन तथा संसाधनों से अपने भाग की अपेक्षा रखता है। जहाँगीर ने कहा कि, राज्यारोहण के अनन्तर मैंने जो पहला आदेश दिया, वह न्याय की जंजीर को लगाने का था।
- अकबर ने 1570 ई. के लगभग फतेहपुर सीकरी को और 1585 ई. में लाहौर को राजधानी बनाया था।
- प्रान्त का प्रमुख सूबेदार (गवर्नर) होता था, जो बादशाह को प्रतिवेदन देता था। इनके अतिरिक्त उप जिला के स्थानीय प्रशासन में कानूनगो (राजस्व रक्षक), चौधरी (राजस्व सङ्ग्राहक) और काजी होते थे।
- बादशाहनामा में बादशाह के बैठने के स्थान तख़्त-ए-मुरस्सा (रत्नजड़ित सिंहासन) पर प्रकाश डाला गया है। इसमें एक छतरी, बारह कोणीय खम्भों में टिकी है। ऊँचाई में यह गुम्बद तक 10 फुट है।
- ईद, शब-ए-बारात और होली के अवसर पर राज्यारोहण का वार्षिकोत्सव आयोजित होता था। मुगलकाल में शाही परिवार को हरम कहा जाता था।
- भारत में पहला विदेशी यात्री चन्द्रगुप्त मौर्य के दरबार में यूनानी सम्राट सेल्यूकस के राजदूत के रूप में 'मेगस्थनीज' आया था, जिसने अपने पुस्तक 'इण्डिका' में भारतीय इतिहास का वर्णन किया है।
- टालमी, प्लिनी (नेचुरल हिस्ट्री) यूनानी यात्री भी भारत आए थे। चीनी यात्रियों में सर्वप्रथम फाह्यान, चन्द्रगुप्त द्वितीय के शासन काल में और ह्वेनसांग सम्राट हर्षवर्धन के समय भारत आया था। मध्यकालीन भारत में अलबरूनी, इब्नबतूता, बर्नियर आदि प्रसिद्ध यात्री थे।
- अलबरूनी ने 'किताब-उल-हिन्द' की रचना की थी, जिसमें भारतीय धर्म और दर्शन, त्योहारों, खगोल-विज्ञान, भार-तौल तथा मापन विधियों, मूर्तिकला आदि विषयों का वर्णन है।

- इब्नबतूता, जिसे एक विश्वयात्री की संज्ञा दी जाती है। इब्नबतूता का जन्म तांजियर (मोरक्को) में 24 फरवरी, 1304 ई. हुआ था। उसने अपने जीवनकाल में लगभग 75000 मील की यात्रा पूरी की थी। उसके यात्रा वृत्तांत का नाम 'रिहला' है,
- फ्रांस निवासी बर्नियर, दारा शिकोह का निजी चिकित्सक था। बर्नियर ने भारत की यात्रा 1656-68 ई. तक की थी। उसने तत्कालीन भारत की सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और धार्मिक स्थिति का वर्णन अपनी पुस्तक 'ट्रेवल्स इन द मुगल एम्पायर' में किया है।
- बर्नियर ने वर्णन किया है कि 17 वीं सदी में यहाँ की पन्द्रह प्रतिशत जनसंख्या शहरों में रहती थी। वह मुगलकालीन शहरों को 'शिविर' कहता था।
- अफ्रीकन यात्री इब्नबतूता ने भी भारतीय समाज में दास प्रथा का वर्णन किया था। युद्ध बन्दियों को दास बनाया जाता था। दासों के शहरों में बाजार होते थे। वहाँ पर उनका व्यापार होता था।

अध्याय- 8

भारत में उपनिवेशवाद और परिणाम

- भारत में औपनिवेशिक शासन से आशय पुर्तगाली, डच, फ्रान्सीसी एवं ब्रिटिश ईस्ट इण्डिया कम्पनी तथा आगे चलकर ब्रिटिश शासन की स्थापना से है। पुर्तगाली-1498 ई., डच-1602 ई., फ्रान्सीसी-1664 ई., ब्रिटिश-1600 ई. में कम्पनियाँ भारत आई थीं।
- भारत में ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन की स्थापना प्लासी युद्ध (1757 ई.) के बाद बङ्गाल में हुई थी।
- अङ्ग्रेजी शासन ने बङ्गाल में सर्वप्रथम ग्राम प्रबन्धन, भूमि अधिकार व्यवस्था तथा नवीन राजस्व प्रणाली स्थापित की थी। 1793 ई. में 'इस्तमरारी बन्दोबस्त' कार्नवालिस द्वारा बङ्गाल में लागू किया गया था। 1770 ई. के दशक तक गाँवों की वित्तीय स्थिति कमजोर हो गई और कृषि उपज घटने लगी थी।
- 1813 ई. में ब्रिटिश संसद में पाँचवी रिपोर्ट, जो भारत में ईस्ट इण्डिया कम्पनी के प्रशासन तथा क्रियाकलापों के बारे में थी। इसमें किसानों और जमींदारों की अर्जियाँ, विभिन्न जनपदों के कलेक्टरों के प्रतिवेदन, राजस्व विवरण आदि थे।
- 1780 के दशक में संथाल जनजाति बङ्गाल में जमींदारों के यहाँ किराए पर कृषि करती थी। अब ब्रिटिश अधिकारियों ने इन्हें राजमहल की पहाड़ियों के आस-पास कृषि कार्य के लिए बसाना प्रारम्भ किया था। 1838 ई. में इनकी 40 बस्तियाँ थीं, जो 1851 ई. में बढ़कर 1473 हो गई थी।
- संथालों ने 1855-56 ई. में आन्दोलन कर दिया था, परिणामस्वरूप 5500 वर्गमील क्षेत्र भागलपुर तथा वीरभूमि जिले से अलग कर संथाल परगना बना दिया गया था।
- 19वीं सदी में दक्षिण भारतीय प्रान्तों में भी कृषकों ने साहूकारों और अनाज व्यापारियों के विरुद्ध आन्दोलन किए थे। इनमें 1875 ई. में दक्षिण और गल्लामण्डी पूना के बडेगाँव, अहमदनगर के आन्दोलन प्रमुख हैं। इन आन्दोलनों में ऋणपत्र और बहियों को जला दिया गया था।
- 'रैयत' शब्द का प्रयोग अंग्रेजों के विवरणों में किसानों के लिए किया जाता था। हिन्दी व अन्य भारतीय भाषाओं में 'बेनामी' शब्द का प्रयोग फर्जी (कम महत्त्व) के व्यक्ति के लिए किया जाता था। जबकि की इस शब्द का वास्तविक अर्थ 'गुमनाम' होता है।
- उस समय 'लठियाल' शब्द का प्रयोग जमींदारों के लठैत लोगों के लिए किया जाता था। ऐसा व्यक्ति जो ऋण देने के साथ-साथ व्यापार कार्य करता था, उसे साहुकार कहा जाता था।
- 1860 ई. से पूर्व ब्रिटेन में आयात की जाने वाली तीन-चौथाई कपास अमेरिका से आती थी। किन्तु अमेरिकी गृह युद्ध के कारण ब्रिटेन में कपास का आयात बन्द हो गया था।
- 1857 ई. में ब्रिटेन में कपास आपूर्ति संघ, 1859 ई. में मेनेचस्टर कॉटन कम्पनी बनी थी, जिनका लक्ष्य पूरे विश्व में कपास को प्रोत्साहन देना था। उस समय भारत इसका अच्छा विकल्प बना था। अब ब्रिटेन में आयात होने वाले कपास का 90% भाग भारत से निर्यात होता था।

- 1878 ई. में इस आयोग द्वारा अपनी रिपोर्ट ब्रिटिश संसद में प्रस्तुत की गई थी, जिसे 'दक्कन दंगा रिपोर्ट' कहा जाता है। दक्कन दंगा आयोग द्वारा निरीक्षण करने पर ज्ञात हुआ कि मूलधन सौ रुपये पर दो हजार से भी अधिक ब्याज लगाया गया था।
- 1857 का आन्दोलन, मेरठ छावनी के सैनिकों ने 10 मई, 1857 के दिन मङ्गल पाण्डेय के नेतृत्त्व में प्रारम्भ किया था।
- मेरठ के सिपाहियों ने दिल्ली में बहादुर शाह जफर से आन्दोलन के नेतृत्व को स्वीकार करवाया था। कानपुर में नाना साहेब पेशवा, झाँसी में महारानी लक्ष्मीबाई, आरा (बिहार) में कुँवरसिंह, अवध में वाजिद अली शाह के युवा बेटे बिरजिस कद्र आदि ने आन्दोलन का नेतृत्त्व किया था।
- बड़ोते परगना (उत्तर प्रदेश) में शाहमल, आदिवासी काश्तकार गोनू ने छोटा नागपुर के सिंहभूमि में आन्दोलन का नेतृत्व किया था।
- विलियम बेंटिक के नेतृत्व में कम्पनी सरकार ने पश्चिमी शिक्षा, पश्चिमी विचारों के माध्यम से भारतीय समाज में 1820 ई. के दशक से नीति निर्माण का कार्य प्रारम्भ कर दिया था। इस दिशा में 1829 ई. में सती प्रथा समाप्त करने तथा 1856 ई. में हिन्दू विधवा विवाह को वैधता देने वाला कानून बनाया था।
- 1801 ई. में अवध पर सहायक सन्धि थोपी गई थी। सन्धि की शर्तों के उल्लंघन का आरोप लगाकर 1856 ई. में अवध रियासत को औपचारिक रूप से ब्रिटिश शासन का अङ्ग बना दिया था।
- फिरंगी शब्द का प्रयोग लोगों द्वारा पश्चिम के लोगों का मजाक उड़ाने एवं अपमानजनक दृष्टि से किया जाता था। सहायक सन्धि के द्वारा 1802 ई. में हैदराबाद को अङ्ग्रेजी साम्राज्य का अङ्ग बनाया गया था।
- 1859 ई. में टॉमस जोन्स बार्कर द्वारा निर्मित चित्र 'रिलीफ ऑफ लखनऊ' फिरंगियों द्वारा चित्रों में अङ्ग्रेजों को बचाने और विद्रोहियों के दमन करने वाले अङ्ग्रेज नायकों का यशोगान किया गया है।
- 1857 की क्रान्ति से 20 वीं सदी के राष्ट्रीय आन्दोलन को प्रोत्साहन मिला था। राष्ट्रवादी चिन्तन का मूल आधार 1857 ई. का आन्दोलन था, जिसे प्रथम स्वाधीनता सङ्ग्राम कहा जाता है।
- भारत में औपनिवेशिक शासन की स्थापना के बाद कारखानों , सूती वस्त्र मिलों, रेल आदि के विकास के कारण नगरीकरण को बढ़ावा मिला था। लोग रोजगार के लिए नगरों की ओर पलायन करने लगे थे।
- औपनिवेशिक शासन के प्रारम्भ में प्रेसीडेन्सी शहर- बम्बई, कलकत्ता और मद्रास का अधिक विस्तार हुआ था।
- ईस्ट इण्डिया कम्पनी के लोग 1639 ई. में मद्रास में और 1690 ई. में कलकत्ता में बसे थे। 1661 ई. में ब्रिटेन के राजा ने बम्बई को भी ईस्ट इण्डिया कम्पनी को दे दिया था।
- औपनिवेशिक शासन से पूर्व ग्रामीण क्षेत्र में कृषि, वनों में संग्रहण, पशुचारण से लोग अपना जीवन-यापन करते थे जबकि कस्बों में शिल्पी, व्यापारी, शासक, प्रशासक निवास करते थे।
- 1900 ई.से 1940 ई. के मध्य नगरीय जनसंख्या 10% से वृद्धि कर लगभग 13% हो गई थी। संसाधनों की प्रचुरता के कारण कलकत्ता, बम्बई और मद्रास तेजी से बड़े नगरों के रूप में परिणित हो गए थे।

- भारत में मानचित्र निर्माण के लिए 1878 ई. में सर्वे ऑफ इण्डिया का गठन किया गया था। अखिल भारतीय जनगणना का प्रथम प्रयास सन् 1872 में किया गया था। 1881 से प्रति 10 वर्षीय जनगणना स्थायी रूप से प्रारम्भ हुई थी।
- यूरोपीय आवासीय स्थल को 'ह्वाइट टाउन' तथा भारतीय निवास स्थल को 'ब्लैक टाउन' कहते थे। सर्वप्रथम व्यापारी क्रियाकलापों का केन्द्र कम्पनी ने सूरत को बनाया था।
- भारत में हिल स्टेशनों के विकास की कड़ी में गोरखा युद्ध (1815-16 ई.) के मध्य शिमला की स्थापना हुई थी। अङ्ग्रेज-मराठा युद्ध (1818 ई.) के समय अङ्ग्रेजों ने माउन्ट आबू का विकास किया था। 1835 ई. में दार्जिलिङ्ग को सिक्किम के राजा से छीन लिया गया था।
- 1639 ई. में उन्होंने मद्रासपट्टम में व्यापारिक चौकी स्थापित की थी, जिसे लोग चेनापट्टनम भी कहते थे। फ्रेन्च ईस्ट इण्डिया कम्पनी से स्पर्धा के कारण अङ्ग्रेजों ने मद्रास की किलेबन्दी कर, नगर नियोजन का कार्य भी किया था।
- 1757 ई. में प्लासी के युद्ध में सिराजुद्दौला की पराजय हुई थी। अङ्ग्रेजों ने कलकत्ता के सुतानाती, कालेकाता और गोविन्दपुर इन तीनों स्थानों को जोड़कर एक विशाल किला बनाया था। 1798 ई. में गवर्नर जनरल वेलेजली ने कलकत्ता में 'गवर्नमेंट हाउस' नामक महल बनवाया था।
- विनोदनी दासी बङ्गाली रङ्गमंच में 19वीं सदी के आखिर और 20वीं सदी के शुरुआती दशकों की जानी मानी हस्ती थीं। 1910-1913 ई. के मध्य इन्होंने 'आभार कथा' नाम से आत्मकथा लिखी थी।
- 1757 ई. में प्लासी के युद्ध में सिराजुद्दौला की पराजय हुई थी। अङ्ग्रेजों ने कलकत्ता के सुतानाती, कालेकाता और गोविन्दपुर इन तीनों स्थानों को जोड़कर एक विशाल किला बनाया था। 1798 ई. में गवर्नर जनरल वेलेजली ने कलकत्ता में 'गवर्नमेंट हाउस' नामक महल बनवाया था।

अध्याय- 9

भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन और महात्मा गाँधी

- गाँधी जी दक्षिण अफ्रीका में 20 वर्ष बिताने के उपरान्त जनवरी 1915 ई. में भारत आए थे। गाँधीजी ने सर्वप्रथम सत्याग्रह और अहिंसात्मक विरोध की तकनीक का सर्वप्रथम प्रयोग दक्षिण अफ्रीका में किया था। चन्दन देव नेसन के अनुसार, 'दक्षिण अफ्रीका ने ही गाँधी जी को महात्मा बनाया था।'
- गाँधीजी, गोपाल कृष्ण गोखले को अपना राजनैतिक गुरु मानते थे। उन्होंने सर्वप्रथम गाँधीजी को भारत को अच्छी तरह से जानने और समझने के लिए भारत भ्रमण की सलाह दी थी।
- गाँधीजी की 1916 ई. में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में सर्वप्रथम सार्वजनिक उपस्थिति हुई थी, जिसमें उन्होंने मजदूरों और गरीब वर्ग पर ध्यान न देने के कारण, सभ्रान्त वर्ग को फटकारा था।
- नील आन्दोलन चम्पारन (1917 ई.) व खेड़ा किसान आन्दोलन (1918 ई.) की सफलता ने गाँधीजी को राष्ट्रीय नेता बना दिया था।
- अङ्ग्रेजों ने रोलेट एक्ट 1919 ई. के द्वारा प्रेस पर नियन्त्रण कर लिया था। इस एक्ट के में बिना किसी पूछताछ के किसी भी भारतीय को कारावास का प्रावधान था। रोलट एक्ट के विरुद्ध गाँधी जी ने देशव्यापी बन्द का आन्दोलन चलाया था।
- 13 अप्रैल, 1919 को अङ्ग्रेज ब्रिगेडियर डायर ने जालियाँवाला बाग, अमृतसर में चल रही शान्तिपूर्ण सभा में गोली चलवाकर चार सौ से अधिक लोगों की हत्या कर दी थी।
- मुहम्मद अली और शौकत अली के नेतृत्व में ऑटोमन साम्राज्य पर तुर्की सुल्तान या खलीफा के अधिकारों को लेकर अङ्ग्रेजी सरकार के विरुद्ध खिलाफत आन्दोलन (1919-1920 ई.) चलाया जा रहा था। इस आन्दोलन का समर्थन कांग्रेस ने भी किया था।
- महात्मा गाँधी के नेतृत्त्व में अगस्त, 1920 ई. को असहयोग आन्दोलन का प्रारम्भ हुआ था। विदेशी सामानों का बहिष्कार किया गया, स्कूल, कॉलेज, न्यायालयों में लोगों ने जाना बंद कर दिया था।
- फरवरी, 1922 ई. में किसानों ने चौरी-चौरा में पुलिस थाने को जला दिया था, जिसमें 22 सिपाही मारे गये थे। इस हिंसक घटना के कारण महात्मा गाँधी ने यह आन्दोलन वापस ले लिया था।
- शासकीय लेखा के अनुसार 1921 ई. में 396 हड़तालें हुईं, जिनमें 6 लाख मजदूर सम्मिलित हुए तथा 70 लाख कार्य दिनों की हानि हुई थी।
- गाँधीजी को महात्मा शब्द से सम्बोधित करने वालों में राजवैध जीवराम कालिदास, स्वामी श्रद्धानन्द (1915 ई.) तथा रवीन्द्र नाथ टैगोर (1919 ई.) थे।
- 1928 ई. में ब्रिटिश पार्लियामेन्ट ने भारत की स्थिति जाँचने के लिए साइमन कमीशन को भारत भेजा था। इस कमीशन में एक भी भारतीय नहीं होने के कारण देश भर में इसका विरोध किया था।

- 1929 ई. के लाहौर अधिवेशन में कांग्रेस ने पूर्ण स्वराज्य का प्रस्ताव पारित किया था। 26 जनवरी, 1930 ई. को राष्ट्रध्वज फहराकर, सम्पूर्ण भारत में स्वाधीनता दिवस मनाया गया था।
- नमक कानून के विरोध में 12 मार्च, 1930 ई. को महात्मा गाँधी ने अपने 78 अनुयायियों के साथ साबरमती आश्रम से दाण्डी तक पैदल यात्रा की थी। 6 अप्रैल, 1930 ई. को गाँधीजी ने दाण्डी में अपने हाथ से नमक बनाकर, नमक कानून का उल्लघंन किया था।
- जनवरी, 1931 ई. में महात्मा गाँधी के कारावास से मुक्त होने पर गाँधीजी और तत्कालीन वायसराय इर्विन में एक समझौता पर सहमति बनी थी, जिसे 'गाँधी-इर्विन समझौता' कहा जाता है।
- सितम्बर, 1939 ई. में द्वितीय विश्वयुद्ध घोषणा होने के कारण कांग्रेस ने निर्णय लिया कि यदि युद्धोपरान्त अङ्ग्रेज भारत को आजादी देने के लिए सहमत हों तो कांग्रेस युद्ध में उनकी मदद करेगी। शासन ने कांग्रेस के प्रस्ताव को निरस्त कर दिया था। अतः 1939 ई. में कांग्रेसी मन्त्रीमण्डलों ने त्यागपत्र दे दिए थे।
- अगस्त, 1942 ई. में गाँधीजी ने पूर्ण स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिए 'अङ्ग्रेजों भारत छोडो' आन्दोलन चलाया था। आन्दोलन के प्रारम्भ में ही गाँधीजी को बन्दी बना लिया गया था। जून, 1944 ई. में महात्मा गाँधी को जेल से मुक्त कर दिया गया था।
- भारत छोड़ो आन्दोलन के दौरान गाँधीजी ने करो या मरो का नारा दिया था। भारत छोड़ो आन्दोलन के दौरान पश्चिम में सतारा और पूर्व में मेदिनीपुर में स्वतन्त्र सरकारों की स्थापना हुई थी।
- 15 अगस्त, 1947 ई. को जब दिल्ली में स्वतन्त्रता का पर्व मनाया जा रहा था तब गाँधीजी बङ्गाल में हो रहे साम्प्रदायिक दंगों को रोकने के लिए कलकत्ता में उपवास पर थे।30 जनवरी, 1948 ई. को दैनिक प्रार्थना सभा के दौरान नाथूराम गोडसे नामक एक युवक ने गाँधीजी की इहलीला समाप्त कर दी थी।
- मुस्लिम लीग की स्थापना 1906 ई. में हुई थी। 1930 ई. के मुस्लिम लीग अधिवेशन में मुहम्मद इकबाल ने मुस्लिम बाहुल्य क्षेत्रों के लिए स्वायत्तशासी मुस्लिम राज्य की माँग की थी। पाकिस्तान शब्द का उल्लेख पहली बार रहमत अली ने 1933 और 1935 के अपने दो लेखों में किया था।
- 1937 ई. के प्रान्तीय चुनावों में कांग्रेस की 11 में से 7 राज्यों में सरकार बनी थी। मुस्लिम लीग संयुक्त प्रान्त में कांग्रेस के साथ मिलकर सरकार बनाना चाहती थी परन्तु स्पष्ट बहुमत होने के कारण कांग्रेस ने मुस्लिम लीग की माँग को ठुकरा दिया था।
- 23 मार्च, 1940 ई. को भारत में मुस्लिम बाहुल्य क्षेत्रों के लिए मुस्लिम लीग ने स्वायत्तता का प्रस्ताव देते हुए, मुसलमानों के लिए अलग से पाकिस्तान की माँग की थी।
- आर्य समाज (1875 ई.), 19 वीं सदी के आखिरी दशक और बीसवीं सदी के प्रारम्भ में हिन्दू सुधार आन्दोलन के रूप में पञ्जाब में सक्रिय था।
- पञ्जाब में हिन्दू (सनातन), सिख, मुस्लिम, भू स्वामियों, का हित संरक्षण करने वाली 'यूनियनिस्ट पार्टी' थी। इसकी स्थापना सर छोटूराम और सिकन्दर हयात खान ने की थी। यह पार्टी 1923 ई. से 1947 ई. तक विशेष शक्तिशाली थी।

- हिन्दू महासभा की स्थापना 1915 ई. में विनायक दामोदर सावरकर, पंडित मदनमोहन मालवीय और लाला लाजपतराय ने की थी। विनायक दामोदर सावरकर इसके प्रथम अध्यक्ष थे।
- भारत में राजनीतिक रूपरेखा तैयार करने हेतु ब्रिटिश मंत्रिमण्डल ने मार्च 1946 ई. में तीन सदस्यों वाला एक प्रतिनिधि समूह (कैबिनेट मिशन) दिल्ली भेजा था।
- प्रान्तीय सभा को तीन भागों में विभक्त किया गया था- 1. हिन्दू बहुल प्रान्तों को समूह 'क'। 2. पश्चिमोत्तर मुस्लिम बहुल प्रान्तों को समूह 'ख'। 3. पूर्वोत्तर मुस्लिम बहुल प्रान्तों को समूह 'ग'।
- मुस्लिम लीग ने अलग राष्ट्र निर्माण के लिए 16 अगस्त, 1946 ई. को 'प्रत्यक्ष कार्यवाही दिवस' घोषित किया था। उस दिन कलकत्ता में भड़के दंगे में हजारों लोग मारे गए थे।
- बङ्गाली मुसलमानों ने जिन्ना के द्विराष्ट्र सिद्धान्त को नकारते हुये 1971-72 ई. में अलग राष्ट्र बांग्लादेश की स्थापना की थी।
- संविधान दिसम्बर 1946 से नवम्बर 1949 ई. के मध्य लिखा गया। संविधान निर्माण के लिए संविधान सभा की 11 सत्र तथा 165 दिनों की बैठकें हुई थी।
- 1946 ई. में संविधान के सदस्यों के चयन के लिए भारतीय प्रान्तों में चुनाव सम्पन्न हुए थे। विभाजन के पश्चात संविधान सभा में सदस्यों की संख्या 299 थी।
- प्रशासनिक अधिकारी बी.एन.राव (सरकार के सलाहकार) तथा एस.एन.मुखर्जी भारतीय संविधान के प्रमुख योजनाकार थे। संविधान में देश के भावी स्वरूप, भारतीय भाषाओं, आर्थिक व्यवस्था, नैतिक मूल्य, मूलाधिकार और कर्त्तव्यों आदि का विस्तृत खाका खींचा गया।
- 13 दिसम्बर, 1946 ई. को भारतीय संविधान के उद्देश्य प्रस्ताव में संविधान के मूल आदर्शों की रूपरेखा प्रस्तुत की गई थी, जिसमें भारत को एक स्वतन्त्र, सम्प्रभु गणराज्य घोषित किया गया था।

अध्याय- 10

भारतीय संस्कृति का वैश्विक प्रभाव

- प्राचीन काल में भारतीय संस्कृति ही एकमात्र ऐसी संस्कृति थी, जो विश्व व्यापी रही है। हमारे पूर्वजों का लक्ष्य 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' अर्थात् सम्पूर्ण विश्व को सभ्य व सुसंस्कृत बनाना था।
- बेबीलोन में 1760 ईसापूर्व, कस्सी शासन में सूर्य के लिए शूरियस तथा मरुत के लिए मरुतस् शब्द का प्रचलित था, जो मूलत: वैदिक वाङ्मय के शब्द हैं।
- 1400 ईसा पूर्व के अभिलेख, जो तुर्की में बोगाज कुई से प्राप्त हुआ था में हित्ती और मित्तनी शासकों के बीच संधि हुई थी। इसके साक्षी वरूण, मित्र तथा नासत्य देवता थे, जो वैदिक देवता हैं।
- पुराणों में अमेरिका को पाताल देश कहा गया है। इसका दृष्टान्त हमें पुरातत्त्ववेत्ता हरिभाऊ वाकणकर के एक अमेरीकी यात्रा वृतांत से मिलता है।
- मैक्सिको के युकाटान प्रान्त के जवातुको में स्थित सूर्य मन्दिर के अन्दर स्थित शिलालेख में 'मय भाषा' में लिखा है कि, "मैं महानाविक वसूलीन शक संवत 845 में यहाँ पर आया था और भगवान सूर्य की मैंने पूजा की थी।" यह घटना कोलम्बस के अमेरिका पहुँचने से पहले लगभग 550 वर्ष पूर्व की है।
- आध्यात्मिकता सनातनी जीवन की आधारशिला है। यह भौतिकवाद से परे हटकर मानव का जीवन सादा तथा संयमी बनाती है। इसी ने भारतीय संस्कृति को विश्व में अलौकिक तथा अमर बनाया है।
- श्रीमद्भवद्गीता में तप, आहार, यज्ञ, दान, त्याग, कर्म आदि के त्रिविध भेद बतलाकर यह समझाया है कि किस प्रकार ये कर्म मानव जीवन के परम लक्ष्य (मोक्ष) के साधक हैं।
- शुभाशुभफलैरेवं मोक्ष्यसे कर्म बन्धनैः। सन्यासयोगयुक्तात्मा विभुक्तौ मामुपैष्यसि''॥ (गीता.9.28) इस प्रकार कर्मों को मेरे अर्पण करने पर, सन्यास योग से युक्त हुए मनवाला तू शुभाशुभ फलस्वरूप कर्म बन्धन से मुक्त हो जाएगा, उनसे मुक्त हुआ मेरे को प्राप्त होगा।
- महर्षि पंतजलि कृत योग दर्शन में लिखा है कि 'योगश्चित्तवृतिनिरोधः' चित्त की वृत्तियों का नियन्त्रण ही योग है। अत: यह हमारा कर्तव्य व उत्तरदायित्व है कि हम वैज्ञानिक आधार पर योग की शरण लेकर शरीर एवं मन को पूर्ण रूपेण स्वस्थ रखें।
- आयुर्वेद शब्द दो संस्कृत शब्दों से मिलकर बना है- आयुष और वेद। आयुष का अर्थ जीवन और वेद का अर्थ विज्ञान से हैं। आयुर्वेद को ऋग्वेद का उपवेद माना जाता हैं,जो प्राचीनता का द्योतक है।
- जीवन को ठीक प्रकार से जीने का विज्ञान ही आयुर्वेद है क्योंकि यह विज्ञान केवल रोगों की चिकित्सा या रोगों का ज्ञान ही प्रदान नहीं करता अपितु जीवन जीने के लिए आवश्यक ज्ञान देता है।
- सम्पूर्ण विश्व में प्रतिवर्ष 21 जून को 'अन्ताराष्ट्रीय योग दिवस' मनाया जाता है। यौगिक क्रियाओं द्वारा 'जीवेम शरदः शतम्, पश्येम शरदः शतम्' तथा 'श्रृणुयाम शरद: शतम्' सम्भव है।
- आयुर्वेद के प्रणेता महर्षि चरक हैं। शल्य चिकित्सा विज्ञान के अन्तर्गत शरीर के अंगों की चीड़-फाड़ कर उन्हें ठीक किया जाता है। महर्षि सुश्रत को इसका प्रणेता माना जाता है।

- महर्षि आर्यभट्ट ने गणित के सबसे महत्वपूर्ण अंक शून्य का महत्त्व विश्व को सर्वप्रथम समझाया था। वैदिक वाङ्मय में 10 खरब तक की संख्याओं का उल्लेख आया है।
- यजुर्वेद के इस मन्त्र में संख्या का वर्णन है, 'इमामेऽअग्नऽइणृ घमेव सन्त्वे का चदश चदश चदश चतशतञ्च शतञ्च सहस्रञ्च सहस्रञ्चयुतञ्च नियुतञ्च नियुतञ्च प्रयुतञ्च बंदञ्चभ्य समुद्रञ्च द्यञ्चतश्च परार्द्धश्चेतामेऽअग्नऽइष्टकाधेनत्व सन्त्व मुत्रामुष्कमेंल्लोके।'
- भास्काचार्य की 'लीलावती' में भी उल्लेख है कि 'जब किसी अंक में शून्य से भाग दिया जाता है, तब उसका फलक्रम अनन्त आता है'।
- हमारे यहाँ पर 4 प्रत्यक्ष देव हैं- मातृदेवो भव, पितृदेवो भव, आचार्य देवो भव, अतिथि देवो भव (तैत्तिरीयोपनिषद) अर्थात् माता, पिता, गुरु और अतिथि को देवता माना गया है।
- वेदों को श्रुति साहित्य कहा जाता हैं। वेद किसी व्यक्ति विशेष की कृति नहीं है। वेद अपौरूषेय हैं। वेदों की संख्या चार है।
- ऋग्वेद विश्व साहित्य का सबसे प्राचीनतम ग्रंन्थ है। पतञ्जली ने इसकी 21 शाखाएँ बतलाई गई है। इनमें शाकल, वाष्कल, शाङ्खायन , माण्डूकायन, आश्वालयन प्रमुख हैं।
- ऋग्वेद में 10 मण्डल व 1028 सूक्त हैं। ऐतरेय एवं शाङ्खायन इसके ब्राह्मण ग्रन्थ हैं तथा ऐतरेय, कौषितकि, बाष्कल आदि इसके उपनिषद हैं।
- यजुर्वेद में कर्मकाण्ड, अनुष्ठान आदि का वर्णन है। यजुर्वेद की दो शाखाएँ कृष्ण यजुर्वेद व शुक्ल यजुर्वेद हैं। महर्षि पंतजलि ने 101 शाखाओं का उल्लेख किया है, जिनमें से 5 शाखाएँ- काठक, माध्यन्दिनी, काण्व, तैत्तिरीय, कपिष्ठल वर्तमान में उपलब्ध हैं।
- शतपथ, तैत्तिरीय, मैत्रायणी, कठ, कपिष्ठल आदि इसके ब्राह्मण ग्रन्थ हैं। वृहदारण्यक,तैत्तिरीय, ईशावास्योपनिषद् आदि यजुर्वेद के उपनिषद् हैं।
- सामवेद में गायन सम्बन्धित मन्त्र हैं। वर्तमान में सामवेद की तीन शाखाएँ उपलब्ध है- राणायनीय, कौथुम, जैमिनीय। प्रौढ, वंश, षड्विंश, सामविधान, देवताध्याय, जैमिनीय इसके ब्राह्मण ग्रन्थ हैं।
- अथर्ववेद की दो शाखाएं- पैप्पलाद व शौनक उपलब्ध हैं। गोपथ ब्राह्मण, अथर्ववेद का ब्राह्मण ग्रन्थ है। मुण्डक, माण्डूक्य, प्रश्नोपनिषद इसके उपनिषद हैं।
- सामाजिक, राजनैतिक तथा सांस्कृतिक दृष्टि से उपयोगी विभिन्न संस्थाओं का मूल आविर्भाव भारतीय परम्परा के अनुसार वेदों से ही हुआ है। वर्ण व्यवस्था का मूल पुरूष सूक्त में है।
- तैत्तिरीय संहिता में 300 व्यवसायों का वर्णन है। राष्ट्र रक्षा, उसके विविध उपायों, विभिन्न शासन प्रणालियों, संस्थाओं और सिद्धान्तों का विवरण वेदों में है।
- जर्मन विद्वान मैक्समूलर ने वेदों से प्रभावित होकर कहा कि यावत स्थास्थन्ति गिरय: सरितश्च महीतले। तावद् ऋग्वेदमहिमा लोकेषु प्रचरिष्यति।। अर्थात् जब तक पृथिवी पर पहाड़ व नदियाँ रहेगीं, तब तक विश्व में वेद की महिमा रहेगी।

- विदेशी महिला एनीबेसेन्ट ने भारतीयता ग्रहण करने के बाद कहा था कि 'व्यक्तिगत रूप से मै, उपनिषद को मानव चेतना का सर्वोच्च फल मानती हूँ'।
- विद्वानों ने उपनिषदों की संख्या 108 बतलाई है। ईशावास्य, केनोपनिषद, कठोपनिषद, प्रश्नोपनिषद, मुण्डकोपनिषद, माण्डूक्य उपनिषद, ऐतरेय उपनिषद, छान्दोग्य उपनिषद, बृहदारण्यक उपनिषद एवं श्वेताश्वतर उपनिषद प्रमुख हैं।
- रामायण के रचयिता महर्षि वाल्मीकि है। रामायण में पारिवारिक जीवन के उच्चतम आदर्शों व एक आदर्श राजा, पत्नि, भाई, मित्र के कर्तव्यों का विशद् विवेचन किया गया है।
- रामायण पर आधारित गोस्वामी तुलसीदास कृत 'रामचरितमानस' अवधी भाषा में लिखा हुआ है जो आज हर भारतीय के घर में आसानी से मिल जाता है, जो इसके प्रभाव को जनमानस में स्पष्ट करने के लिए पर्याप्त है। महाभारत को पञ्चम वेद माना जाता है।
- महाभारत (जयसंहिता) को भारतीय ज्ञान का विश्वकोष कहा जाता है, जिसकी रचना महर्षि वेदव्यास ने की थी। विश्व के सबसे बड़े इस महाकाव्य में एक लाख से अधिक श्लोक हैं।
- गाँधीजी जी के दर्शन का मुख्य आधार सत्य और अंहिसा है। गाँधीजी कहते थे कि बुरा मत कहो, बुरा मत सुनो, बुरा मत देखो। वे अन्याय करने वाले से अन्याय सहन करने वाले को बड़ा दोषी मानते थे।
- गाँधीजी मैंनजमेंट गुरु हैं। वे हमेशा आर्थिक मजबूती के पक्षधर रहे हैं। गाँधीजी ने हमेशा पूँजीवादी विचारधारा का विरोध किया था। उनकी अर्थव्यवस्था के केन्द्र बिन्दु गाँव थे।
- 1974 ई.और 1998 ई. के परमाणु परीक्षण, सेटेलाइट प्रक्षेपण और 24 सितम्बर, 2014 ई.में भारत ने अपने प्रथम प्रयास में मङ्गलयान को मङ्गल ग्रह की कक्षा में पहुँचाना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में हमारी बहुत बड़ी उपलब्धियाँ हैं।

अध्याय- 11

द्वितीय विश्व युद्ध के बाद अमेरिका और रूस

- जापान के हिरोशिमा और नागासाकी नगरों पर अगस्त, 1945 ई. में अमेरिका के परमाणु आक्रमण के पश्चात द्वितीय विश्व युद्ध का अन्त हुआ था। इस युद्ध में धुरी राष्ट्रों (जर्मनी, इटली और जापान) की हार हुई और मित्र राष्ट्रों (सोवियत संघ, ब्रिटेन, अमेरिका और फ्रान्स आदि) की विजय हुई थी।
- द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद मित्र-राष्ट्रों में पड़ी फूट के कारण विश्व के राजनीतिक मंच पर सोवियत संघ व अमेरिका का महाशक्तियों के रूप में उदय हुआ। आपसी प्रतिस्पर्धा ने अन्ताराष्ट्रीय राजनीति में 'शीत युद्ध' नाम से नए विचार को जन्म दिया था, जिसे वैचारिक या कागजी युद्ध भी कहा जाता है।
- शीत युद्ध का काल 1947 से 1990 ई. तक माना जाता है। दोनों ही महाशक्तियाँ अप्रत्यक्ष रूप से संघर्ष में शामिल होकर परस्पर वाक् संघर्षों, चालबाजियों, स्वहित चिन्तन के साथ एक- दूसरे को कमजोर बनाने के प्रयत्न में कर रही थीं।
- ग्रीब्स के अनुसार- शीतयुद्ध परमाणु युग में एक ऐसी तनावपूर्ण स्थिति है, जो सशस्त्र सैन्य युद्ध से कुछ अलग हटकर है।
- अपरोध से तात्पर्य रोक और सन्तुलन से है। शीतयुद्ध काल में दोनों महाशक्तियों और सम्बन्धित गुटीय देशों के पास एक-दूसरे के मुकाबले परस्पर नुकसान पहुँचाने की क्षमता थी। इस कारण गहन प्रतिद्वन्दिता के बाद भी शीतयुद्ध रक्तरंजित युद्ध का रूप न ले सका।
- द्वितीय विश्वयुद्ध के अनन्तर दोनों महाशक्तियाँ विश्व के विभिन्न भागों में अपना प्रभाव बढ़ाने लगीं थी। लगभग सम्पूर्ण विश्व दो गुटों में विभाजित हो गया था। पश्चिमी यूरोप के अधिकांश देशों ने अमेरिका और पूर्वी यूरोप के देशों ने सोवियत संघ का पक्ष लिया था।
- अप्रैल, 1948 ई. में अमेरिका सहित पश्चिमी गुट, के 12 देशों ने स्वयं को उत्तर अटलांटिक संधि द्वारा सङ्गठित किया था, जिसे 'नाटो' कहा जाता है। 1955 ई. में सोवियत संघ के नेतृत्त्व वाले पूर्वी गुट ने वार्सा सन्धि के द्वारा स्वयं को सङ्गठित किया था, जिसे वार्सा सन्धि गुट कहा गया था।
- परमाणु परीक्षणों को प्रतिबन्धित करने वाली सीमित परमाणु परीक्षण सन्धि (L.T.B.T.) अमेरिका, ब्रिटेन और सोवियत संघ के हस्ताक्षर के साथ 10 अक्टूबर, 1963 ई. को सम्पन्न हुई थी।
- 1967 ई. से पूर्व परमाणु शक्ति सम्पन्न पाँच देशों-अमेरिका, फ्रांस, ब्रिटेन, सोवियत संघ और चीन को परमाणु हथियार रखने और विस्फोट करने का अधिकारी माना गया था।
- 1 जुलाई, 1968 ई. को वाशिंगटन, लन्दन और मास्को में परमाणु अप्रसार सन्धि (N.P.T.) पर सहमति बनी थी और यह 5 मार्च, 1970 ई. से यह प्रभावी हो गई थी।

- द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद दो बड़े राजनीतिक गुटों में विभाजित विश्व तथा शीतयुद्ध काल में वैश्विक शान्ति के लिए बड़ी चुनौती था। एशिया, अफ्रीका तथा लातिनी अमेरिका के नव स्वतन्त्र देशों को गुटनिरपेक्षता के रूप में तीसरा विकल्प मिला था।
- गुटनिरपेक्ष आन्दोलन की जड़ें युगोस्लाविया के मार्शल टीटो, भारत के जवाहरलाल नेहरू और मिस्त्र के अब्दुल नासिर की मित्रता में निहित थीं। गुटनिरपेक्ष आन्दोलन का प्रथम सम्मेलन 1961 ई. में बेलग्रेड में हुआ था, जिसमें मात्र 25 देश शामिल थे।
- 2016 के वेनेजुएला में सम्पन्न सत्रहवें गुट निरपेक्ष सम्मेलन में 120 सदस्य देश और 17 पर्यवेक्षक देश शामिल हुए थे, जो गुट निरपेक्ष आन्दोलन की अन्ताराष्ट्रीय लोकप्रियता को दर्शाता है।
- 1972 ई. में अंकटाड में संयुक्त राष्ट्र संघ के व्यापार और विकास सम्मेलन में प्रस्तुत रिपोर्ट में प्रावधान किया गया कि, विकासशील देशों को अब अपने प्राकृतिक संसाधनों पर नियन्त्रण प्राप्त होगा।
- शीत युद्ध काल में भारत की भूमिका दो रूपों में रही थी। प्रथम, भारत सजग और सचेत रहकर गुटबन्दी से दूर रहा था। दूसरा, नवोदित राष्ट्रों के भी गुटबन्दी में शामिल होने का पुरजोर विरोध किया था।
- गुटनिरपेक्षता की नीति के अन्तर्गत भारत ने शीतयुद्ध काल में प्रतिद्वन्दिता और गुटबन्दी की जकड़न को ढीला करते हुए, अन्ताराष्ट्रीय राजनीति में सक्रिय भूमिका निभाई।
- गुटनिरपेक्ष नीति के कारण ही भारत अनेक ऐसे निर्णय ले सका, जो उसके हित में रहे और कोई भी महाशक्ति न तो अनुचित दबाव डाल पायी और न ही भारत की अनदेखी कर पाई थी।
- गुट निरपेक्ष नीति के कारण वर्तमान में रूस-यूक्रेन युद्ध के प्रारम्भ में भारतीय छात्रों को यूक्रेन से निकालने में सफल रहा था। गुटनिरपेक्षता अन्ताराष्ट्रीय आन्दोलन और भारत की विदेश नीति का आधार है।
- 1917 ई. की बोल्शेविक क्रान्ति विश्व इतिहास की महत्वपूर्ण घटना है, जिसने रूस में नव राजनीतिक एवं आर्थिक सोवियत व्यवस्था को जन्म दिया था।
- दक्षिण-एशिया के चीन में 1949 ई. में कम्युनिस्ट सरकार बनी थी। 1949 ई. में पूर्वी और पश्चिमी जर्मनी के केन्द्र बर्लिन में शीतयुद्ध का प्रतीक की1961 ई. में 150 किमी. लम्बी दीवार खड़ी की गई थी।
- 1917 ई. के वाल्शेविक क्रान्ति के पश्चात 15 गणराज्यों को, जहाँ 60 से अधिक राष्ट्रीय समुदाय के लोग रहते थे, मिलाकर सोवियत संघ स्थापित हुआ था।
- 1988 ई. में मिखाइल गोर्बाचेव सोवियत संघ के राष्ट्रपति बने थे। उन्होंने पश्चिमी देशों से सम्बन्ध सामान्य करने और देश को लोकतान्त्रिक स्वरूप देने तथा अन्य सुधार करने का निर्णय लिया था।
- 25 दिसम्बर, 1991 ई. को सोवियत संघ का विघटन हुआ और 15 नए देश बन गए थे। उसके तीन बड़े गणराज्य रूस, यूक्रेन और बेलारूस ने सोवियत संघ के समाप्ति की घोषणा कर दी थी।
- 1994 ई. में बुडापेस्ट में हुए एक समझौते के अन्तर्गत परमाणु सम्पन्न देश रूस, अमेरिका, ब्रिटेन ने यूक्रेन को सुरक्षा की गारन्टी देकर उसके परमाणु हथियार नष्ट करवा दिए थे।

- नए रूस में व्यवस्था परिवर्तन एवं कायापलट की दृष्टि से लागू की गई राजनीतिक, आर्थिक तथा लोकतान्त्रिक नीतियों को शॉक थेरेपी कहा गया है।
- वर्चस्व से आशय दूसरों के व्यवहारों को नियन्त्रित करने वाली क्षमताओं से है, जिसके द्वारा हम इच्छानुसार कार्य करा सकने में समर्थ होते हैं। वर्चस्व अमूर्त होता है।
- 1991 ई. में शीतयुद्ध की समाप्ति के पश्चात विश्व की एकमात्र महाशक्ति के रूप में अमेरिका का उदय हुआ। अन्ताराष्ट्रीय राजनीति में अमेरिकी प्रभुत्व या एकल ध्रुवीय विश्व का काल कहा जाता है। अमेरिकी राष्ट्रपति जॉर्ज बुश (सीनियर) ने 1990 के दशक की वैश्विक घटनाओं को 'नई विश्व व्यवस्था' कहा था।
- संयुक्त राष्ट्र संघ की अवेहलना करते हुए 19 मार्च, 2003 को संयुक्त राज्य अमेरिका ने इराक के राष्ट्रपति सद्दाम हुसैन के शासन को समाप्त करने के उद्देश्य से इराक पर आक्रमण किया था। अमेरिका के इस युद्ध को 'ऑपरेशन इराकी फ्रीडम' कहा जाता है।
- सैन्य शक्ति के चार प्रमुख कारक- युद्ध तकनीकी, सेना व शस्त्र, गुप्तचर विभाग और सैन्य नेतृत्व होते हैं। इन सभी क्षेत्रों में अमेरिकी सैन्य शक्ति विश्व की सर्वश्रेष्ठ सैन्य शक्ति है।
- विश्व के 12 शक्तिशाली देशों का अपनी सैन्य क्षमताओं के विकास पर, जितना खर्च होता हैं, उससे कहीं अधिक अमेरिका का रक्षा बजट होता है।
- 1990 ई. में इराक ने कुवैत पर आक्रमण कर अधिकार कर लिया था। इराक को समझाने की राजनैतिक कोशिशें असफल होने के कारण संयुक्त राष्ट्र संघ ने कुवैत की स्वतन्त्रता के लिए इराक पर बल प्रयोग की अनुमति दी थी, जिसे ऑपरेशन डेजर्ट कहा गया था।
- 1998 ई. में नैरोबी और दारे-सलाम में अमेरिकी दूतावास पर बमबारी के जवाब में अमेरिका ने सूडान और अफगानिस्तान में अलकायदा के ठिकानों पर कई मिसाइलें दागी थीं।
- 11 सितम्बर, 2001 ई. को अपने 19 अपहर्ताओं ने अमेरिकी विमानों का अपहरण कर न्यूयॉर्क के वर्ल्ड ट्रेड सेन्टर और अर्लिंगटन के पेंटागन भवन को विमानों की टक्कर से उड़ा दिया था। इसके जवाब में अमेरिका ने आपरेशन एन्ड्यूरिंग फ्रीडम व 2003 ई. में 'आपरेशन इराकी फ्रीडम' चलाया था।

अध्याय- 12

विश्व के प्रमुख सङ्गठन

- ऐसे सङ्गठन जिनका कार्य क्षेत्र तथा सदस्यों की उपस्थिति विश्वस्तरीय मामलों तक विस्तृत हो, अन्ताराष्ट्रीय सङ्गठन कहलाते हैं।
- अन्ताराष्ट्रीय सङ्गठनों की दो श्रेणियाँ होती हैं, 1. शासकीय सङ्गठन 2. अशासकीय सङ्गठन।
- अन्ताराष्ट्रीय जगत में कुछ ऐसे भी क्षेत्रीय सङ्गठन हैं, जिन्होंने अपने-अपने क्षेत्रों में शान्ति, सहकारी व्यवस्था तथा क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है।
- संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थापना 24 अक्टूबर, 1945 ई. को हुई थी। इसके 51 संस्थापक सदस्य देशों में भारत भी एक था। वर्तमान में संयुक्त राष्ट्र संघ में 193 सदस्य हैं।
- संयुक्त राष्ट्र संघ के 6 प्रमुख अङ्ग हैं - महासभा, सुरक्षा परिषद, न्यास परिषद, अन्ताराष्ट्रीय न्यायालय, आर्थिक और सामाजिक परिषद तथा सचिवालय।
- विश्व के 193 देश इस महासभा के सदस्य है। इस सभा में प्रमुख मुद्दों पर निर्णय के लिए दो-तिहाई तथा शेष मुद्दों पर सामान्य बहुमत की आवश्यकता होती है। इसका मुख्यालय न्यूयॉर्क (अमेरिका) में है।
- विश्व के 15 देश सुरक्षा परिषद के सदस्य होते हैं, जिनमें पाँच सदस्य स्थायी होते हैं। शेष 10 देश अस्थायी सदस्य होते हैं, जिनका चुनाव आम सभा द्वारा 2 वर्ष के लिए किया जाता है। चीन, फ्रांस, रूस, ब्रिटेन और अमेरिका इसके स्थायी सदस्य हैं, जिन्हें वीटो का अधिकार प्राप्त है।
- वर्तमान में पुर्तगाल निवासी अन्तोनियो मनुएल दे ओलिवीरा गुटेरेस संयुक्त राष्ट्र संघ के महासचिव हैं। 30 जनवरी, 2020 को WHO ने COVID-19 को वैश्विक महामारी घोषित किया था।
- न्यास परिषद की स्थापना उन राज्यों के पर्यवेक्षण के लिए की गई थी, जहाँ द्वितीय विश्व युद्ध के बाद भी स्वायत्त शासन स्थापित नहीं हो सका था। न्यास परिषद में सुरक्षा परिषद के स्थायी सदस्य शामिल हैं।
- अन्ताराष्ट्रीय न्यायालय की स्थापना 26 जून, 1945 को हुई। इसका मुख्यालय हेग में है, जिसमें कुल 15 न्यायाधीशों का चुनाव 9 वर्ष के लिए होता है।
- आर्थिक-सामाजिक परिषद की स्थापना 1945 ई. में हुई थी। वर्तमान में इसके सदस्य देशों की संख्या 54 है। आर्थिक-सामाजिक परिषद के सदस्यों का कार्यकाल 3 वर्ष का होता है। संयुक्त राष्ट्र संघ का यह अङ्ग सामान्य सभा को अन्ताराष्ट्रीय आर्थिक, सामाजिक एवं विकास कार्यक्रमों में सहायता करता है।
- संयुक्त राष्ट्र संघ के प्रमुख प्रशासनिक अङ्ग सचिवालय का मुख्यालय अमरीका के न्यूयार्क शहर में है। सर्वोच्च अधिकारी महासचिव की नियुक्ति सुरक्षा परिषद की संस्तुति पर 5 वर्ष के लिए की जाती है।
- विश्व बैंक की स्थापना 1944 ई. में की गई थी। विश्व बैंक का मुख्यालय वाशिंगटन डी. सी. में है। वर्तमान में विश्व बैंक के कुल 189 देश सदस्य हैं।

- अन्ताराष्ट्रीय मुद्रा कोष की स्थापना 1944 ई. में हुई थी। इसका मुख्यालय वांशिगटन डी.सी. (संयुक्त राज्य अमेरिका) में है।
- विश्व व्यापार सङ्गठन की स्थापना 1 जनवरी, 1995 ई. को गेट (GATT) नामक संस्था का विलय करके की गई थी। विश्व व्यापार सङ्गठन का मुख्यालय जेनेवा (स्विटजरलैंड) शहर में है।
- विश्व स्वास्थ्य सङ्गठन की स्थापना 7 अप्रैल, 1948 ई. को हुई थी। इसका मुख्यालय भी जेनेवा (स्विटजरलैंड) में है। इसका भारतीय मुख्यालय दिल्ली में स्थित है।
- उत्तरी अटलाण्टिक सन्धि संगठन (North Atlantic Treaty Organization) की स्थापना 4 अप्रैल 1949 ई. में हुई थी। इसका मुख्यालय ब्रसेल्स, बेल्जियम में स्थित है।
- दक्षिण-पूर्व एशियाई सन्धि संगठन का गठन सितंबर 1954 ई. में मनीला में हुई दक्षिण-पूर्व एशिया सामूहिक रक्षा संधि के आधार पर 1955 ई. में हुआ था। इसका मुख्यालय बैंकॉक, थाईलैण्ड में था। जून 1977 में इसे भंग कर दिया गया।
- 1955 ई. में तुर्की, इराक, ब्रिटेन, पाकिस्तान और ईरान द्वारा साझा राजनीतिक, सैन्य और आर्थिक लक्ष्यों को बढ़ावा देने के लिए रक्षात्मक दृष्टि से बगदाद सन्धि की गई थी।
- 1959 ई. में इराक द्वारा सन्धि से बाहर निकल जाने के बाद बगदाद सन्धि का नाम केन्द्रीय सन्धि संगठन (CENTO) कर दिया गया था। इसका मुख्यालय अंकारा, तुर्की में स्थापित किया गया था।
- रोम की संधि के अन्तर्गत 1957 ई. में 6 देशों ने 'यूरोपीय आर्थिक समुदाय' का गठन किया था। 1986 ई. तक 12 देश इस आर्थिक समुदाय के सदस्य बन चुके थे। 1 नवम्बर, 1993 में मास्ट्रिच सन्धि के द्वारा यूरोपीय आर्थिक समुदाय का नाम यूरोपीय संघ कर दिया गया था।
- 8 अगस्त, 1967 ई. को दक्षिण-पूर्व एशिया के पाँच देशों- इन्डोनेशिया, मलेशिया, फिलिपींस, सिंगापुर, थाईलैण्ड ने दक्षिण-पूर्व एशियाई राष्ट्र सङ्गठन (आशियान) की स्थापना की थी। आसियान के विजन दस्तावेज 2020 ई. को अन्ताराष्ट्रीय समुदाय द्वारा एक बहिर्मुखी भूमिका के रूप में प्रमुखता दी गई है।
- साफ्टा सन्धि, 1993 ई. में दक्षिण-एशियाई देशों में मुक्त व्यापार क्षेत्र स्थापित करने के उद्देश्य से की गई थी। भारत, भूटान, श्रीलङ्का, पाकिस्तान, मालदीव, नेपाल, बांग्लादेश, आदि इसके सदस्य देश हैं। इस सन्धि को 2006 ई. में प्रभावी रूप से लागू किया गया था।
- सार्क की स्थापना ढाका (बांग्लादेश) में 8 दिसम्बर, 1985 ई. में भारत, पाकिस्तान, बांग्लादेश, श्रीलंका, नेपाल, भूटान और मालद्वीव ने की थी।
- सार्क का मुख्यालय काठमाण्डू (नेपाल) में स्थित है। सार्क के अब तक 14 सम्मेलन हो चुके हैं। 2007 ई. में अफगानिस्तान को भी इसकी सदस्यता प्रदान की गई थी।
- पेट्रोलियम निर्यातक देशों के सङ्गठन को संक्षेप में ओपेक कहतें हैं, जिसकी स्थापना 1960 ई. में बगदाद (इराक) में की गई थी। इसका मुख्यालय वियना (आस्ट्रिया) में है।

- ओपेक सदस्य देश- सऊदी अरब, अल्जीरिया, ईरान, इराक, कुवैत, अंगोला, संयुक्त अरब अमीरात, नाइजीरिया, लीबिया तथा वेनेजुएला, गबोन, गिनी, कांगो और कतर हैं। 2018 ई. में कतर इस सङ्गठन से बाहर हो गया है।
- ओपेक में 10 प्रमुख गैर तेल निर्यातक देशों के सम्मिलित होने से ओपेक प्लस भी कहा जाता है। ओपेक+ के प्रमुख सदस्य देश- अजरबैजान, बहरीन, ब्रुनेई, कजाकिस्तान, मलेशिया, मैक्सिको, ओमान, रूस, दक्षिण सूडान और सूडान हैं।
- एशियाई वित्तीय सङ्कट के पश्चात वित्त मन्त्रियों, केन्द्रीय बैंक के गवर्नरों के लिए वैश्विक आर्थिक और वित्तीय मुद्दों पर चर्चा करने के लिए 1999 ई. में जी-20 की स्थापना एक मंच के रूप में की गई थी।
- 2007 के वैश्विक आर्थिक और वित्तीय संकट को दृष्टिगत करते हुए जी-20 को राष्ट्राध्यक्षों के स्तर तक विस्तृत किया गया था। "अन्तार्राष्ट्रीय आर्थिक सहयोग के प्रमुख मंच" के रूप में 2009 ई. में जी-20 को नामित किया गया था।
- जी-20 में 19 देश- अर्जेंटीना, ऑस्ट्रेलिया, ब्राजील, कनाडा, चीन, फ्रान्स, जर्मनी, भारत, इण्डोनेशिया, इटली, जापान, कोरिया गणराज्य, मैक्सिको, रूस, सऊदी अरब, दक्षिण अफ्रीका, तुर्किये, यूनाइटेड किंगडम और संयुक्त राज्य अमेरिका और यूरोपीय संघ शामिल हैं।
- 17वाँ जी-20 शिखर सम्मेलन भारत के प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदी जी की अध्यक्षता में इण्डोनेशिया के बाली में जुलाई 2022 ई. में सम्पन्न हुआ था। 30 दिसम्बर 2023 ई. तक भारत इसका अध्यक्ष रहेगा।
- भारत का जी-20 की अध्यक्षता का विषय- "वसुधैव कुटुम्बकम" के प्राचीन संस्कृत पाठ से लिया गया है। अनिवार्यत: यह विषय सभी प्रकार के जीवन मूल्यों के साथ पृथिवी और ब्रह्माण्ड में उनके परस्पर सम्बन्धों की पुष्टि करता है। भारत के लिए जी-20 की अध्यक्षता "अमृतकाल" का प्रारम्भ है।
- जी-20 का प्रतीक चिह्न भारत के राष्ट्रीय ध्वज के जीवन्त रङ्गों- केसरिया, सफेद, हरे और नीले रंग से प्रेरित है। इसमें भारत के राष्ट्रीय पुष्प कमल को पृथ्वी ग्रह के साथ प्रस्तुत किया गया है जो चुनौतियों के बीच विकास को दर्शाता है। इस प्रतीक चिह्न के नीचे देवनागरी लिपि में "भारत" लिखा है।

अध्याय- 13

समकालीन विश्व (सुरक्षा और पर्यावरण)

- वर्तमान में सुरक्षा की अवधारणा का क्षेत्र व्यापक हो गया है। इसके मूल में तीन बिन्दु हैं- 1. आमजन की स्वतन्त्रता और शान्तिपूर्ण जीवन-यापन 2. राष्ट्र में शान्ति स्थापना 3. विश्व में शान्ति स्थापना।
- सुरक्षा को लेकर दोनों दृष्टिकोणों को व्यवहार में लाया जाता है। सुरक्षा की दो प्रचलित- पारम्परिक और अपारम्परिक धारणाएँ है।
- पारम्परिक सुरक्षा की धारणा से आशय राष्ट्र की बाह्य और आन्तरिक सुरक्षा से होता है। सुरक्षा की पारम्परिक बाह्य धारणा से तात्पर्य राष्ट्र की बाह्य सुरक्षा से होता है।
- सुरक्षा की पारम्परिक आन्तरिक धारणा से तात्पर्य देश के आन्तरिक सुरक्षा से होता है, जैसे- गृहयुद्ध, सरकार के प्रति असन्तोष आदि।
- सुरक्षा के पारम्परिक उपायों में निःशस्त्रीकरण, अस्त्र नियन्त्रण, विश्वास बहाली आदि आते हैं। 1972 ई. की जैविक हथियार सन्धि (BWC) तथा 1992 ई. की रासायनिक हथियार सन्धि (CWC) के द्वारा जैविक और रासायनिक हथियारों के निर्माण और रखने पर प्रतिबन्ध लगाया है।
- अस्त्र नियन्त्रण के अन्तर्गत 1972 ई. की एंटी बैलेस्टिक मिसाइल सन्धि (ABM) एवं परमाणु अप्रसार सन्धि (1968 ई.) भी परमाणु हथियारों को सीमित करने में सफल रही है।
- सुरक्षा की अपारम्परिक धारणा को मानवता की रक्षा या विश्व सुरक्षा भी कहा जाता है। मानवता की रक्षा एवं विश्व रक्षा प्रायः एक-दूसरे के पूरक होते हैं।
- भारत ने 1974 ई. और 1998 ई. में परमाणु परीक्षण कर स्वयं को सामरिक दृष्टि से मजबूत बनाया है।
- पर्यावरण के अन्तर्गत जल, वायु, भूमि, मानव तथा वन्य जीवों, वनस्पतियों तथा सम्पदाओं में पाए जाने वाले अन्तर्सम्बन्धों को शामिल किया गया है।
- अमेरिकी राष्ट्रपति एच. एस. ट्रूमैन ने 1945 ई. में कहा था कि "सभी राज्यों का लक्ष्य विकास के साथ पर्यावरण संरक्षण होना चाहिए।"
- 1972 ई. में क्लब ऑफ रोम की पुस्तक 'लिमिट्स टू ग्रोथ' में कहा गया है कि, "विकास के लिए प्राकृतिक संसाधनों मिट्टी, जल, जङ्गल और वनस्पतियों का दोहन यदि इसी प्रकार चलता रहा तो, हमारे संसाधन शीघ्र ही खत्म हो जाएँगे।"
- संयुक्त राष्ट्र संघ की मानव विकास रिपोर्ट 2016 ई. के आँकड़ो के अनुसार दो अरब चालीस करोड़ की आबादी स्वच्छता की सुविधाओं से वंचित है। 63.3 करोड़ लोगों को स्वच्छ जल प्राप्त नहीं हो रहा है।
- मानवता की साझी विरासत कही जाने वाली इन पर्यावरणीय सम्पदाओं की सुरक्षा के लिहाज से 1959 ई. की अंटार्कटिका सन्धि, 1987 ई. का मांट्रियल प्रोटोकाल और 1991 ई. का अन्टार्कटिक प्रोटोकाल महत्वपूर्ण हैं।

- 1980 के दशक में अंटार्कटिका के अन्तरिक्ष में ओजोन परत छिद्र की खोज बड़े पर्यावरण संकट को दर्शाने वाली घटना है।
- अण्टार्कटिका एक महाद्वीपीय क्षेत्र के रूप में 1 करोड़ 40 लाख वर्ग कि.मी. में विस्तृत है। विश्व के कुल निर्जन भाग का 26% भाग यह महाद्वीप है। अण्टार्कटिका का 90% स्थलीय भाग हिमाच्छादित है। विश्व के स्वच्छ जल का 70% भाग इसी महाद्वीप में है।
- 1959 ई. के बाद इस क्षेत्र में वैज्ञानिक अनुसंधान, मत्स्य आखेट, पर्यटन गतिविधियों तक सीमित रहा है। परन्तु इसके कुछ भाग में मानव गतिविधि बढ़ने कारण यह क्षेत्र प्रदुषित हो रहा है।
- विश्व पर्यावरण सुरक्षा और संरक्षा के लिए 5 जून, 1972 को स्वीडन की राजधानी स्टाकहोम में पर्यावरण सम्मेलन आयोजित किया गया था।
- संयुक्त राष्ट्र महासभा ने 5 जून 1972 ई. को विश्व पर्यावरण दिवस मनाने की घोषणा की थी। 1982 ई. संयुक्त राष्ट्र संघ की महासभा ने प्रकृति के लिए विश्व घोषणा पत्र सर्वसम्मति से पारित किया था। पर्यावरण विकास के लिए 1983 ई. में विश्व पर्यावरण (बर्टलैण्ड) आयोग की स्थापना की गई थी। 1992 ई. में संयुक्त राष्ट्रसंघ द्वारा पृथिवी सम्मेलन ब्राजील के रियो डी जेनेरियो में आयोजित किया गया था।
- जनवरी, 1997 ई. मे ग्लोबल एन्वायरमेंट आउटलुक नामक द्विवार्षिक पत्रिका का नैरोबी में विमोचन किया गया था। इसमें विश्व के सात क्षेत्रों में सात प्रकार की पर्यावरण अभिवृत्तियों का उल्लेख है।
- 1 से 11 दिसम्बर, 1997 ई. में जापान के क्योटो में जलवायु परिवर्तन सम्बन्धी विभिन्न देशों का सम्मेलन आयोजित किया गया था।
- भारत ने 2005 ई. की जी-8 की बैठक में स्पष्ट किया कि ग्रीन हाउस गैसों का उत्सर्जन दर विकसित देशों की अपेक्षा विकासशील देशों में न्यूनतम हैं।
- भारत में शताब्दियों से ग्रामीण समुदायों ने साझी सम्पदा पर अपने अधिकार और दायित्व सुनिश्चित किये हैं। राजकीय अधिकार वाले भू-वन्य क्षेत्रों का संरक्षण ग्रामीण समुदायों द्वारा किया जाता है। इन क्षेत्रों को देवस्थान के रूप में पहचाना जाता है।

अध्याय-14

स्वतन्त्र भारत की चुनौतियाँ

- राष्ट्र उन व्यक्तियों का समूह है, जो एक जाति, भाषा से सम्बन्धित होते हैं। राष्ट्रीय एकीकरण, देश की एकता व अखण्डता को बनाए रखने तथा एक सशक्त और समृद्ध राष्ट्र के निर्माण हेतु नागरिकों द्वारा महसूस की गई एकजुटता है।
- राष्ट्र निर्माण के चार प्रमुख तत्व- राष्ट्रीय भावना, उचित जनहित सत्ता, राष्ट्रीय समुदाय का स्वतन्त्र अस्तित्व और विविधता में एकता की स्थापना है।
- ब्रिटिश संसद द्वारा पारित 'भारतीय स्वतन्त्रता अधिनियम' द्वारा लॉर्ड माउण्टबेटन ने 3 जून, 1947 को भारत विभाजन की घोषणा कर दी थी।
- 14 अगस्त, 1947 के संध्या के क्षणों में पाकिस्तान के रूप में नए राष्ट्र की घोषणा के साथ ही रात्रि 12 बजे भारत की स्वतन्त्रता की घोषणा की गई थी। 15 अगस्त 1947 ई. को भारत स्वतन्त्र हुआ था।
- भारत विभाजन के बीज मुस्लिम लीग के 'द्वि-राष्ट्र सिद्धान्त' की साम्प्रदायिक नीति में निहित थे। मुस्लिम लीग के नेता मोहम्मद अली जिन्ना तत्कालीन भारत में रह रहे हिन्दू और मुस्लिमों को दो विपरीत संस्कृति और सभ्यता वाले समुदायों के रूप में देखते थे।
- प्रधानमंत्री नेहरू ने अपना प्रथम राष्ट्र सम्बोधन दिया, जो 'ट्रिस्ट विद् डेस्टिनी' (भाग्यवधू से चिर-परिचित भेंट) नाम से प्रसिद्ध है।
- विभाजन में लगभग 80 लाख लोग विस्थापित व लगभग 10 लाख लोग हिंसा में मारे गए थे। एक बड़ी मुस्लिम आबादी पाकिस्तान चली गई, फिर भी भारत में 12% मुस्लिम आबादी शेष थी।
- स्वतन्त्र भारत में 565 देशी रियासतें एवं रजवाड़े थे। 15 अगस्त, 1947 के बाद ये रजवाड़े भारत या पाकिस्तान में शामिल होने या अपनी आजादी की घोषणा के लिए स्वतन्त्र थे।
- विलय की समस्या के समाधान के लिए सरदार बल्लभ भाई पटेल की अध्यक्षता में राज्य-विभाग की स्थापना की गई थी । राज्य विभाग ने रजवाड़ों के विलय के लिए विलय पत्र बनाया था।
- 15 अगस्त, 1947 ई. से पूर्व ही जम्मू-कश्मीर, जूनागढ़ और हैदराबाद को छोड़कर, सभी रियासतों ने विलय-पत्र पर हस्ताक्षर कर दिए थे।
- मणिपुर में वयस्क मताधिकार के सिद्धान्त पर भारत में पहली बार 1948 ई. में चुनाव हुआ था।
- 1947 ई. में जूनागढ़ तथा 1948 ई. में हैदराबाद रियासत का भारत में विलय हो गया था। वल्लभ भाई पटेल और उनके सचिव वी. पी. मेनन की चतुराई के कारण अखण्ड भारत साकार बना था।
- भारत में स्थित फ्रांसीसी उपनिवेशों- 1950 ई. चन्द्रनगर पर, 1953 ई. में दादर और नगर हवेली पर, 1954 ई. में पांडिचेरी, यनौन, माहे तथा कारीकाल को भारतीय संघ में शामिल कर लिया गया था।
- 18 दिसम्बर, 1961ई. को पुर्तगाल से गोवा, दमन और दीव को भारतीय सेना ने मुक्त करा लिया था।

- आजादी के बाद केन्द्र सरकार ने 1952 ई. में भाषाई आधार पर सर्वप्रथम आन्ध्रप्रदेश राज्य का गठन किया था। 1953 ई. फजल अली की अध्यक्षता में राज्य पुनर्गठन आयोग बनाया गया था।
- राज्य पुनर्गठन आयोग की रिपोर्ट के आधार पर 1956 ई. में राज्य पुनर्गठन अधिनियम पास हुआ और 14 राज्य तथा 6 केन्द्र शासित बनाये गए थे।
- महात्मा गाँधी ने भाषाई राज्य बनाने के बारे में कहा था कि" यदि प्रान्तों का गठन भाषावार हुआ तो क्षेत्रीय भाषाओं का जोर बढ़ेगा। हिन्दुस्तानी को सभी प्रान्तों में शिक्षा का माध्यम बनाने का कोई अर्थ न रह जाएगा और अङ्ग्रेजी को इस उद्देश्य के लिए इस्तेमाल करना तो और व्यर्थ"।
- भारतीय संविधान को 26 नवम्बर, 1949 को अंगीकृत कर, इसके कुछ प्रावधानों को तत्काल लागू कर दिया गया था। 24 जनवरी, 1950 को संविधान पर हस्ताक्षर हुए तथा 26 जनवरी 1950 को संविधान को पूर्ण रूप से लागू कर भारतीय गणतन्त्र की घोषणा कर दी गई।
- जनवरी, 1950 ई. में निर्वाचन आयोग का गठन हुआ था। विशाल देश भारत में निष्पक्ष चुनाव कराना एक बड़ी चुनौती थी। सार्वभौम वयस्क मताधिकार भारत में सर्वप्रथम लागू किया गया था।
- 1952 ई. के संसदीय चुनाव में लोकसभा की कुल 489 सीटें थी, जिनमें 364 सीटों पर कांग्रेस, 16 सीटों पर कम्युनिस्ट पार्टी तथा 3 सीटों पर भारतीय जनसंघ पार्टी ने जीत हासिल की थी।
- 1957 ई. के दूसरे आम चुनाव में लोकसभा की कुल 494 सीटों में से कांग्रेस को 371, कम्युनिस्ट पार्टी को 27 तथा भारतीय जनसंघ को 4 सीटों पर जीत हासिल हुई थी।
- 1962 ई. के तीसरे आम चुनाव में भी 494 सीटों पर हुए मतदान में 361 सीटें कांग्रेस, 29 सीटें कम्युनिस्ट पार्टी तथा 14 सीटों पर भारतीय जनसंघ को जीत प्राप्त हुई थी।
- 28 दिसम्बर 1885 ई. को भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना मुम्बई के गोकुलदास तेजपाल संस्कृत महाविद्यालय में हुई थी। इसके संस्थापक महासचिव ए.ओ.ह्यूम एवं अध्यक्ष व्योमेश चन्द्र बनर्जी थे।
- भारतीय जनसंघ की स्थापना 1951 ई. में हुई थी। संस्थापक अध्यक्ष डाक्टर श्यामा प्रसाद मुखर्जी थे।
- कांग्रेस में वैचारिक विभेद वाले अनेक गुट थे, जैसे - नरम दल व गरम दल, परन्तु अपनी सहनशीलता और विभिन्न गुटों के मध्य तालमेल बैठाने के विशिष्ट गुण ने कांग्रेस को अद्भुत शक्ति प्रदान की थी। इसी कारण चुनावी प्रतिस्पर्धा के प्रथम दशक में कांग्रेस ने सत्ता और विपक्ष दोनों की भूमिका निभाई थी। भारतीय राजनीति के इस कालखण्ड को कांग्रेस प्रणाली कहा गया है।
- 1967 ई. में पश्चिम बङ्गाल के दार्जिलिङ्ग जिले के नक्सलवाड़ी क्षेत्र में एक किसान विद्रोह हुआ था, जिसका नेतृत्त्व मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी के स्थानीय नेता कर रहे थे। धीरे-धीरे यह किसान आन्दोलन भारत के कई राज्यों में फैल गया था। इसे नक्सलवादी विद्रोह कहा जाता है।
- नक्सली विद्रोह का नेतृत्त्व प्रारम्भ में चारू मजूमदार ने किया था। वर्तमान में भारत के 9 राज्यों के लगभग 75 जिले नक्सलवाद से प्रभावित हैं।

- इन्दिरा गाँधी 1966 से 1977 ई. तथा 1980 से 1984 ई. तक भारत की प्रधानमंत्री रही थीं। कांग्रेस प्रणाली की पुनर्स्थापना, भूमि सुधार, प्रिवीपर्स की समाप्ति, बैंकों का राष्ट्रीयकरण, पर्यावरण संरक्षण, 1971 के युद्ध में विजय जैसे प्रमुख कार्यों का श्रेय आपको है।
- 1974 ई. में गुजरात, बिहार में महँगाई, बेरोजगारी और भ्रष्टाचार के विरुद्ध आन्दोलित छात्रों को राजनीतिक दलों का समर्थन प्राप्त हो गया था।
- जून 1975 में गुजरात में हुए उपचुनाव में कांग्रेस हार गई थी। आन्दोलित छात्रों के आग्रह पर जयप्रकाश नारायण ने एक अहिंसक और राष्ट्रव्यापी आन्दोलन खड़ा किया और सम्पूर्ण क्रान्ति का नारा दिया था।
- 1974 ई. की रेल हड़ताल का नेतृत्व जार्ज फर्नांडीज कर रहे थे। 1975 ई. में जे.पी. ने जनता के संसद मार्च का नेतृत्व किया था।
- 1971 ई. में इन्दिरा गाँधी के विरुद्ध प्रत्याशी रहे राजनारायण ने उच्च न्यायालय, इलाहाबाद में इन्दिरा गाँधी द्वारा चुनाव में सरकारी मशीनरी के दुरुपयोग के विरुद्ध याचिका दायर की थी।
- 12 जून, 1975 ई.को उच्च न्यायालय ने इन्दिरा गाँधी के निर्वाचन को अवैध बताया और अगले छः माह तक दोबारा उनके निर्वाचन पर रोक लगा दी।
- 25 जून, 1975 ई. को विशाल जनसमूह ने दिल्ली के रामलीला मैदान में सरकार के विरुद्ध प्रदर्शन करते हुए प्रधानमन्त्री से इस्तीफे की माँग की थी।
- राष्ट्रपति फखरुद्दीन अली अहमद ने 26 जून 1975 ई. को आपातकाल घोषित कर दिया था। आपातकाल की घोषणा के साथ आन्दोलन का दमन किया गया था।
- मई, 1977 ई. में तत्कालीन जनता पार्टी सरकार ने सर्वोच्च न्यायालय के पूर्व मुख्य न्यायाधीश जे.सी.शाह के नेतृत्व में आपातकाल के समय हुई ज्यादतियों की जाँच हेतु आयोग गठित किया था।
- आपातकाल के बाद मोरारजी देसाई प्रधानमंत्री बने थे। जुलाई, 1979 ई. में चौधरी चरण सिंह देश के प्रधानमंत्री बने लेकिन यह अल्पमत की सरकार भी ज्यादा दिन टिक नहीं पाई थी।
- 1880 ई. में हुए मध्यावधि चुनाव में कांग्रेस पार्टी को बहुमत मिला, और फिर इन्दिरा गाँधी प्रधानमंत्री बनी थीं। 31 अक्टूबर, 1984 ई. को इन्दिरा गाँधी के अङ्गरक्षकों ने गोली मार कर हत्या कर दी थी।
- 1977 ई. के बाद पिछड़ा वर्ग का मुद्दा भारतीय राजनीति को प्रभावित करने लगा था। 1977 ई. में लोकसभा के साथ कुछ राज्यों में विधानसभा चुनावों में भी गैर कांग्रेसी सरकारें बनी थीं।
- 1979 ई. में बी.पी. मण्डल की अध्यक्षता में 'मण्डल आयोग' का गठन किया था। भारतीय जनता पार्टी की स्थापना 1980 ई. में अटलबिहारी वाजपेयी की अध्यक्षता में हुई थी।
- दिसम्बर, 1984 के आठवें आम चुनाव में कांग्रेस ने अप्रत्याशित जीत के साथ लोकसभा की 415 सीटें प्राप्त की थी और राजीव गाँधी प्रधानमन्त्री (1984-89 ई.) बने थे।
- 1989 ई. के आम चुनाव में कांग्रेस की भारी पराजय के साथ केन्द्र की राजनीति में क्षेत्रीय दलों का दबदबा बढा था। पहली बार 'राष्ट्रीय मोर्चा' नाम से केन्द्र में विश्वनाथ प्रताप सिंह (1989-1990) के नेतृत्व में भाजपा और वाम मोर्चा के समर्थन से पहली गठबंधन सरकार बनी थी।

- 'राष्ट्रीय मोर्चा' सरकार द्वारा मण्डल आयोग की सिफारिशों के अन्तर्गत अन्य पिछड़ा वर्ग के लिए 27% आरक्षण लागू किया गया था।
- 1985 ई. में तलाकशुदा महिला शाहबानो द्वारा अपने पूर्व पति से गुजारा-भत्ते के लिए न्यायालय में याचिका दायर की गई थी। सर्वोच्च न्यायालय ने शाहबानो के पक्ष में निर्णय दिया था।
- केन्द्र सरकार ने मुस्लिम महिला अधिनियम- 1986 को संसद से पास कर कानून बनाया और सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय को रद्द कर दिया था।
- 1991 ई. में पुनः मध्यावधि चुनाव हुए, इस काल की एक बड़ी घटना चुनाव प्रचार के लिए तमिलनाडु गए राजीव गाँधी की लिट्टे समूह द्वारा जघन्य हत्या रही थी।
- 'बहुजन समाज पार्टी' (1984 ई.) का गठन कांशीराम की अगुवाई में हुआ था। 1989 ई. और 1991 ई. के चुनावों में उत्तर प्रदेश में बसपा को भारी सफलता मिली थी।
- 1989 ई. के चुनावों से भारतीय राजनीति में गठबन्धन सरकारों का लम्बा दौर चला और केन्द्र में 11 गठबन्धन सरकारें बनी थीं।
- 6 दिसम्बर, 1992 ई. में अयोध्या पहुँचे रामभक्तों ने विवादित ढाँचे को ढहा दिया था। घटना की जाँच के लिए केन्द्र सरकार ने लिब्राहन आयोग (1992 ई.) का गठन किया था।
- 30 सितम्बर 2010 ई. को इलाहाबाद हाईकोर्ट ने अपने निर्णय में राम मन्दिर के दावे को सही ठहराया था। 9 मई, 2011 को सुप्रीम कोर्ट ने इस आदेश पर रोक लगाते हुए यथास्थिति का आदेश दिया था।
- 9 नवम्बर 2019 को सुप्रीम कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश रंजन गोगोई की अध्यक्षता वाली पाँच जजों की बेंच ने विवादित स्थल को राम जन्मभूमि माना है।

अध्याय-15

स्वतन्त्र भारत में जनान्दोलन एवं क्षेत्रीय आकाङ्क्षाएँ

- चिपको आन्दोलन 1972 ई. में उत्तर प्रदेश के पर्वतीय क्षेत्रों में जङ्गलों की अवैध और अबाध कटाई को रोकने हेतु यह प्रारम्भ हुआ था। वृक्षों की कटाई के विरोध में लोग वृक्षों से चिपक जाते थे।
- 1974 ई. में चमोली की गोपेश्वर निवासी 23 वर्षीय विधवा गौरा देवी को लोगों को सङ्गठित कर, इस आन्दोलन को आरम्भ करने का श्रेय है।
- चिपको आन्दोलन को चरमोत्कर्ष तक पहुँचाने में प्रसिद्ध पर्यावरणविद् सुन्दरलाल बहुगुणा और चण्डी प्रसाद भट्ट ने अहम भूमिका निभाई थी।
- 1977 ई. में वनों को संरक्षित करने के लिए नारा दिया गया- 'क्या है जङ्गल के उपकार मिट्टी, पानी और बयार, जिन्दा रहने के आधार'।
- 1950-60 के दशक में पश्चिम बङ्गाल और आन्ध्रप्रदेश में किसान, साम्यवादी दलों के नेतृत्व में सङ्गठित हुए तथा भारत के विभिन्न प्रान्तों में कम्युनिस्ट कार्यकर्ताओं के नेतृत्व में विरोध प्रदर्शन जारी रखा है।
- 1970 से 80 के दशक में लोगों का राजनीति और राजनीतिक दलों से मोहभंग हो गया था फलस्वरूप अनेक गैर राजनीतिक समूह उभरे। इनकी प्रकृति सामाजिक सेवा कार्यों के सङ्गठित स्वरूप वाली थी, इस कारण इन्हें स्वयंसेवी सङ्गठन कहा गया है।
- 1972 ई. में दलित पैन्थर्स नामक एक सङ्गठन बना, जिसका उद्देश्य दलित वर्ग में चेतना जगाकर उनके विरुद्ध हो रहे अन्यायों का विरोध करना तथा उन्हें उनके अधिकार दिलाना था।
- 1978 ई. में भारतीय किसान यूनियन (बी.के.यू.) गठित हुआ था। 1980 के दशक में उभरे किसान आन्दोलन में सरकार की कृषि नीतियों का विरोध किया गया था।
- पहला बड़ा किसान आन्दोलन 1988 ई. में उत्तर प्रदेश के मेरठ जिला मुख्यालय के सामने हुआ था। इस आन्दोलन के प्रभाव से सरकार ने किसानों की माँगे मान ली थीं।
- उदारीकरण के दौर में मछुआरों ने स्थानीय 'नेशनल फिशवर्कर्स फोरम' नामक राष्ट्रीय मंच बनाया था। इस फोरम को केन्द्र सरकार से कानूनी लड़ाई में 1997 ई. में सफलता मिली थी। 2002 ई. में विदेशी कम्पनियों को मत्स्य आखेट के लिए लाइसेंस देने के विरोध में इस सङ्गठन ने राष्ट्रव्यापी हड़ताल की थी।
- 1992 ई. में आन्ध्रप्रदेश के नेल्लोर जिले के दुबरगंटा गाँव में यह आन्दोलन प्रारम्भ हुआ था। इस आन्दोलन में महिलाओं ने बहुत अधिक संख्या में भाग लिया था।
- भारत सरकार द्वारा महिलाओं की स्थिति में सुधार के लिए 74वें संविधान संशोधन में महिला आरक्षण का प्रावधान किया गया था।
- महिलाओं के साथ घरेलु हिंसा की रोकथाम के लिए घरेलु हिंसा से महिला संरक्षण अधिनियम-2005 को 26 अक्टूबर, 2006 ई. में लागू किया था।

- गुजरात के नर्मदा जिले में सरदार सरोवर बाँध का निर्माण गुजरात, मध्यप्रदेश, राजस्थान और महाराष्ट्र को पेयजल, सिंचाई, जलविद्युत आदि उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए किया गया था।
- सरदार सरोवर बाँध बाँध के विस्तार के कारण 250 गाँव इसके डूब क्षेत्र में आ रहे थे, इसलिए 1988-89 ई. में इन गाँवों के लोगों के पुनर्वास को लेकर एक बड़ा आन्दोलन हुआ था, जिसे 'नर्मदा बचाओ आन्दोलन' कहा जाता है।
- 1980 के दशक में क्षेत्रीय स्वायत्तता की माँगें देश के कोने-कोने से उठने लगी थी। असम, पञ्जाब, मिजोरम, नागालैण्ड, जम्मू-कश्मीर में क्षेत्रीय आन्दोलन उभरने लगे थे।
- केन्द्र सरकार द्वारा 5 अगस्त, 2019 ई. को राज्यसभा व 6 अगस्त, 2019 ई. को लोकसभा में इस पुनर्गठन विधेयक को पारित किया था।
- 9 अगस्त 2019 ई. को राष्ट्रपति की स्वीकृति के पश्चात धारा 370 और 35A को समाप्त कर, जम्मू-कश्मीर और लद्दाख नाम से दो केन्द्र शासित प्रान्तों का गठन किया था।
- 1966 ई. में भाषायी आधार पर हिमाचल, हरियाणा और पञ्जाब प्रान्तों का गठन हुआ था । 1967 ई. और 1977 ई. में पञ्जाब प्रान्त में अकाली दल ने गठबन्धन सरकार बनाई थी।
- अमृतसर का स्वर्ण मन्दिर खालिस्तानी उग्रवाद का केन्द्र बन गया था। इसे चरमपन्थियों से मुक्त कराने के लिए जून, 1984 ई. में भारत सरकार द्वारा ऑपरेशन 'ब्लूस्टार' चलाया गया था। 31 अक्टूबर, 1984 ई. को प्रधानमन्त्री इन्दिरा गाँधी की हत्या कर दी गई थी।
- पूर्वोत्तर भारत के 7 राज्यों असम, नागालैण्ड, मिजोरम, मेघालय, मणिपुर, त्रिपुरा और अरुणाचल प्रदेश को सेवन सिस्टर्स कहा जाता है।
- 1959 ई. में असम प्रान्त के मिजो क्षेत्र में पड़े अकाल के समय सरकारी कुप्रबन्धन के चलते वहाँ अलगाववादी आन्दोलन उठ खड़ा हुआ था।
- लालडेंगा के नेतृत्व में मिजो नेशनल फ्रन्ट बना जिसने 1966 ई. में आजादी के लिए सशस्त्र आन्दोलन प्रारम्भ कर दिया था। पाक समर्थित मिजो फ्रन्ट ने पूर्वी पाकिस्तान में अपने सैन्य अड्डे बनाए थे।
- 1986 ई. में मिजोरम को पूर्ण राज्य का दर्जा दिया और लालडेंगा पहले मुख्यमन्त्री बने थे। आज मिजोरम सर्वाधिक शान्त क्षेत्र है, साथ कला, साहित्य और विकास क्षेत्र में बड़ी प्रगति कर रहा है।
- 1951 ई. में नागालैण्ड में अलगाववादियों के एक समूह ने अङ्गमी जापू फिजो के नेतृत्व में स्वयं को भारत से स्वतन्त्र घोषित कर दिया था। हिंसक विद्रोह के बाद नागा लोगों के एक पक्ष ने सरकार के साथ समझौते पर हस्ताक्षर किया परन्तु दूसरे पक्ष ने इसे मानने से इन्कार कर दिया था। अभी भी नागालैण्ड की समस्या का समाधान शेष है।
- 1967 ई. में प्लेन ट्राइब्स काउंसिल ऑफ असम (PTCA) की स्थापना के समय बोरो और अन्य मैदानी जनजातियों के लिए एक अलग केंद्र शासित प्रदेश 'उदयचल' की माँग उठी थी। ऑल बोडो स्टूडेंट्स यूनियन ने 1987 ई. में एक अलग राज्य बोडोलैंड के लिए बोडो आन्दोलन प्रारम्भ किया था।

- 1993 ई. के बोडो समझौते के साथ यह आन्दोलन समाप्त हो गया था। इस समझौते के अन्तर्गत बोडोलैंड स्वायत्त परिषद् का गठन किया गया था।
- बोडोलैंड प्रादेशिक क्षेत्र (BTR) अनौपचारिक रूप से ब्रह्मपुत्र नदी के उत्तरी तट पर पाँच जिलों से मिलकर बना है।
- फरवरी 2003 ई. में हस्ताक्षरित एक शांति समझौते की शर्तों के अन्तर्गत यह अस्तित्व में आया था। जनवरी 2020 में हस्ताक्षरित एक समझौते द्वारा इसकी स्वायत्तता को और बढ़ा दिया गया है। वर्तमान में रॉबिन शर्मा बोडोलैंड के अध्यक्ष हैं।
- असम में 1979 ई. से 1985 ई. तक का 'असम आन्दोलन' अप्रवासियों के विरुद्ध स्थानीय समुदायों द्वारा चलाया गया था। इनकी माँग थी कि 1951 ई. के बाद राज्य में आये अप्रवासियों को असम से बाहर निकाला जाए।
- 1985 ई. में भारत सरकार और ऑल असम स्टूडेंट्स यूनियन (आसू) के नेताओं के मध्य हुए समझौते में उनकी माँगें मान ली गई थीं। आसू ने स्वयं को असम गण परिषद् नामक राजनीतिक दल के रूप में सङ्गठित कर 1985 ई. में सरकार बनाई थी।
- स्वतन्त्रता काल से ही सिक्किम भारत द्वारा नियन्त्रित और संरक्षित था। राजा चोग्याल यहाँ के सम्राट थे। 1974 ई. में विधानसभा के प्रथम लोकतान्त्रिक चुनाव में सिक्किम कांग्रेस को भारी विजय मिली थी। सिक्किम कांग्रेस के सहयोग से अप्रैल, 1975 ई. में सिक्किम को भारत का 22 वां राज्य बनाया गया था।

अध्याय-16

भारत में नियोजित विकास एवं विदेश नीति

- स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात, योजना आयोग ने देश के विकास के लिए पञ्चवर्षीय योजानाएँ बनाई थीं। भारत में प्रथम पञ्चवर्षीय योजना के प्रमुख योजनाकार के. एन. राज थे।
- भारत के ओडिशा राज्य में लौह अयस्क के विशाल भण्डार हैं। जब विश्व में इस्पात की माँग बढ़ी तो निवेश की दृष्टि से ओडिशा राज्य प्रमुख क्षेत्र के रूप में उभरा था।
- वामपंथ ऐसे लोगों की ओर संकेत करता है, जो आर्थिक रूप से निर्धन और सामाजिक रूप से पिछड़े लोगों को लाभ पहुँचाने वाली सरकारी नीतियों, योजनाओं तथा कार्यों का समर्थन करते हैं।
- दक्षिणपंथ उन लोगों की ओर संकेत करते हैं, जो खुली प्रतिस्पर्धा और बाजार मूलक अर्थव्यवस्था के द्वारा प्रशस्ति पर बदल देते हैं तथा कम से कम सरकारी हस्तक्षेप चाहते हैं।
- भारत ने विकास के लिए मिश्रित अर्थव्यवस्था के आदर्श को चुना है। मिश्रित अर्थव्यवस्था में समाजवादी और पूँजीवादी दोनों के लक्षण निहित हैं।
- अर्थव्यवस्था के पुनर्निर्माण के लिए 1940-50 के दशक में नियोजन के विचार को वैश्विक जनसमर्थन प्राप्त हुआ था।
- 1930 की विश्वव्यापी मन्दी के शिकार यूरोपीय देश, 1930-40 के दशक में सोवियत संघ तथा युद्ध की विभीषिका झेल चुके जर्मनी और जापान ने नियोजन के बल पर शीघ्र ही आर्थिक प्रगति कर ली थी।
- 1938 में ही पं. जवाहरलाल नेहरू की अध्यक्षता में राष्ट्रीय नियोजन समिति का गठन किया गया था। 1944 ई. में जी.डी.बिड़ला समेत आठ उद्योगपतियों ने बम्बई प्लान बनाया था।
- स्वतन्त्रता के पश्चात 1950 ई. में प्रधानमन्त्री की अध्यक्षता में योजना आयोग की स्थापना की गई थी।
- 1 जनवरी 2015 ई. को योजना आयोग की जगह नीति आयोग (राष्ट्रीय भारत परिवर्तन संस्था) की स्थापना भारत सरकार द्वारा की गई है।
- 1951 ई. से 2017 ई. तक भारत सरकार द्वारा कुल 12 पञ्चवर्षीय योजनाएँ तथा 3 वार्षिक योजनाएँ (1966 ई. से 1969 ई.तक) संचालित हुई हैं।
- द्वितीय पञ्चवर्षीय योजना के योजनाकार पी.सी.महालनोबिस थे। ये महान वैज्ञानिक और सांख्यिकीविद् थे, जिन्होंने भारतीय सांख्यिकी संस्थान (1931 ई.) की स्थापना की थी।
- भारत में 1960 के दशक में निरन्तर अवर्षण के कारण सूखा पड़ जाने से अन्नोत्पादन में भारी गिरावट आई थी। अत: कृषि में भारी गिरावट आने के कारण देश में खाद्य संकट पैदा हो गया था।
- इन्दिरा गाँधी युग में 1969 ई. में चौदह एवं 1980 ई. में छः बैंकों का राष्ट्रीयकरण किया गया था।
- हरित क्रान्ति के अन्तर्गत 1967-68 ई. में खाद्यान्न उत्पादन में भारत की आत्मनिर्भरता बढ़ी थी। भारत में हरित क्रान्ति का श्रेय सी. सुब्रमण्यम को दिया जाता है।

- 1970 ई. में श्वेत क्रान्ति (ऑपरेशन फ्लड) के द्वारा सहकारी दुग्ध उत्पादन का आन्दोलन गुजरात के आणंद नगर से प्रारम्भ हुआ था। श्वेत क्रान्ति का श्रेय वर्गीज कुरियन को जाता है।
- भारत ने गुट निरपेक्षता की नीति को आदर्श मानकर, विश्व में सन्तुलन बनाने का प्रयास किया था। जैसे- 1956 ई. के स्वेज नहर के विवाद के समय भारत ने मिश्र का पक्ष लिया था।
- मार्च, 1947 ई. में नेहरू के नेतृत्त्व में एशियन रिलेशन्स कान्फ्रेन्स आयोजन हुआ था। भारत ने अफ्रीका की रङ्ग-भेद नीति और नस्लवाद का सदैव विश्व मंच पर विरोध किया था।
- 1946 ई. से 1964 ई. तक भारत की विदेश नीति के निर्माता पण्डित जवाहर लाल नेहरू ने सम्पभुता की रक्षा, क्षेत्रीय अखण्डता को बनाए रखना और तीव्र आर्थिक विकास मुख्य उद्देश्य बताए थे।
- भारत का परमाणु कार्यक्रम 1940 के दशक में डॉ. होमी जहाँगीर भाभा के निर्देशन में प्रारम्भ हुआ था। 1974 ई. के परमाणु परीक्षण के समय भारत की प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गाँधी थी। इस परीक्षण का संकेत मुस्कराते बुद्ध था।
- परमाणु शक्ति सम्पन्न देश जो सुरक्षा परिषद के स्थायी सदस्य भी थे, 1968 ई. की परमाणु अप्रसार सन्धि को विश्व के अन्य राष्ट्रों पर थोपना चाहते थे। भारत ने इस सन्धि का कड़ा विरोध किया था।
- 1995 ई. में जब परमाणु अप्रसार सन्धि को अनिश्चित काल के लिए बढ़ाया गया तो भारत ने इसका विरोध किया और व्यापक परमाणु परीक्षण सन्धि (CTBT) पर हस्ताक्षर करने से मना कर दिया था।
- 1998 ई. में ऑपरेशन शक्ति के अन्तर्गत भारत ने 5 परमाणु परीक्षण किए थे। इस समय भारत के प्रधानमन्त्री श्री अटलबिहारी वाजपेयी थे। इन परमाणु परीक्षणों के नेतृत्त्वकर्ता डॉ. ए.पी.जे अब्दुल कलाम और डॉ. आर. चिदम्बरम थे।
- उदारीकरण और 1991 ई. की नई आर्थिक नीति ने हमारी विदेश नीति को प्रभावित किया है। अब हमारे रणनीतिकारों ने चीन और अमेरिका के साथ बेहतर सम्बन्धों पर बल दिया था।

अध्याय- 17

भारतीय समाज एवं सामाजिक संस्थाएँ

- समाजशास्त्र से तात्पर्य समाज की शास्त्रीय ढंग से विवेचना करना है। समाजशास्त्र विषय के अन्तर्गत समाज के अध्ययन का आशय है कि समाज का क्रमबद्ध एवं वैज्ञानिक रीति से अध्ययन करना।
- समाजीकरण की प्रक्रिया द्वारा समाज का जो मानचित्र प्राप्त होता है अथवा समाज के प्रति जो समझ विकसित होती है, वह हमारा समाज बोध है।
- समाजशास्त्र के अन्तर्गत व्यक्ति किसी भी आर्थिक, व्यावसायिक, धार्मिक, राजनीतिक, जातीय आदि समूहों का सदस्य हो सकता है। समाजशास्त्र आपको विभिन्न समूहों के आपसी सम्बन्धों और आपके जीवन के महत्त्व के बारे में बतलाता है।
- भारतीय सामाजिक संस्थाओं ने ही 'वसुधैव कुटुम्बकम्' तथा वैश्वीकरण की भावना को सार्थक रूप दिया है। परिवार, वर्ण, आश्रम आदि प्राचीन काल से ही संस्था के रूप में भारतीय संस्कृति का अङ्ग रहे हैं।
- वैदिक संस्कृति द्वारा प्रतिपादित सामाजिक व्यवस्था, मनुष्य की भौतिक एवं आत्मिक पिपाशा का समन कर परमानन्द की ओर ले जाती है। मानव के अभ्युदय तथा व्यष्टि और समष्टि के सम्पूर्ण विकास के लिए ऋषियों ने वर्णाश्रम व्यवस्था प्रारम्भ की थी ।
- मानव समाज का अङ्ग है, अतः समाज की उन्नति के लिए मनुष्यों को अपनी सम्पूर्ण शक्ति लगाना ही प्रधान धर्म है। वेद में अनेक स्थानों पर व्रात शब्द का प्रयोग आया है, जिसका अर्थ समुदाय है।
- वेदों में सामाजिक सर्वोन्नति की बात की गई है- अज्येष्ठा अकनिष्ठास उद्भिद:। (ऋग्वेद 5.59.6) अर्थात् समाज में छोटे-बड़े का भेद मिटाकर सभी उन्नतिशील होने हों।
- नैतिकता पूर्ण आचरण जिसमें बड़ों को आदर देने की भी बात की गई है- मा ज्यायस: शंसमा वृक्षि देवा:। (1.27.13) अर्थात् हे देवो! हम बड़ों के आदर में त्रुटि न करें।
- अङ्ग्रेजी भाषा में वर्ण या जाति के लिए caste शब्द का प्रयोग किया जाता है, जो पुर्तगाली के casta शब्द से बना है, जिसका अर्थ विशुद्धता है।
- पृथिवी के समस्त जड़-चेतन जीवों में उनकी कुछ अद्वितीय विशेषता के आधार पर उन्हें पहचान प्रदान की जाती है, जिसे हम प्रजाति कहते हैं।
- प्राचीन काल में सामाजिक संस्था के रूप में मनीषियों ने मानव सभ्यता को स्थिरता, निरन्तरता एवं गतिशीलता प्रदान करने के लिए कर्म आधारित वर्ण व्यवस्था निर्मित की थी।
- समाज को चार वर्णों में क्रमश: ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य एवं शूद्र में वर्गीकृत किया गया था। यह वर्गीकरण उनके कार्य-कौशल एवं कर्म के आधार पर हुआ था।

- आधुनिक विद्वानों ने वर्ण व्यवस्था का अनुमानित समय 3000 वर्ष ईसा पूर्व एवं जाति व्यवस्था का अनुमानित समय 900-500 वर्ष ईसा पूर्व का माना है। प्राचीन काल से ही जातियाँ भारत में विशेषत: हिन्दू समाज की संस्थात्मक विशेषता के रूप में जानी जाती हैं।
- यजुर्वेद के 16वें अध्याय में 133 प्रकार के व्यवसायों का उल्लेख हुआ है।
- आधुनिक काल का प्रारम्भ भारत में लगभग 19 वीं सदी से माना जाता है। इसमें लगभग 150 वर्षों का औपनिवेशिक तथा 1947 से वर्तमान तक का स्वतन्त्र भारत का इतिहास भी सम्मिलित है।
- 1860 के दशक में भारत की जनगणना इस दिशा में एक बड़ा कदम सिद्ध हुई थी। 1881 ई. से भारत में प्रतिदशवर्षीय जनगणना प्रारम्भ हुई थी। 1901 ई. में हर्बर्ट रिजले ने सामाजिक अधिक्रम के आधार पर जनगणना कराकर जातियों की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति का प्रकाशन किया था।
- अङ्ग्रेजी शासन के उत्तरार्ध में निम्न जातियों एवं, दलित कही जाने वाली जातियों के कल्याण की दिशा में एक प्रयत्न भारतीय शासन अधिनियम, 1935 ई. द्वारा किया गया था।
- औपनिवेशिक कालीन कानूनों में इन जातियों एवं जनजातियों के उल्लेखित होने के कारण आज इन्हें अनुसूचित जाति एवं जनजाति कहा जाता है।
- 1920 के दशक में राष्ट्रीय आन्दोलन के प्रमुख नेता रहे महात्मा गाँधी और डा. बाबा साहेब अम्बेडकर ने अस्पृश्यता के विरुद्ध जारी संघर्ष को मुक्तिसङ्ग्राम से जोड़ा था।
- राज्य के विकास कार्यों और औद्योगीकरण के तीव्र परिवर्तनों ने अप्रत्यक्ष रूप से जाति संस्था को प्रभावित किया था। नगरों के सामूहिक रहन-सहन ने जातीय बन्धन को ढीला किया था।
- भाषा की दृष्टि से जनजातियों की चार श्रेणियाँ है- 1. भारतीय आर्य भाषा-भाषी 2. द्रविड़ भाषा-भाषी 3. आस्ट्रिक भाषा-भाषी 4. तिब्बती भाषा परिवार की बोली बोलने वाले लोग। शारीरिक बनावट के आधार पर जनजातीय समाज निग्रिटो, आस्ट्रोलायड, मङ्गोलायड, द्रविड़ और आर्य समूहों में वर्गीकृत है।
- जनजातीय समुदायों की कुल जनसंख्या का 85% भाग मध्यभारत, 12% भाग पूर्वोत्तर भारत तथा 3% भाग शेष भारत में निवास करता है।
- सम्पूर्ण जनजातीय जनसंख्या का 1% आर्य भाषाभाषी, 3% द्रविड़ भाषाभाषी, 80% तिब्बत बर्मी भाषाभाषी तथा सम्पूर्ण जनसंख्या (100%) आस्ट्रिक भाषाभाषी हैं।
- 2011 की जनगणना में भारतीय जनजातियों की जनसंख्या कुल जनसंख्या का 8.6% (104 मिलियन) है। प्रमुख बड़ी जनजातियाँ भील, कोल, संधाल, ओराव, मीना, बोडो और मूँज हैं।
- जनजातीय आन्दोलन को तूल देने में दो मुद्दे महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं - प्रथम भूमि एवं विशेषत: वनों जैसे अत्यन्त महत्वपूर्ण आर्थिक संसाधनों पर सरकारी नियन्त्रण। द्वितीय नृजातीय सांकृतिक पहचान। ये मुद्दे अधिकांशत: साथ-साथ चलते हैं तथा कभी-कभी अलग भी होते हैं।
- भारत में परिवार से तात्पर्य संयुक्त परिवारों से ही रहा है। परिवार के वर्गीकरण के मुख्यतः तीन प्रचलित आधार हैं- 1. सङ्गठन आधार 2. सत्तावंश तथा निवास आधार 3. वैवाहिक आधार।

- परिवार समाज की प्राथमिक आधारभूत इकाई है। प्रत्येक व्यक्ति, परिवार में जन्म के साथ पालित, पोषित, सुरक्षित और संरक्षित होता है। सत्ता, वंश तथा निवास के आधार पर परिवार की दो श्रेणियाँ हैं- 'पितृमूलक' और 'मातृमूलक'।
- पितृमूलक परिवारों में ज्येष्ठ पुरुष परिवार का मुखिया होता है। पैतृक सम्पत्ति सम्बन्धी कानूनी अधिकारों में राज्य द्वारा संशोधन करके लड़कों के समान लड़कियों को भी हक प्राप्त करने का प्रावधान हाल के वर्षों में किया गया है।
- मातृमूलक परिवार भी प्राचीन भारतीय परिवार का स्वरूप है। माता (स्त्री) ही ऐसे परिवारों की मुखिया होती हैं। इतिहास प्रसिद्ध राजा गौतमी पुत्र शातकर्णी इसी का उदाहरण है। आज मातृमूलक परिवार भारत के मलबार, केरल, और पूर्वोत्तर के असम आदि क्षेत्र में पाए जाते हैं।
- बाजार एक सामाजिक एवं आर्थिक संस्था है, जहाँ विविध वस्तुओं का क्रय-विक्रय होता है। ग्रामीण क्षेत्रों में इसे मेला एवं हाट भी कहा जाता है। इनकी पहचान विशिष्ट वस्तुओं के बाजार विशेष से है जैसे- सब्जी मण्डी, लोहा मण्डी, गल्ला मण्डी आदि हैं।
- 18 वीं सदी में विश्व के अधिकांश भागों में ब्रिटिश उपनिवेश कायम थे। उस समय में आधुनिक अर्थशास्त्र को राजनीतिक अर्थव्यवस्था कहा जाता था।
- एडम स्मिथ ने अपनी पुस्तक 'द वेल्थ ऑफ नेशन्स' में बाजार की अर्थव्यवस्था को समझाने का प्रयत्न किया है। स्मिथ का मानना था कि बाजारी अर्थव्यवस्था लोगों में सौदों का एक लम्बा क्रम है, जहाँ प्रत्येक व्यक्ति अपने लाभ को सोचता है।
- राजनीतिक अर्थव्यवस्था में आर्थिक सम्पन्नता का विकास होता है। अतः स्मिथ ने खुले व्यापार की संज्ञा दी है। फ्रांसिसी भाषा में इसे लेस-ए-फेयर कहा गया है।
- भारत, सूती एवं रेशमी वस्त्र, मसाले, कृषि उत्पादों का व्यापार अरब एवं यूरोपीय देशों में बड़े पैमाने पर करता था। इस व्यापार तन्त्र में एक सुव्यवस्थित बैंकिंग व्यवस्था भी शामिल थी।
- हुण्डी एक प्रकार का प्रपत्र होता था। इसके द्वारा विनिमय एवं ऋण के रूप में व्यापारियों से लेन-देन किया जाता था।
- प्रसिद्ध आधुनिक समाजशास्त्री कार्ल मार्क्स ने पूँजीवाद को 'पण्य' Commodity या बाजार के लिए वस्तुओं का उत्पादन बताते हुए, इसे मजदूरों की मजदूरी पर आश्रित बताया था।
- बाजार में बिकने वाली सभी वस्तुएँ एवं सेवाएँ पण्य (Commodity) हैं। पण्य से तात्पर्य वर्तमान पूँजीवादी युग में अनेक ऐसी वस्तुएँ एवं सेवाएँ, मानव अङ्ग, श्रम और कौशल से है।
- भारत के आर्थिक इतिहास में 1980-90 के दशक में आर्थिक उदारीकरण का नया दौर प्रारम्भ हुआ था। उदारवाद जैसी आर्थिक नीतियों में परिवर्तन से वैश्वीकरण का काल प्रारम्भ हुआ है।
- भूमण्डलीकरण या वैश्वीकरण वह कालखंड है, जिसमें विश्व के देश पहले से ही आर्थिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक तौर पर अन्तर्सम्बन्धित हैं। इसका स्वरूप बहुउद्देशीय है।

- उदारीकरण के परिणाम आर्थिक संवृद्धि के रूप में दिख रहे है। विदेशी पूँजी निवेश ने आर्थिक विकास में सहायता के साथ रोजगार के अवसर बढ़ाये हैं। निजीकरण से कार्य कुशलता बढ़ने के साथ सरकार पर दबाव कम हुआ है। यद्यपि उदारीकरण का भारत पर मिश्रित प्रभाव रहा है।
- एकता, समाज के लिए विविध एवं विभिन्न तत्व, जिसे एक एकीकृत इकाई में परिवर्तित किया जा सके तथा जो आपसी सहमति के साथ कार्य करने की स्थिति है।
- वर्ग, समाज के ऐसे लोगों का समूह जो एक ही प्रकार के सामाजिक और आर्थिक स्तर से संबंधित होते हैं, जैसे- कार्यशील वर्ग, उच्चवर्ग, मध्यमवर्ग, निम्नवर्ग आदि।
- विश्व के किसी भी भाग में होने वाले क्रियाकलाप का विश्व के लगभग सभी भागों में रहने वाले व्यक्तियों और समुदायों पर पड़ने वाला प्रभाव है। यत्र विश्वं भवत्येकनीडम् एवं वसुधैव कुटुम्बकम् जैसी वैश्वीकरण की संकल्पना वैदिक चिन्तन में निहित है।
- एक निर्धारित भू-क्षेत्र में समान संस्कृति, इतिहास भाषा तथा वर्ग में रहने वाले लोगों का समुदाय 'राष्ट्र' है। ऐसे लोगों के द्वारा स्वतन्त्र राष्ट्र निर्माण की प्रबल इच्छा ,राष्ट्रवाद, है। राष्ट्र धारयतां ध्रुवम् द्वारा राष्ट्र की सुदीर्घ सरक्षता पर चिन्तन वेद में प्रस्तुत है।
- सामाजिक मानचित्र, समाज में जन्म के आधार पर अवस्थीति-आयु, क्षेत्र, आर्थिक, धार्मिक, सामाजिक, राजनीतिक तथा जातीय और जनसंख्यात्मक सीमाएं शामिल होती है।
- प्रतिष्ठा के प्रतीक, विचार के प्रतिपादक मैक्स वेबर महोदय हैं। यह लोगों की सामाजिक स्थिति के अनुसार खरीदी जाने वाली वस्तुओं के बीच के सम्बन्ध को दर्शाता है।

अध्याय- 18

सांस्कृतिक विविधता और सामाजिक विषमताएँ

- विविधता, विविध लोगों या वस्तुओं के बीच जातीय एवं प्रजातीय विशिष्टताओं के आधार पर अन्तर को प्रकट करने वाला शब्द है। अङ्ग्रेजी में इसे Diversity कहते हैं।
- समुदाय को अङ्ग्रेजी में Community (कम्युनिटी) कहते हैं, जिसका अर्थ एक साथ मिलकर रहना एवं विकसित होना है।
- राष्ट्र, समुदायों से मिलकर बना हुआ एक बड़ा और विशिष्ट समुदाय होता है। राष्ट्र का विचार व्यक्ति की भावनात्मक एकता को दर्शाता है। राष्ट्र का विचार व्यक्ति की भावनात्मक एकता को दर्शाता है। परिमाणमतः लोग मिलकर राष्ट्र का निर्माण करते हैं।
- राज्य, एक ऐसी अमूर्त सत्ता है, जहाँ राजनीतिक एवं विधिक संस्थाओं के समुच्चय समाहित होते हैं, साथ ही निश्चित भौगोलिक क्षेत्र और वहाँ रहने वाले लोगों पर अपना नियन्त्रण रखता है।
- राष्ट्र की संकल्पना भारतीय दृष्टि में कोई आयातित अवधारणा न होकर एवं भारतीयता से ओत-प्रोत सर्वकल्याण कारक है। यह उतनी ही प्राचीन है जितनी की सृष्टी।
- औपनिवेशक शासन काल में भारत तीन प्रेसीडेन्सी- मद्रास, बम्बई और कलकत्ता थीं। ये प्रेसीडेन्सियाँ अङ्ग्रेजी शासन की राजनीतिक और प्रशासनिक ईकाइयाँ थीं।
- 2000 ई. में गठित तीन राज्यों- उत्तराखण्ड, छत्तीसगढ़ एवं झारखण्ड के निर्माण में जनजातीय पहचान, क्षेत्रीय वंचन और पारिस्थितिकी नृजातीय आधार बना था।
- भारतीय संघीय ढाँचे में राज्य ईकाइयों एवं केन्द्र की शक्तियों को संविधान में केन्द्र, राज्य एवं समवर्ती सूची में उपबन्धित किया गया है।
- अनुच्छेद 9 (1) भारत के राज्य क्षेत्र या उसके किसी भाग के निवासी नागरिकों के किसी अनुभाग को, जिसकी अपनी विशेष भाषा लिपि और संस्कृति है, उसे बनाये रखने का अधिकार होता है।
- अनुच्छेद 29 (2) राज्य द्वारा पोषित या राज्यनिधि से सहायता प्राप्त किसी शिक्षा संस्था में प्रवेश से किसी नागरिक को धर्म, गुण, वंश, जाति, भाषा आदि के आधार पर वञ्चित नहीं किया जायेगा।
- अनुच्छेद 30 (1) धर्म या भाषा आधारित किसी अल्पसंख्यक वर्ग को अपनी रूचि की शिक्षण संस्थाओं की स्थापना करने और प्रशासन का अधिकार होगा।
- अनुच्छेद-30 (2) शिक्षा संस्थानों को सहायता देने में राज्य किसी संस्थान के विरुद्ध इस आधार पर विभेद नहीं करेगा कि वह धर्म या भाषा आधारित किसी अल्पसंख्य वर्ग के प्रबन्ध में है।
- 1957 ई.में केरल उच्च न्यायालय ने शिक्षा विधेयक पर निर्णय देते हुए राज्य में कुल आबादी के 50% से कम आबादी वाले समूहों को अल्पसंख्यक माना है।

- साम्प्रदायिकता से आशय ऐसी कट्टर अभिवृत्ति से है, जो अपने समूह को श्रेष्ठ तथा अन्य समूहों को निम्न और विरोधी मानता है। धार्मिक दृष्टि से साम्प्रदायवादी आस्थावान या अनास्थावान हो सकते हैं।
- साम्प्रदायिकता और उससे उपजी हिंसा की सीमा में कमोवेश सभी समुदाय और क्षेत्र रहे हैं, परन्तु देश और समाज को आघात पहुँचाने वाले साम्प्रदायिक दंगे 1984 ई. के सिक्ख विरोधी दंगे और 2002 ई. में हुए गोधरा काण्ड के पश्चात भड़के हिन्दू-मुस्लिमों के दंगे हैं।
- पंथ निरपेक्षता को अङ्ग्रेजी भाषा के शब्द Secularism का हिन्दी अनुवाद माना जाता है, जिसका तात्पर्य इहलौकिकतावाद भी है।
- राजनीतिक और सामाजिक सिद्धान्तों की दृष्टि से पंथनिरपेक्षता को 42वें संविधान संशोधन 1976 ई. के द्वारा संविधान में जोड़ा गया है परन्तु इसको स्पष्ट परिभाषित करना कठिन है।
- भारतीय संसद द्वारा जनसूचना अधिकार अधिनियम संख्या 22 /2005 में 15 जून, 2005 ई. को पारित कर लागू किया गया था।
- समाज में सामाजिक संसाधनों का असमान वितरण प्रणाली ही सामान्यतः 'सामाजिक विषमता' कहलाती है। समाज में लोगों के बीच व्याप्त विषमता एक वास्तविकता है।
- बहिष्कार या सामाजिक अपर्वजन से तात्पर्य समाज में व्याप्त वे कार्य व्यवहार जिनके द्वारा किसी व्यक्ति या समुदाय को समाज की मुख्यधारा में घुलने-मिलने से रोका जाता है।
- अस्पृश्यता को हम बोलचाल के भाषा में छुआछूत कहते हैं। सार्वजनिक स्थलों कठोर रीति-रिवाजों एवं अमानवीय परम्पराओं के आधार पर अस्पृश्यता आदि को दण्डनीय अपराध घोषित किया गया है।
- मौलिक अधिकारों के अन्तर्गत अनुच्छेद 15 (3) में भेदभाव को समाप्त किया गया है। अनुच्छेद 17 के द्वारा अस्पृश्यता का अंत कर दिया गया है। 1 जून, 1955 में अस्पृश्यता को सरकार द्वारा कानूनी अपराध घोषित किया गया था।
- भेदभाव से तात्पर्य अन्यायपूर्ण बर्ताव एवं व्यवहार से है। यह बाह्य सामाजिक व्यवहार और क्रियाओं की ओर संकेत करता है।
- भारत सरकार अधिनियम- 1935 में निम्न जातियों एवं जनजातियों को सूचीबद्ध करके वैधानिक मान्यता प्रदान की गई थी।
- जाति निर्योग्यता निवारण अधिनियम- 1850 के द्वारा जातीय भेदभाव को खत्म करते हुए दलितों को विद्यालय में प्रवेश की अनुमति दी गई थी।
- अनुसूचित जाति एवं जनजाति अत्याचार निवारण अधिनियम- 1983 में अस्पृश्यता का उन्मूलन (मूल अधिकार अनु. 17) तथा आरक्षण के लिए कानूनी प्रावधान किए गए हैं।
- अत्याचार निवारण अधिनियम- 1989 द्वारा दलितों तथा आदिवासियों के अधिकारों के संरक्षण हेतु कड़े और सुदृढ़ कानूनी प्रावधान किए गए हैं।

- 93वाँ संविधान संशोधन अधिनियम- 2005 के अन्तर्गत 23 जनवरी, 2006 को कानून बनाकर, उच्च शैक्षणिक संस्थानों में अन्य पिछड़ी जातियों के लिए आरक्षण की व्यवस्था को लागू किया गया है।
- 1953 ई. में काका कालेलकर की अध्यक्षता में पिछड़ा वर्ग आयोग गठित किया गया था। 1979 ई. वी. पी. मंडल की अध्यक्षता में द्वितीय पिछड़ा वर्ग आयोग का गठन हुआ था।
- 1828 ई. में बङ्गाल में राममोहन राय ने ब्रह्मसमाज की स्थापना कर सतीप्रथा के विरुद्ध मानवतावादी एवं नैसर्गिक अधिकारों के सिद्धान्त तथा हिन्दू धर्मशास्त्रों के आधार पर विवेचना प्रस्तुत कर सती प्रथा के आन्दोलन को विस्तार दिया था।
- महादेव गोविंद रानाडे ने 1860 के दशक में अपने ग्रन्थों- टेक्स्ट्स ऑफ द हिन्दू लॉ ऑन द लाफुलनेस ऑफ द मैरेज ऑफ विडोज तथा वैदिक ऑथॉरिटीज फॉर विडो मैरिज द्वारा विधवा विवाह के लिए शास्त्रीय स्वीकृति का विशद् सामाजिक विवेचन किया है।
- 10 अप्रैल, 1875 को स्वामी दयानंद सरस्वती ने आर्य समाज की स्थापना और वैदिक शिक्षा एवं नारी शिक्षा के लिए कार्य प्रारम्भ किया था।
- अन्यथा सक्षम (Differently abled) से तात्पर्य उन लोगों के समूहों से हैं, जिनके शरीर के अङ्ग विशेष कार्य करने में सक्षम नहीं होते हैं। ऐसे लोगों के लिए अन्यथा सक्षम, अथवा दिव्यांग जन शब्दों का प्रयोग किया जाता है। ऐसे लोग सदैव ही समाज के सभी जाति, लिङ्ग, समुदायों में रहे हैं।
- 2011 की जनगणना के अनुसार भारत में 2.68 करोड़ दिव्यांगजन हैं जो भारत की कुल जनसंख्या का 2.21% है। अनुमान है कि यह संख्या कुल आबादी का 5% भी हो सकता है।

अध्याय- 19

भारतीय लोकतन्त्र में परिवर्तन एवं विकास

- लोकतन्त्र ऐसी शासन व्यवस्था है, जिसमें जनता ही प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से शासन करती है। लोकतन्त्र के दो प्रकार हैं- प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष लोकतन्त्र।
- प्रत्यक्ष लोकतन्त्र में लोकतान्त्रिक निर्णय लेने में नागरिकों की प्रत्यक्ष भागीदारी होती है।
- अप्रत्यक्ष लोकतन्त्र को प्रतिनिधि, लोकतन्त्र भी कहते हैं। इस व्यवस्था में जनता के प्रतिनिधि संसद में जनता के हितों की बात उठाते हैं।
- भारत में अप्रत्यक्ष लोकतन्त्र के साथ ही लोकतन्त्रात्मक मूल्यों को अपनाया गया है। भारतीय संविधान के प्रमुख केन्द्रीय मूल्य समाजवाद, स्वतन्त्रता, समानता, बंधुता आदि हैं।
- गाँधीजी ने 1939 ई. में हरिजन में लिखा था कि, संविधान सभा जनता का प्रतिनिधित्व करने वाले एक सशक्त संविधान का निर्माण करे, जो महिलाओं-पुरुषों के वयस्क मताधिकार पर आधारित हो।
- सामाजिक न्याय से तात्पर्य है कि प्रत्येक व्यक्ति सरकार के दृष्टि में समान है। उनके साथ किसी प्रकार का भेदभाव नहीं किया जाएगा, सभी के पास उत्तम जीने के न्यूनतम संसाधन होने चाहिए।
- भारत में पञ्चायती राज का प्रारम्भ राजस्थान के नागौर जिले से 2 अक्टूबर, 1959 ई. को हुआ था। पञ्चायती राज का मूल उद्देश्य जनता की शासन में भागीदारी प्रदान करना है।
- डॉ. बलवंत मेहता को पञ्चायती व्यवस्था का वास्तुकार कहा जाता है।
- भारत में पञ्चायती राज को 3 भागों में विभाजित किया गया है- ग्राम पञ्चायत (ग्राम स्तर), पञ्चायत समिति (खण्ड/ब्लॉक स्तर) व जिला परिषद (जिला स्तर)।
- भारत में पञ्चायतीराज राज्य सूची का विषय है। 73 वें संविधान संशोधन (1992) द्वारा पञ्चायती राज संस्थानों को संवैधानिक दर्जा प्रदान किया गया है।
- राजनीतिक दल, प्राय: लोगों के ऐसे समूह या सङ्गठन होते हैं, जिनकी एक समान विचारधारा, सिद्धान्त एवं लक्ष्य होते हैं। ये राजनीतिक दल चुनाव आयोग से मान्यता प्राप्त होते हैं।
- दबाव समूह सुविधा प्राप्त करने के लिए व अपने हितों की पूर्ति के लिए समूह, सङ्गठन बनाकर, राजनीतिक व प्रशासनिक व्यवस्था पर दबाव बनाते हैं।
- विश्व में बहुदलीय व्यवस्था वाले प्रमुख देश भारत, फ्रांस, नेपाल, पाकिस्तान आदि हैं। विश्व में द्विदलीय व्यवस्था वाले प्रमुख देश अमेरिका, इंग्लैंड आदि हैं।
- विश्व में एक दलीय व्यवस्था वाले प्रमुख देश चीन, रूस, कोरिया, क्यूबा आदि हैं।
- भारत में 50% से अधिक लोग स्व- रोजगार में हैं। 14% लोग नियमित वेतनभोगी रोजगार में हैं। लगभग 30% लोग भ्रमित मजदूर हैं।

- भूमण्डलीकरण और उदारीकरण के फलस्वरूप तीव्र गति से बड़े उद्योगों की स्थापना हुई है, जिससे आयात-निर्यात,विदेशी निवेश और अन्ताराष्ट्रीय स्तर पर प्रतिस्पर्धा में वृद्धि हुई है।
- भारत अब सेवा, पर्यटन, शिक्षा, चिकित्सा, सॉफ्टवेयर आदि के क्षेत्रों में बड़ा हब बनकर उभरा है।
- भारत में मुख्य रूप से लोग सार्वजनिक व निजी क्षेत्र में कार्य करते हैं। सार्वजनिक क्षेत्र में कार्यरत लोगों को अच्छे वेतन के साथ अन्य भत्ते भी मिलते हैं जबकि निजी क्षेत्र में वेतन और भत्ते कम होते हैं।
- मजदूर संघ विभिन्न उद्योगों और कारखानों में कार्यरत लोगों के सङ्गठन होते हैं, जो अपने हितों की रक्षा के लिए गठित किए जाते हैं।
- डॉ. एम.एन. श्रीनिवास की प्रमुख रचना Social Change in Modern India है।
- डॉ. एम.एन. श्रीनिवास के अनुसार, संस्कृतीकरण एक प्रक्रिया है जिसमें निम्न हिन्दू जाति या जनजाति अपने रीति-रिवाज, विचारधारा, कर्मकाण्ड, जीवन-पद्धति आदि में उच्च या द्विज जाति का अनुकरण करना चाहती है।
- पश्चिमीकरण से आशय है यूरोप व अमेरिका की संस्कृति को अपनाना। आज हम अपनी प्राचीन वैदिक संस्कृति व सनातन परम्परा को भूलकर, पाश्चात्य संस्कृति का अनुकरण कर रहे हैं। इनके अतिरिक्त प्रौद्योगिकी, संस्थाओं, मूल्यों, कला, साहित्य आदि का भी पश्चिमीकरण हो गया है।
- आधुनिकीकरण का अर्थ प्रौद्योगिकी का उत्पादन प्रक्रियाओं में होने वाले सुधार से है। आज यह एक सार्वभौमिक प्रक्रिया है, जिसमें नगरीकरण में वृद्धि, समानता, स्वतन्त्रता तथा प्रजातांत्रिक मूल्यों का विकास होता है।
- सांस्कृतिक परिवर्तनों को संस्कृतिकरण, आधुनिकीकरण, निरपेक्षीकरण तथा पश्चिमीकरण की प्रक्रियाओं के रूप में देखा गया है। ये तीनों प्रक्रियाएँ औपनिवेशिक युग की देन हैं।

अध्याय- 20

सामाजिक आन्दोलन और जन सञ्चार

- जिस विश्व में हम रहते हैं, उसे आकार देने में सामाजिक आन्दोलनों की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। सामाजिक आन्दोलन, लोगों को जागरुक करने व उनके अधिकारों को दिलाने के माध्यम हैं।
- सामाजिक आन्दोलन, सामाजिक लक्ष्यों को लेकर किये गये परिवर्तन के सामुहिक प्रयास हैं। इनका सम्बन्ध सामाजिक गतिशीलता से होता है। सामाजिक आन्दोलन न केवल समाजों को परिवर्तित करते हैं अपितु अन्य सामाजिक आन्दोलनों को प्रेरणा भी देते हैं।
- वञ्चन सिद्धान्त के अनुसार सामाजिक संघर्ष का कारण एक वर्ग का दूसरे वर्ग की तुलना में स्वयं को कमजोर स्थिति में समझना है। ऐसे संघर्ष प्राय: सामूहिक विरोध में परिवर्तित हो जाते हैं।
- विवेकी सिद्धान्त का प्रवर्तक मनकर ओल्सन को माना जाता है। उन्होंने अपनी पुस्तक 'दि लॉजिक एण्ड क्लैक्टिव एक्शन' में कहा है कि, सामाजिक आन्दोलन में स्वहित की इच्छा वाले विवेकी और व्यक्तिगत अभिनेताओं का पूर्ण योग है। संसाधन गतिशीलता का सिद्धान्त के प्रवर्तक मैकार्थी व जेल्ड हैं।
- सामाजिक आन्दोलनों को मुख्यत: तीन वर्गों में वर्गीकृत किया जा सकता है- 1. प्रतिदानात्मक आन्दोलन 2. सुधारवादी आन्दोलन 3. क्रान्तिकारी आन्दोलन।
- प्रतिदानात्मक आन्दोलन का लक्ष्य अपने व्यक्तिगत सदस्यों की व्यक्तिगत चेतना तथा गतिविधियों में परिवर्तन लाना होता है।
- सामाजिक तथा राजनीतिक विन्यास को धीरे-धीरे प्रगतिशील और क्रमबद्ध रूप से परिवर्तन का प्रयास सुधारवादी आन्दोलन का लक्ष्य होता है।
- राजसत्ता पर अधिकार कर समाज में सामाजिक सम्बन्धों के आमूलचूल रुपान्तरण का प्रयास क्रान्तिकारी आन्दोलन का लक्ष्य होता है।
- पर्यावरण तथा उनमें रहने वाले जीवों के संरक्षण के लिए चलाये जाने वाले आन्दोलनों को पारिस्थिकीय आन्दोलन कहते हैं।
- खेजड़ली आन्दोलन- 1730 ई., चिपको आन्दोलन-1973 ई., नर्मदा बचाओ आन्दोलन-1985 ई., आदि प्रमुख पारिस्थितिकीय आन्दोलन हैं।
- पर्यावरण की स्वच्छता की दृष्टि से भारत सरकार ने नमामि गङ्गे परियोजना- जून, 2014 ई. तथा स्वच्छ भारत मिशन- 2 अक्टूबर, 2014 ई. प्रारम्भ किया है, जो पारिस्थितिकी में सन्तुलनकारी संरचना स्थापित करने का बड़ा प्रयास है।
- किसान जब विभिन्न कृषि सम्बन्धी मुद्दों को लेकर आन्दोलन करते हैं, तो इन्हें किसान आन्दोलन कहा जाता है। किसान औपनिवेशिक काल से पूर्व में प्रारम्भ हुआ था।

- 1857 ई. में साहुकारों के विरोध में दक्षिण का आन्दोलन, नील की खेती के विरोध में (1859-62 ई.), पावना आन्दोलन (1870-1880 ई.) हुआ था।
- 1917-18 ई. में गाँधीजी जी द्वारा चंपारण सत्याग्रह, बारदोली सत्याग्रह-1928 ई., तिभागा आन्दोलन-1946-47 ई. और तेलङ्गाना आन्दोलन-1946-51 ई. आदि कृषक आन्दोलन हुए थे।
- 1920 ई. से 1940 ई. के मध्य अनेक किसान सङ्गठन उठ खड़े हुए थे। पहला किसान सङ्गठन बिहार प्रोविन्सिएल किसान सभा (1929 ई.) तथा ऑल इण्डिया किसान सभा का उदय हुआ था।
- 1922 ई. में ब्रिटिश सरकार ने चौथा कारखाना अधिनियम द्वारा कार्यावधि 10 घण्टे की गई थी। 1926 ई. में मजदूर संघ अधिनियम में मजदूर संघों के पञ्जीकरण का प्रावधान किया गया था।
- सितम्बर-अक्टूबर 1917 ई. में लगभग तीस से अधिक हड़तालें हुई थी। इस दौरान कलकत्ता के पटसन कामगारों ने, मद्रास की बकिंघम मिल, कर्नाटक की बिन्नी मिल तथा अहमदाबाद के कपड़ा मिल के कामगारों ने अपनी विभिन्न माँगों को लेकर काम रोक दिया था।
- 1918 ई. में गाँधीजी ने टेक्सटाइल्स लेबर एशोसिएशन तथा वी. पी. फाड़िया ने मजदूर संघ की तथा 1920 ई. में बम्बई में ऑल इण्डिया ट्रेड यूनियन कांग्रेस (ए.आई.टी.यू.सी-एटक) की स्थापना हुई थी।
- स्वतन्त्रता के बाद एक अन्य मजदूर संघ-भारतीय राष्ट्रीय ट्रेड यूनियन (1947 ई.) की स्थापना हुई थी। 1960 के दशक में क्षेत्रीय दलों ने स्वयं के संघों की स्थापना की थी।
- सामान्यत: दलित शब्द का प्रयोग विविध भारतीय भाषाओं में गरीब तथा उत्पीड़ित लोगों के लिए किया जाता था। 1970 के दशक में अम्बेडकर के अनुयायियों ने नव बौद्ध आन्दोलनकारियों के सन्दर्भ में प्रथम बार दलित शब्द का प्रयोग किया गया।
- पिछड़ा वर्ग शब्द का प्रयोग 1825 ई. से बम्बई प्रेसीडेन्सी, 1872 ई. से मद्रास प्रेसीडेन्सी तथा 1918 ई. से मैसूर राज्य में में किया जाता रहा है।
- भील आन्दोलन-1818 ई., मुण्डा आन्दोलन-1820-22 ई., अहोम आन्दोलन-1828 ई., बहावी आन्दोलन-1830 ई., कोल आन्दोलन-1831 ई. आदि प्रमुख आदिवासी आन्दोलन हैं।
- अखिल भारतीय महिला कान्फ्रेन्स की स्थापना 1926 ई. में की गई थी। भारतीय महिला एसोसिएशन की स्थापना 1971 ई. में तथा राष्ट्रीय महिला आयोग की स्थापना 31 जनवरी, 1992 ई. में की गई थी।
- जनसम्पर्क का अर्थ 'जनता से सम्पर्क रखना' है। यह एक सोद्देश्यपूर्ण प्रक्रिया है जो किसी व्यक्ति या वस्तु की छवि, महत्व और विश्वास को समाज में स्थापित करने में सहायता प्रदान करती है।
- जनसम्पर्क के साधनों (मास मीडिया) में पत्र-पत्रिकाएँ, रेडियो, दूरदर्शन, चलचित्र, विज्ञापन, वीडियो खेल, सी.डी., मोबाईल आदि शामिल हैं।
- मास मीडिया के क्षेत्र में आधुनिक प्रौद्योगिकियों का प्रयोग सर्वप्रथम 1440 ई. में जोहान गुटेन्बर्ग द्वारा निर्मित प्रिन्टिंग मशीन से यूरोप में धार्मिक पुस्तकें छापने के लिए किया गया था।

- भारत में प्रेस सेंसरशिप वेलेजली ने 1799 ई. में लागू किया था। 1878 ई. में वर्नाक्यूलर प्रेस अधिनियम बना था।
- 1908 ई. का प्रेस अधिनियम सभी प्रकार के प्रकाशन पर गहन सेंसरशिप लागू करने वाला कानून था। स्वतन्त्र भारत में 28 जून 1975 ई. को प्रेस सेंसरशिप लागू किया गया था।
- भारत में रेडियो प्रसारण का आरम्भ 1920 के दशक से कोलकाता व चैन्नई में 'हैम' ब्रॉडकास्टिंग क्लबों के माध्यम से प्रारम्भ हुई थी। 1940 के दशक में रेडियो प्रसारण को एक सार्वजनिक प्रसारण प्रणाली के रूप में प्रारम्भ किया गया था।
- स्वतन्त्रता के समय देश में केवल 6 रेडियो स्टेशन थे, जो केवल शहरी श्रोताओं तक ही सीमित थे। 1950 ई. तक भारत में कुल मिलाकर 5,46,200 रेडियो लाइसेंस थे। 1960 के दशक में ट्रान्जिस्टर आने से रेडियो अधिक सुलभ हो गया था।
- भारत में ग्रामीण विकास को बढ़ावा देने के उद्देश्य 1959 में टेलीविजन के कार्यक्रमों को प्रयोग के रूप में प्रारम्भ किया गया था।
- अगस्त, 1975 ई. से जुलाई, 1976 ई. के मध्य सेटेलाइट की सहायता से शिक्षा के नव प्रयोग आरम्भ हुए थे। इसके अन्तर्गत टेलीविजन ने छह राज्यों के ग्रामीण क्षेत्रों में सामुदायिक दर्शकों के लिए प्रत्यक्ष रूप से प्रतिदिन चार घण्टे का शैक्षिक प्रसारण प्रारम्भ किया था।
- 1975 ई. तक दूरदर्शन ने चार नगरों (दिल्ली, मुम्बई, श्रीनगर और अमृतसर) में टेलीविजन केन्द्र स्थापित कर दिए थे। 1976 ई. तक कोलकाता, चेन्नई और जालन्धर में तीन और केन्द्र खोल दिए गए थे।
- 1982 ई. के एशियाई खेलों से टेलीविजन का रंगीन प्रसारण प्रारम्भ होने के कारण इसका तेजी से वाणिज्यीकरण होने लगा था।
- भारत में डायरेक्ट टू होम सेवा 2000 ई. में प्रारम्भ हुई थी। 2002 ई. में लगभग 13.4 करोड़ लोग प्रति सप्ताह उपग्रह टी.वी. देखा करते थे। 2005 ई. में यह संख्या बढ़कर 19 करोड़ हो गई है। 2002 ई. में उपग्रह टी.वी. की सुविधा वाले घरों की संख्या 4 करोड़ थी जो बढ़कर 2005 में 6.10 करोड़ हो गई।

महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन (म.प्र.)

(शिक्षा मन्त्रालय, भारत सरकार)

द्वारा सञ्चालित एवं प्रस्तावित राष्ट्रीय आदर्श वेद विद्यालय

महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन (म.प्र.)

(शिक्षा मन्त्रालय, भारत सरकार)

वेदविद्या मार्ग, चिन्तामण, पो. ऑ. जवासिया, उज्जैन - ४५६००६ (म.प्र.)

Phone : (0734) 2502266, 2502254, E-mail : msrvvpujn@gmail.com, website - www.msrvvp.ac.in